

बहुमूल्य पाण्डुलिपियां

(अरबी, फ़ारसी तथा उर्दू)

सम्पादक

डा. मोहम्मद शफ़ीक़ मुरादाबादी

अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी

कैसरबाग़, लखनऊ-226001 (भारत)

अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी का प्रकाशन क्रम संख्या नं० १

© अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी लखनऊ उत्तर प्रदेश (भारत)
बिना आज्ञा कहीं भी प्रकाशित न करें

पुस्तक	:	बहुमूल्य पाण्डुलिपियां (अरबी, फारसी एवं उर्दू)
सम्पादक	:	डा० मोहम्मद शफीक़ मुरादाबादी
प्रकाशक	:	नुसरत नाहीद, सचिव एवं लाइब्रेरियन
वर्ष	:	सन् २०००
मूल्य	:	१००/—
प्रतियां	:	५००
मुद्रकः	:	डायमंड प्रिन्टर्ज दिल्ली

प्रस्तावना

अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी का इतिहास १८८२ ई० से आरम्भ होता है। यह लाइब्रेरी कई बार स्थानान्तरित हुई, आखिरकार १९२१ ई० में यह अपनी खुद की “निजी” बिल्डिंग में स्थापित कर दी गयी। जाहिर है इतनी पुरानी लाइब्रेरी में बहुत ही दुर्लभ संग्रह उपलब्ध होगा।

पुस्तकालय के पुराने इतिहास को देखा जाये, तो मैं बहुत ही कम समय से लाइब्रेरी की सेवा कर रही हूँ। मैंने जब से पुस्तकालय सम्भाला तो उसमें जो भी पाण्डुलिपियां उपलब्ध थीं, उन्हें एक स्थान पर संगठित करके उनका एक “पाण्डुलिपि कक्ष” मैंने ही बनाया है। पुस्तकालय में काफी संख्या में पाण्डुलिपियां हैं। अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत, पाली, तिब्बती, भाषाओं की पाण्डुलिपियां तो विशेष कर सराहनीय हैं।

मेरे तत्काल आयुक्त लखनऊ मण्डल श्री अरुण कुमार मिश्र के प्रयास द्वारा भारत सरकार से हमें इन तमाम पाण्डुलिपियों के परिरक्षण, संरक्षण एवं प्रकाशन हेतु अनुदान प्राप्त हुआ। इसी अनुदान के अन्तर्गत इन बहुमूल्य पाण्डुलिपियों का बहुत सूक्ष्मता और गहराई के साथ परिरक्षण संरक्षण एवं प्रकाशन कार्य कराया गया। जिसमें हमें वर्तमान आयुक्त लखनऊ मण्डल श्री सौरभ चन्द्र जी का योगदान और प्रयास दोनों सम्मिलित रहे हैं यह उसी का प्रमाण है जो यह प्रकाशन और इसके अतिरिक्त और भी प्रकाशन आप के सामने आये। इस “सूची” से न केवल राज्य, देश बल्कि विदेश के भी शोधकर्ता लाभ उठायेगें।

जब यह कार्य शुरू हुआ तो सर्वप्रथम यह निर्णय लिया गया कि अरबी, फारसी और उर्दू की पाण्डुलिपियों में से “बजट” को देखकर और ध्यान में रख कर प्रकाशन कार्य शुरू करना चाहिये। मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी की ओर से जनता एवं शोधकर्ताओं को सुविधा प्रदान करने का यह पहला प्रयास किया गया है।

श्रीमान डा० मोहम्मद शफीक मुरादाबादी द्वारा एक-एक पाण्डुलिपि को निहायत गहराई और ध्यान पूर्वक पढ़कर इन दीर्घ और बहुमूल्य पाण्डुलिपियों की न केवल सूची ही तैयार हुई अपितु संक्षिप्त व्याख्या भी कार्यशील हुई डा० साहब का कार्य जो उन्होंने हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में किया है जनता में हमेशा उनके नाम के साथ “यादगार” रहेगा। विशेष कर शोधकर्ता उनके आभारी रहेंगे।

इस सूची में धर्म, इतिहास, कविता, दर्शन, ज्योतिष, सामान्य ज्ञान, तत्रमंत्र, आत्म कथा इत्यादि विषयों से सम्बन्धित दीर्घकालीन एवं बहुमूल्य पाण्डुलिपियां शामिल हैं। जिनके द्वारा उस जमाने की सभी प्रकार की जानकारियां प्राप्त की जा सकती हैं, ऐसा मेरा विचार है। इस सूची में अरबी की ८ पाण्डुलिपियां, फारसी की ५७, और उर्दू की ६ शामिल की गयी हैं। उर्दू भाषी और हिन्दी भाषी जनता के लिए यह अमूल्य ज्ञान—दान है जिसके लिए हम सब एक बार फिर डा० मोहम्मद शफीक साहब की अद्भुत सलाहियत और काबलियत को सराहते हुए उनके अति आभारी हैं कि उन्होंने यह ज्ञान वर्धक सूची तैयार की और फिर हर पाण्डुलिपि से सम्बन्धित दस प्रश्न गठित करके उनका उत्तर दिया। यह कार्य काफी मुश्किल और दुर्लभ था और इस में अति साहस और लगन की आवश्यकता थी जो डाक्टर साहब ने भलीभांति सुचारु रूप से कर दिखाई। अन्त में एक बात और कहना चाहूंगी और वह यह कि इन पाण्डुलिपियों के जो विषय हैं। वह तो आपने पढ़ ही लिये किन्तु

यह पाण्डुलिपियां कितनी पुरानी हैं उसके बारे में भी आप को यह और बता दूँ कि इस समय सन् १४२० हिजरी है और सन् २००० ई० है। आप आसानी के साथ इन सनों में से, पाण्डुलिपियों में दर्शाये सनों को घटा दें तो आप को इस बात का पता लग जायेगा कि कौन पाण्डुलिपि कितनी पुरानी है। अरबी में जो पाण्डुलिपियां हैं वह ११३४, ११६२, ११७४, १२३४, १२५७ तथा १२७४ सने हिजरी की हैं। एक अरबी की पाण्डुलिपि २५८ वर्ष पुरानी है। फ़ारसी की ५७ पाण्डुलिपियां १२१३, १२१४, १२१७, १२१९, १२२३, १२२७, १२३१, १२३६, १२३७, १२४४, १२४७, १२५१, १२५२, १२५३, १२६२, १२६३, १२६४, १२६५, तथा १२६८ सने हिजरी की हैं। इस तरह फ़ारसी भाषा की २०७ वर्ष पुरानी पाण्डुलिपि हमारे पुस्तकालय में है। इसी प्रकार उर्दू की ७ पाण्डुलिपियां हैं। जो सन् १२४४ हिजरी, १२५९ हिजरी, १२६२ हिजरी एवं १८४३ सने ई० की पाण्डुलिपियां पुस्तकालय में मौजूद हैं। एक बात और बहुत आवश्यक है यदि वह कहने से रह गयी तो— शोधकर्ता पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे वह यह है कि सन् हिजरी हो या सन् ई० इनकी मुहरें या तहरीरें, पुस्तक को पुस्तकालय में प्राप्त करने की है जो शहंशाहों, बादशाहों, सुल्तानों, नवाबों, शहजादों या महाराजाओं, राजाओं, कुमारों, जागीरदारों, तअल्लुकेदारों या उनके मुशियों या उनके पुस्तकालय के अफ़सरों ने पुस्तक प्राप्त करते समय उन पर तारीखें डाली हैं किन्तु पाण्डुलिपियां तो बहुत ही पुरानी दुर्लभ और बहुमूल्य हैं।

उस समय पाण्डुलिपि से पाण्डुलिपि को हाथ से नकल करने का रिवाज था। लिहाजा कौन सी पाण्डुलिपि कितनी पुरानी है इसी की खोजबीन शोधकर्ता का महान कार्य है सो उनके लिये शोध का मैदान खुला है आये और अपने “ज्ञान” को और भी विकसित करें। एक बात और मैंने पाण्डुलिपियों को वर्णात्मक व्यवस्था से सूचि बद्ध करवाया है। इस सूची में हर प्रकार की मालूमात मिलेगी।

जहां तक संभव था प्रयास किया गया कि कोई ग़ल्ती न रह जाये। काफ़ी देख रेख के पश्चात भी यदि कोई ग़ल्ती आप को मिले तो हमें क्षमा करते हुए अवगत जरूर करा दें ताकि भविष्य में दोबारा यह ग़ल्ती न हो और हम इसे सुधार कर आपके सम्मुख प्रस्तुत करें।

नुसरत नाहीद

लाइब्रेरियन एवं सचिव,

अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी, कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)



पाण्डुलिपियों की सूची



अरबी

क्र.सं. पुस्तक का नाम	पृष्ठ सं०
१. अश-शरहुल-लमआ	१
२. आयाते - बय्यिनात	१
३. किताबुत-तहारत	२
४. तहज़ीब दर इल्मे मनतिक	२
५. नफीसी	३
६. बुरहाने उस्तर लाब	३
७. रिसालह अद-दकाइक फी मरातुल हकाइक	४
८. सहीफ-ए-सज्जादियः	४

फारसी

१. अलरिसालः फी मारफतुल उस्तरलाब	५
२. अहवाले फल्हे एटावा	५
३. इकबाल नामः जहाँगीरी	५
४. कलेमाते जहाँगीरी, व रुक्कआते आलमगीर व सुखनाने अरस्ता तालिस	६
५. कीमया-ए-सआदत	६
६. खुला सतुत-तवारीख	७
७. गुज़लियाते शौकत	७
८. गुराइबुल-लुगत	८
९. जवाबाते ऐतिराजाते 'आरजू'	८
१०. जुब दतुत तवारीख	९
११. ज़िब दतुत-तवारीख	९
१२. तज़करःतुल दौल-अ-ते शाही	९
१३. तफसीरे हुसैनी	१०
१४. तवारीखे कंधार	१०
१५. तारीख-ए-अलफी (जिल्द एक)	११
१६. तारीख-ए-अलफी दफतर दोयमः Vol.-II	११
१७. तारीखे आलम आरा भाग -एक	११
१८. तारीखे - फरिशतः	११
१९. तारीखे मुगल	१२
२०. तारीखे सआदत	१२
२१. तारीखे सुल्तान मोहम्मद कुतबशाह	१३
२२. तुहफतुन नादिरिन	१३
२३. तुहफतुल अहबाब फी बयानुल-अंसाब	१४
२४. तूती नामा	१४

२५. तोहफ़-अ-तुल मोमिनीन.....	१५
२६. तोजोके तैमूरी.....	१५
२७. दीवाने जहूरी.....	१६
२८. नल व दमन (मन्जूम).....	१६
२९. फरहंगे बहारे दानिश.....	१६
३०. फरहंगे मुरक्केबातु किनायात मय लुगात.....	१७
३१. बयाजे गज़लियात.....	१७
३२. मज-म-उल फरसे सरवरी.....	१८
३३. मस्वी मौलाना रुम १,२,३, हिस्सा.....	१८
३४. मस्वी शोरे इश्क.....	१९
३५. मीज़ानुल हिकमत.....	१९
३६. मुन्तखब-उल-लुगाते शाहजहानी.....	२०
३७. मुन्तखब-उल-तवारीख.....	२०
३८. मुन्तखब-उत्तारीख.....	२०
४९. रिसाला इन्तिज़ामे सलतनत.....	२१
४०. रिसाल: सिफ़ातुस्सैफ.....	२१
४१. लुग-अ-ते फ़ारसी.....	२२
४२. लुगाते तिब.....	२२
४३. वाकेआते बावरी.....	२३
४४. शरहे जामी.....	२३
४५. शरहे जामे जहाँ नुमा.....	२४
४६. शरहे जुलेखा.....	२४
४७. शरहे मिरातुल हकाइक.....	२५
४८. सवानहे दकन.....	२५
४९. सिराजुल लुगत (हिस्सा दोयम).....	२५
५०. सिराजुल लुगात.....	२६
५१. सिराजुल लुगात (दोयम).....	२६
५२. सिराजुल लुगात (तीसरा हिस्सा).....	२७
५३. सिंहासन बत्तीसी.....	२७
५४. सैरुल मुत-अ,-अख़्खरीन.....	२८
५५. हलिय्यतुल मुत्तकीन.....	२८
५६. हुमायूँ नामा (मंजूम).....	२८

उर्दू

१. इन्द्र सभा.....	३०
२. कुल्लियाते जुरअत.....	३०
३. दीवाने सौदा.....	३०
४. बयाज, उर्दू, फ़ारसी गज़लियात.....	३१
५. श्रीमद् भागवति.....	३१
६. श्री भागवत् महा पुराण.....	३२
७. हमल-ए-हैदरी.....	३२

अरबी

१- नाम किताब	: अश-शरहुल-लमआ
लेखक	: जैनुद्दीन अल आमली
भाषा	: अरबी
विषय	: धर्म इस्लाम की व्याख्या (तफसीर)
प्रकाशित-अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: २०७
साइज़	: साढ़े बीस/बारह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३४३
प्रथम पृष्ठ	: बिस मिल्ला हिर-रहमा-निर रहीम।

: बादे हन्दे रब्बुल आलमीन व सल्लल लाहु अला खैरि खलकिही

विवरण : अल-लुम्मअः अरबी की मशहूर किताब है जिसके लेखक का नाम इस में दर्ज नहीं किन्तु जिस लेखक ने इस पुस्तक की व्याख्या की है उसका नाम दर्ज है। मगर यह व्याख्या किस सन में तहरीर हुयी यह भी दर्ज नहीं। इस किताब में इस्लाम धर्म की इबादत के सिद्धान्त, इबादात् के तरीके, उसूल, कायदे, व उसकी व्याख्या से अवगत कराया गया है। कातिब ने यह कलमी नुस्खा निहायत जल्दी में नक़ल किया है। इस कारण सुन्दर और आकर्षक नहीं है। यह "कलमी" जरूर है मगर किसी दीगर कलमी नुस्खे से नक़ल किया गया है। उसका हवाला नहीं है। किताब नामुकम्मल, बोसीदा, मरम्मत शुदा, जगह-जगह मताल्लिब व उनवानात व पैराग्राफ़ पर कागज़ चिपका हुआ है। पन्ने ग़ायब हैं। इस किताब के "कदीम" होने में कुछ शक़ नहीं। मगर इस पर किसी नवाब या जागीरदार या उनके कुतुबख़ाने की मुहर नहीं है।



२- नाम किताब	: आयाते - बथ्यिनात
लेखक	: नामालूम
भाषा	: अरबी
विषय	: फी फन्नुल मवाइज़
प्रकाशित-अप्रकाशित	: अप्रकाशित
पृष्ठ	: ५७
साइज़	: साढ़े उन्तीस/बीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८४०२
प्रथम पृष्ठ	: उनवानः आयाते-बथ्यिनात व उज़ाते तय्येबात

अला वलिय्यु ह्कमन नज़-अ-रिय्यतुन-बथ्यिनातुन औ मुबथ्यिनातुन वल आख़ि़श ह्कमुन..

विवरण : यह रिसाला जिसका नाम जिल्दबन्दी में आयाते मुबय्येनात प्रिंट होकर आया है दरअसल किताब का नाम नहीं बल्कि उनवान है। मुकम्मल उनवान इस तरह है : आयाते बथ्यिनातु उज़ाते तय्यिबात। यह किताब मवाइज़ के १०० उनवानात पर मुबनी है, जिसकी फहरिस्त इसमें दी गयी है। मगर इसके मवाइज़े हस-अ-नः उनवानात के मुताबिक मौजूद नहीं। दूसरी बात यह कि इस किताब का नाम मौजूद नहीं क्योंकि शुरु के सफहात मौजूद नहीं है। जिसमें मुसन्निफ़ का नाम और किताब का नाम होता है। दलील यह है कि मज़हबी किताब होते हुए भी इसमें वह पन्ना नहीं है जिसमें बिसमिल्ला-हिरहमा-निरहीम से किताब की शुरुआत होती है फिर जिल्द बन्दी भी गलत हुई है। पन्ना १ के बाद पन्ना ६ जुड़ा हुआ है। यह एक अमीर कबीर की फरमाइश पर लिखे गये हैं।



३- नाम किताब	: किताबुत—तहारत
लेखक	: अल हसन—उल बसरी
भाषा	: अरबी
विषय	: फिका—ए—हनअफी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ३२२
साइज	: इक्कीस/तैंतीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३३३
प्रथम पृष्ठ	: रब्बे यस्सिर बिस मिल्ला—हिरहमा निरहीम। वतम्मम बिल खैरि।

अलहमदु लिल्लाहिल लजी अना बराफतः मनारुल इस्लाम हिदायतुत् तरीकर रशाद विवरण : किसी नवाब की इस पर 'मुहर' नहीं किताब के आखरी सफहात गायब हैं। निहायत बोसीदः नुस्खः है। दीमक ज़दा है और एक बार 'बटर पेपर' से इसकी मरम्मत हो चुकी है। दीने इस्लाम में जो मसाइल अजरूये शरअे—मतीन पेश आते हैं उनसे हन—अ—फी अकाइद के मुताबिक तफसील से 'शरह' की गयी है और हवाशी में हवालाजात दिये गये हैं। कीमती मालूमात दर्ज की गयी हैं। मगर किताब खस्तः हां चुकी है। इस किताब का नाम ग़लत 'एम्बोज' हो गया है।



४- नाम किताब	: तहज़ीब दर इल्मे मनतिक
लेखक	: मौलवी अब्दुल बासित
भाषा	: अरबी
विषय	: मनतिक
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: १०९
साइज	: साढे चौदह/तेईस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३९२
प्रथम पृष्ठ	: बिस मिल्ला हिर—रहमा निर—रहीम। अल्हमदु लिल लाहिल लजी हदाना सवाअत तरीक व जअलनत—तौफीक

विवरण : ९ सफहात पर किताब का मुकद्दमा दर्ज है जिसमें उनवानात और बाबुल किताब कायम किये गये हैं। १० वीं सफहे से अस्ल किताब शुरू होती है जो १०० सफहात पर फैली हुयी है। गोया किताब के कुल सफहात १०९ हैं। यह किताब दीने इस्लाम के फलसफा और मनतिक के फन पर है। इस किताब की तदवीने अस्ला तो ७ मुहर्रम ११७४ हिजरी दर्ज है मगर साहिबे तस्नीफ मौ० अब्दुल बासित की इस "मनतिक" से मुताल्लिक किताब को २३ रबीउस्सानी १२३४ हिजरी में मखदूम बख्श कातिब ने इसी कलमी नुस्खे को दुबारा किताबत किया है। किताब के शुरू में मौलवी अब्दुल बासित इब्ने रुस्तम अली इब्ने अली असगर को जिबदतुल औलादुल कुतबुल रब्बानी अल महबूबुस सुबहानी मुजहिद अल्फेसानी क़दिसल्लाहु सिरिहु सरहिन्दी से मनसूब किया है। उलामा के लिए बेहद कीमती असासा है।



५- नाम किताब : नफीसी
 लेखक : हकीम मोहम्मद अबुल हसन
 भाषा : अरबी
 विषय : तिब
 प्रकाशित—अप्रकाशित : अप्रकाशित (कलमी)
 पृष्ठ : ७२०
 साइज़ : साढ़े पन्द्रह/पच्चीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३५२
 प्रथम पृष्ठ : रब्बे यस्सिर बिस मिल्ला हिर रहमा निर—रहीम व तम्मम बिल खैरि।

तवजुहुना इला जनाबिकअ अल कुदिसअ मामीनुल्लाहि यर जम—अ—उल
 उमूरो तअ रिजुना बिशमीमे लुतफुकल मुक्दस.....

विवरण : निहायत आला दरजे का नुस्खा है। लौह और उसके साथ का सफ़ह तिलाई ज़ेबु ज़ीनत से आरास्ता है। ख़ते अरबी इस क़दर उमदः और आला पाये का है कि तारीफ़ु तौसीफ़ से बाला है। अभी तक इतना उमदः और मुरस्सः ख़त मेरे सामने फ़हरिस्ते कुतब में नहीं आया। 'तिब' के फ़न पर 'नफीसी' बहतरीन और फ़कीदुल मिसाल किताब है। इस नुस्खे पर किसी नवाब की 'मुहर' सब्त नहीं है।



६- नाम किताब : बुरहाने उस्तर लाब
 लेखक : अहमद बिन मोहम्मद बिन अल—हुसैन अलसगानी
 भाषा : अरबी
 विषय : इल्मे हैअत (ASTRONOMY)
 प्रकाशित—अप्रकाशित : अप्रकाशित (कलमी)
 पृष्ठ : ४९
 साइज़ : साढ़े उन्नीस/ग्यारह सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३९३
 प्रथम पृष्ठ : रब्बे यस्सिर बिस मिल्ला हिरि हमा निर—हीम व तम्मम बिल्खैरि

विवरण : 'उस्तरलाब' ग्रहों की पैमाइश करने वाले यंत्र को अरबी भाषा में कहते हैं। किताब में यही शब्द एक दूसरे शब्द 'बुरहान' के साथ प्रयोग किया है। अर्थात् इस यंत्र द्वारा ग्रहों की पैमाइश करने का ज्ञान अथवा तरकीबें या दलीलें। माह रजब् सन् ११३८ हिजरी दिल्ली, किताब के आखिर में दर्ज है। जनाब फ़ख़रुद्दीन अहमद खां के वालिद अब्दुल रहीम खां की इस पर मुहर लगी है जिस पर ११९९ हिजरी तहरीर है। इस पर फ़ख़रुद्दीन अहमद खां की भी 'मुहर' लगी है। जिस्में १२०० हिजरी तहरीर है। बाद इसके नव्वाबीन की मुहरें हैं १२४४ में सुलैमान जाह की, ४ सफ़र १२६२ हिजरी में सुलतान अम्जद अली शाह की, १२६४ हिजरी में वाजिद अली शाह, सुलताने आलम की 'मुहर' लगी है। इस किताब में ग्रहों की पैमाइश करने के यंत्र द्वारा, दायरे, खुतूत्, नुकते और ज्योमेट्री और (ASTRONOMY)फ़न की व्याख्या की गयी है और अमल और शक़ल के नमूने भी दिये हैं।



७— नाम किताब : रिसालह अद—दकाइक फी मरातुल हकाइक
 लेखक : नामालूम
 भाषा : अरबी
 विषय : हदीस
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : १४१
 साइज : चौबीस / साढ़े तेरह सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३६१
 प्रथम पृष्ठ : अला ज़ालिका मा रवाहा अहमद बिन मोहम्मद बिन अली बिन अलहकम अन
 अबी अय्यूबुल खज़ाज़ अन मुहम्मद बिन मुसलिम

विवरण : इस किताब का नाम जो मज़कूर हुवा है, हो सकता है वह किताब के आगाज़िया सफ़हात से लिया गया हो, मगर यह सफ़हात किताब में मौजूद नहीं है। आखिर के सफ़हात भी गायब है। खते तहरीर इतना खुशख़त है कि लाजवाब कहा जा सकता है। इसमें मसाइले शरइय्या के उनवानात कायम करके अहादीसे रसूले अकरम सल्लल लाहु अलैहि वसल्लम बयान फ़रमाई गयी है। मन्कूलात् सिहाबये कराम के है। इस किताब के आखिर में जो मुहरें सब्त हैं वह सुलेमान जाह की और उसपर तारीख १२४४ हिजरी की है और वाजिद अली शाह की मुहर पर १२६३ हिजरी तहरीर है मगर इस किताब पर शाही मुहर से सौसाल से भी ज्यादा पहले की एक और मुहर है जो ११६२ हिजरी की है। जिसमें लिखा है कि नूर चश्मी अबरार खां मुरीद अहमद अली ने बहुज़ूर फकीर अज़ मारफ़त, हकाइक आगाह, मियां सय्यद शहाबुद्दीन जो बरखुरदार—आदि बहरहाल यह अपने क़दीम होने की बिना पर और मौजूआत की वजह से निहायत अहम और वकीअ किताब है मगर नामुकम्मल है।



८— नाम किताब : सहीफ़—ए—सज्जादियः
 लेखक : मिरज़ा मोहम्मद काजिम
 भाषा : अरबी
 विषय : वज़ाइफ़
 प्रकाशित—अप्रकाशित : अप्रकाशित (कलमी)
 पृष्ठ : ४१८
 साइज : तेरह/इक्कीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३४७
 प्रथम पृष्ठ : बिस—मिल्ला, हिर—रहमा, निर—रहीम हद्दे सना अस, सय्येदुल अजल, नज्मुद्दीन
 बहाइश— शरफ़े अबुलहसन

विवरण : यह मजमूआ—ए—वज़ाइफ़, जिसे सहीफ़—ए—सज्जादिया का नाम दिया गया है और जिसकी तालीफ़ मिर्ज़ा मोहम्मद काजिम साहब ने की है। निहायत उमदा और कीमती 'खत' में तहरीर है। अरबी का 'खते तहरीर' निहायत वकीअ और मेअयारी है। इसे नवाब सय्यद मोहम्मद महदी अली खां साहब को जाती तिलावत के लिए तहरीर किया गया है। जिसके इखतिताम की तारीख १४ रमज़ान १२७४ हिजरी है मगर सय्यद मो० महदी खां बहादुर की 'मुहर' पर १२५७ हिजरी तहरीर है। मुमकिन है उनकी 'मुहर' जब बनी होगी, तो उस वक़्त १२५७ हिजरी हो।





श्री अरुण कुमार मिश्र, (तत्कालीन आयुक्त, लखनऊ मंडल)
अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी में पुस्तक प्रदर्शनी के अवसर पर पुस्तकालय कर्मचारियों के साथ।



श्री सौरभ चंद्र (आयुक्त मंडल लखनऊ) श्री संजय अग्रवाल, (जिलाधिकारी, लखनऊ)
सुश्री नुसरत नाहीद (सचिव अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी) अमीरुद्दौला पुस्तकालय
में पांडुलिपियों से संबंधित बैठक में पधारते हुए।

फ़ारसी

१- नाम किताब	: अलरिसाल: फ़ी मारफ़तुल उस्तरलाब
लेखक	: आ-यतुल्लाह "सना"
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: हैअत (ASTRONOMY)
प्रकाशित-अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: १३३
साइज़	: ग्याहर / बीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३५३

प्रथम पृष्ठ : अम्मा बाद, बरा-ए-अस्हाबे बसीरत व अरबाबे सरीरत पोशीद: नेस्त कि इल्मे.
विवरण : यह रिसाल: फ़ने हैत (ASTRONOMY) पर मुबनी है और फ़ारसी भाषा में है। इसके लेखक ने ७ सफ़र १०७० हिजरी की तारीख़ सफ़ह: ११८ पर दर्ज की है। किताब पर किसी फ़ख़रुद्दीन अहमद खां के ज़ाती कुतुबख़ाने की सियाह रौशनाई से 'मुहर' सब्त है। इस रिसाले में मौसम की तबदीलियाँ, मनहूस और मुबारक घडियाँ और ASTRONOMY की जितनी भी किस्में हैं सब इसमें दर्ज की हैं। काफ़ी उम्द: खते नस्तालीक है। कुछ सफ़हात ग़लत जुड़ गये हैं दुबार: जिल्द साज़ी के वक़्त इसकी दुरस्तगी कर दी जाये तो निहायत उम्द: काम हो जायेगा।



२- नाम किताब	: अहवाले फ़त्हे एटावा
लेखक	: मोहम्मद फ़ैज़ बख़्श
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: इतिहास
प्रकाशित-अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: २५६
साइज़	: दस / साढ़े सोलह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८४११
प्रथम पृष्ठ	: बि० हरचंद तूती-ए-शुकरैन मक़ाले रवाम: रा दर बराबर

विवरण : इस किताब की तालीफ़ो तदवीन १२०५ हिजरी में की गयी। यह नवाब शुजाउद्दौला के एटाव: की फ़त्ह के वाक़ेआत पर मबनी है। निहायत ख़स्त: और दीमक ज़द: हालत है।



३- नाम किताब	: इक़बाल नाम: जहाँगीरी
लेखक	: मीर अब्दुल लतीफ़ कज़वेनी
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: इतिहास
प्रकाशित-अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ३४०

साइज़ : साढ़े बारह / साढ़े अठारह सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३७८
 प्रथम पृष्ठ : शहर यार ख्वाही बहारे जाविदाने बाकरो आलम अज़ फ़रोग

विवरण : शाहशह जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर के ज़री-ऐ-जो फ़तूहात हुई उनका सिलसिला सूत और खम्बात तक पहुँचा, यह मुहिम्मात कैसे सर हुई यही इस तारीखे इक़बाल नामः जहाँगीरी का मौजूअ है। बहतरीन खते शिकस्तः की तहरीर है। यह किताब नव्वाब सुलैमान जाह और नव्वाब अमजद अली शाह के जाती कुतुबखानों की जीनत रह चुकी है। उनकी मुहरे इस पर सब्त हैं बहुत पुराना नुस्खा है और 'अकबर' के 'अहद' का है।



४- नाम किताब : कलेमाते जहाँगीरी, व रुक्कआते आलमगीर व सुखनाने अरस्ता तालिस
 लेखक : नूरुद्दीन मोहम्मद जहाँगीर अकबरी तैमूरी। आलमगीर बादशाह, व हकीम अरस्ता तालिस
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : खुतूत नवीसी
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ८४
 साइज़ : तेरह / चौबीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३८७
 प्रथम पृष्ठ : बिसः मख़फ़ी नमानद के ई बन्दये जईफ़ बारगाहे परवरदिगार ज़रःब मिक्दार
 : दरगाहे मुल्कुल मलूके रोज़गार.....

विवरण : यह नसाहे की किताब है जिसमें मकतूबातो रुक्कआत की शकल में तालीम दी गयी है। तालीमी मकतूबातो रुक्कआत उन मुसन्नेफीन के हैं जिनके नाम ऊपर किताब में दिये गये हैं। बादशाहों के कलेमात को बहुत ही खुशखत नस्तालीक में तहरीर किया गया है। इस नुस्खे पर नव्वाबीने अवध की मुहरे सब्त हैं। कदीम नुस्खः है। जगह—जगह से खस्तः और दीमक ज़दः है।



५- नाम किताब : कीमया—ए—सआदत
 लेखक : मोहम्मद अल ग़िज़ाली
 भाषा : फ़ारसी (नस्र)
 विषय : धर्म इस्लाम
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : १५६
 साइज़ : चौदह/साढ़े बाईस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३३५
 प्रथम पृष्ठ : बिस्मिल्ला हिरहमा निर्रहीम व ब नस्तअीनु व शुक्रु सिपासे फ़रावां

विवरण : यह किताब मशहूर मुसन्निफ़े इस्लाम, शौख मोहम्मद अल ग़िज़ाली की तस्नीफ़ कीमिया—ए—सआदत है। जिसमें जिन्दगी में काम आने वाले इस्लामी तौर तरीकों से बहस की गयी है। कातिब का नाम दरयाफ्त नहीं। मुहम्मद शाह बादशाह गाज़ी की १२१३ हिजरी की इस पर मुहर है। नवाब अमजद अली शाह की भी मुहर सब्त है। एक मुहर १२५१ हिजरी की है जिसमें मुंशी मोहम्मद बेग ने सरकारी कुतुबखाने में इसको दाखिल करते वक़्त इन्दराज किया है।



६- नाम किताब	: रवुला सतुत—तवारीख़
लेखक	: सुरजान सिंह (सुभानसिंह) बटालवी
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: इतिहास
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी ख़ते शिकस्त:
पृष्ठ	: ३६४
साइज़	: सतरह/उनतीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन न०	: ४८३७१
प्रथम पृष्ठ	: यको अज़.....

विवरण : सुभान सिंह लेखक ने इस पुस्तक में तमाम पुस्तकों के विवरण दिये हैं। ११९९ हिजरी, ४ रबी उलअव्वल की तारीख़ मज़कूर की है। महमूद ग़ज़नवी से लेकर शहज़ादा दाराशिकोह तक के हालात व स्वानेह मज़कूर किये हैं। और उस ज़माने की तसनीफ़ात से भी लाभ उठाया है। ख़त शिकस्ता, क़लम उमदा है। कहीं कहीं किताब की हालत ख़स्ता है। जिसकी मरम्मत कर दी गयी है। किताब के लेखक का नाम सुभान सिंह साफ़ पढ़ा जा सकता है। किताब पर नवाबीने अवध नवाब अमजद अली शाह, सुलेमान जाह व वाजिद अली शाह की मुहरें सब्त हैं।



७- नाम किताब	: ग़ज़लियाते शौकत
लेखक	: शौकत बुख़ारी
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: शायरी (ग़ज़लियाते फ़ारसी)
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: २००
साइज़	: बारह / बाइस सेन्टीमीटर
एक्सेशन न०	: ४८३७७
प्रथम पृष्ठ	: बि०—तनमरा बसक्वे: जुअ फ़े तीर: बख़्ती ना तवां दारद

विवरण : तन मरा..... यह दीवाने शौकत बुख़ारी की ग़ज़ल का पहला मिसरअ है। निहायत दीद: जेब खत है। २०० सफ़हात पर मुशतमिल ग़ज़लियाते फ़ारसी का यह मजमूआ नायाब है। मगर इसपर किसी भी रियासत या सूबे के नवाब की 'मुहर' नहीं है। मगर कलाम के उसलूब से पता चलता है कि यह नुस्ख़: कदीम है। एक स्याह 'मुहर' जैनुद्दीन एहमद खां की ज़रूर सब्त है।



८- नाम किताब	: ग़राइबुल—लुगत
लेखक	: अब्दुल लतीफ़
भाषा	: फ़ारसी (हिन्दी)
विषय	: लुगत
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ३०८
साइज़	: साढ़े अठ्ठाइस/ सतरह सेन्टीमीटर

एक्सेशन नं० : ४८३५१
 प्रथम पृष्ठ : सरनाम: रा साय—ए—बाले हुमास्त व जिल्ले तवज्जुहानश दीबाच—ए—किताबरा.....
 विवरण : आगाजे लुगत में सफ़हात की गुमशुदगी दर्ज नहीं है। किसी अली हसन खां की 'मुहर' सब्त है जिस पर १२६४ हिजरी की तारीख़ दर्ज है। आखिर के सफ़हात भी गायब हैं। ख़ते—नस्तालीक़ में हिन्दी के अलफ़ाज़ लिख कर उसके फ़ारसी मानी समझाये गये हैं। गोया फ़ारसीदां अस्हाब को 'लोकल' यानी मकामी बोली में इस्तेमाल होने वाले अलफ़ाज़ की फ़ारसी में तशरीह की गयी है।



९— नाम किताब : जवाबाते ऐतिराजाते 'आरजू'
 लेखक : हकीम बेग़ खां 'हाकिम'
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : (अदबी) तनकीद (नस्र में)
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : २०
 साइज़ : तेरह/बाईस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३३८
 प्रथम पृष्ठ : बिस..... बादे हम्दे खुदावंदी के: जाते मुकद्दसश अज़ जमीअे नकाइस मुबर्रा.....
 विवरण : 'हाकिम' शायर के अशआर हैं। और उस पर सिराजुद्दीन अली खाँ 'आरजू' के इस्तदलाल व एतराजात पर जवाबात। ११०७ हिजरी की तारीख़ हाकिम ने इस रिसाले पर तहरीर की है कदीम जमाने में सुखन फ़हम हज़रात, अबयातो अशआर पर बहस किया करते थे। चुनांचे: 'हाकिम' के अशआर पर जो एतेराजात किये गये हैं। उसके जवाबात इस रिसाले में मौजूद हैं।



१०— नाम किताब : जुब दतुत तवारीख़
 लेखक : जानी अहमद बिन मोहम्मद अली.
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इस्लाम धर्म (गद्य)
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : २५०
 साइज़ : तेरह/चौबीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३३४
 प्रथम पृष्ठ : बिस्मिल्ला हिरहमानिर्रहीम।
 : अल हम्दु लिल्लाहिल लज़ी मुअज़्जुल किराम
 विवरण : यह रिसाला जुबदतुत तवारीख़ मज़हबे इस्लाम में जो अहकाम, नमाज़ और रोज़े के बारे में कुरआन में आये हैं अनको अरबी की इबारतों को सामने रखकर फ़ारसी में तरतीब दिया गया है। किताब के आखिर में इसका सने तालीफ़ १२२७ हिजरी समझ में आता है रोज़ पंजशंबा (जुमेरात) के आगे दीमक ने इबारत को चाट लिया है। किताब पर नव्वाबीने अवध की तीन मुहरें सब्त हैं। एक मुहर में नवाब अमजद अली शाह का नाम पढ़ा जा सकता है।



११— नाम किताब : जिब दतुत—तवारीख़
 लेखक : नूरुल हक़
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इतिहास
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ४०२
 साइज : साढ़े पन्द्रह/साढ़े पच्चीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन न० : ४८३७६
 प्रथम पृष्ठ : बिस खुतब—ऐ—किबरिया व जलाल बनामे शहंशाहे सरद के: आलिमो
 हर चे: दर आलम —स्त आफ़रीद:

विवरण : इस तारीख़ पर मोहम्मद शाह बादशाह गाज़ी की 'मुहर' है। नव्वाबीने अवध की भी मुहरें सब्त हैं। मुझे यह तस्नीफ़ शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी की मालूम होती है। चूँकि मैंने जिबदुत त—तवारीख़ के नाम से कहीं किसी लायब्रेरी में शेख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी का नाम देखा है सन् १०९८ हिजरी से ११६३ हिजरी तक का इन्दिराज इस में मौजूद है। इबतिदाई सफ़हात ५ हैं। उसमें मुख्तलिफ़ तारीखी मादे मज़कूर हैं। कुतबुद्दीन ऐबक से लेकर शाह आलम तक की तारीखें मज़कूर हैं।



१२— नाम किताब : तज़कर:तुल दौल—अ—ते शाही
 लेखक : दौलत शाह समरकंदी
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : कवियों की जीवनी
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : २९०
 साइज : साढ़े बीस / पन्द्रह सेन्टीमीटर
 एक्सेशन न० : ४८३४१
 प्रथम पृष्ठ : बिस: तहमीदी कि शाहबाज़ बुलंद परवाज़ अन्देश: बसाहतो फ़ज़ा कबरी.....

विवरण : यह शोरा—ए—फ़ारस का तज़करा है। तुख़: बहुत ही क़दीम है मगर जगह जगह से बोसीद: है। मरम्मत नाकाफ़ी है। सुलेमान जाह की मुहर १२४४ हिजरी की इस पर सब्त है। नवाब अमजद अली शाह और नवाब वाजिद अली शाह की इस पर 'मुहर' सब्त है। स्याह क़लम से कुतुबख़ान: में दाख़िल: के वक्त की तारीख़ मुंशी—ए—कुतुबख़ान: ने रबी—उल—अव्वल १२६२ हिजरी की डाली है। उस्ताद अनसरी, फ़िरदौसी, फ़रुख़ी अमअक़ बुख़ारी वग़ैरह—वग़ैरह शोरा का ज़िक़्र और उनकी अद—अ—बी शनाख़्त इसमें करवायी गयी है। २५० शोरा से ज़्यादा की फ़हरिस्त किताब में मौजूद है।



१३— नाम किताब : तफ़सीरे हुसैनी
 लेखक : हुसैन काशफ़ी
 भाषा : फ़ारसी अरबी
 विषय : तफ़सीरे कुरआन
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी

पृष्ठ	: १५७९
साइज	: साढ़े सत्ताईस / पन्द्रह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३८८
प्रथम पृष्ठ	: बिस मिल्ला हिर—रहमा, निर रहीम अऊजु पनाह मी गीरेम व इलतिजा मी नमायम.....

विवरण : यह कुरआन की तफसीर है और फरसी में है। इसका साले तस्नीफ १०९० हिजरी है। गोया ये ३३० साल पुरानी किताब है। इसके मुसन्निफ हुसैन काशफ़ी हैं। पहला सफह तिलाई हुस्नकारी से मुजय्यन किया गया है। यह कुरआन के तीस पारों की मुकम्मल तफसीर है। खते नस्तालीक इस क़दर उमद: और खफ़ी है कि तारीफ़ नहीं की जा सकती। किताब में जगह—जगह दीमक लग रही है। सुर—रिवयां अरबी में काइम की गयी है। जिसमें लाल रोशनाई इस्तेमाल की गयी है।



१४— नाम किताब	: तवारीख़े कंधार
लेखक	: सय्यद नजफ़ अली
भाषा	: फारसी
विषय	: तारीख़ नवीसी (इतिहास)
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: २७०
साइज	: साढ़े इक्कीस / साढ़े तेरह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३४२
प्रथम पृष्ठ	: दो कस ब कुरबे ऊ कुशत: शुदंद व पंज कस बे आंके

विवरण : मीरज़ा कामरान मुग़ल के कूच फ़रमाने और वक्ती तौर पर पेशे बाग़ नुज़ूल फ़रमाने के ज़िक्र से वाकेआ निगारी का आगाज़ होता है। शुरू के सफ़हात ग़ायब हैं। हुमायूँ बादशाह और बाबर के मज़कूरात तारीख़े कंधार में मौजूद हैं और फिर जुमला लवाहिकीन व सरदारान का भी ज़िक्र है अज़ाँजुमल: महाबत खां वगैर:। निहायत उमद: खते नस्तालीक़ का नुस्खा है नवाबीने अवध की मोहरें सब्त हैं।



१५— नाम किताब	: तारीख़—ए—अलफ़ी (जिल्द एक)
लेखक	: नकीब खां
भाषा	: फारसी
विषय	: इतिहास
प्रकाशित—अप्रकाशित	: खते नस्तालीक़ (कलमी)
पृष्ठ	: ५३८
साइज	: साढ़े तेईस/पैंतीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३८९
प्रथम पृष्ठ	: कल्ले—ऊ नमूद

विवरण : यह तारीख़, तारीख़े अलफ़ी के नाम से मौसूम है। इसमें एक हजार साल की तारीख़ जस्ता—जस्ता बयान की गयी है। ये इस्लामी ममालिक व सलातीन के ज़िक्र से लबरेज़ है। इसके शुरू के सफ़हात गुमशुदा हैं, आख़िर के भी ग़ायब हैं। इस पर नवाबीने अवध की मुहरें लगी हैं। १२३७ हिजरी की तारीख़ पहले सफ़े पर रकम है (लिखी है)।



१६— नाम किताब : तारीख़—ए—अलफ़ी दफ़तर दोयम: Vol-II
 लेखक : नकीब खाँ
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इतिहास
 प्रकाशित—अप्रकाशित : नुसख़—ए—ख़ते नस्तालीक़ (कलमी)
 पृष्ठ : १२८४
 साइज़ : तैंतीस / बाईस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३९०
 प्रथम पृष्ठ : रब्बे यस्सिर तज़किरा.....

विवरण : एक हजार साला तारीख़े इस्लाम व मलूक व सलातीने इस्लाम पर ये तारीख़ तफ़सील से रोशनी डालती है। तारीख़ काफ़ी पुरानी है। नवाबीने अवध के अलावा एक मुहरे सियाह किसी बादशाह की है जो पढ़ी नहीं जा सकी। सुलेमान जाह बहादुर की मुहर, अमजद अली शाह की मुहर, वाजिद अली शाह की मुहर, इस के अलावा दाख़िल दफ़तर होने की तारीख़ ११८२ हिजरी, १२३७ हिजरी माहे रमज़ार और ६ रबी उलअव्वल, १२६२ हिजरी की सन् दर्ज है। यह किताब ख़ते नस्तालीक़ का अच्छा नमूना है। आख़री औरक कुछ गुम है।



१७— नाम किताब : तारीख़े आलम आरा भाग — एक
 लेखक : अब्दुल वाहिद
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इतिहास
 प्रकाशित—अप्रकाशित : पाण्डुलेपी (कलमी मख़तूतः)
 पृष्ठ : ९००
 साइज़ : साढ़े चौबीस/तेरह सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३४९
 प्रथम पृष्ठ : अलामकी पैदाबूद

विवरण : यह इतिहास आदम से आरम्भ होकर मोहम्मद रसूलल्लाह तक आता है। यह ख़ते नस्तालीक़ है। यह पहला भाग ६ रबीउलअव्वल १२६२ हिजरी को दाख़िल किया गया था। इस पर नवाब अमजद अली शाह और सुलेमान जाह की मोहरें लगी हैं।



१८— नाम किताब : तारीख़े — फ़रिशतः
 लेखक : मोहम्मद कासिम अल मारुफ़ "फ़रिशतः"
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इतिहास
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : १२००
 साइज़ : साढ़े तेईस/साढ़े उन्तालीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३५८

प्रथम पृष्ठ : बिस:..... पेशे वुजूदे हम: आयंदगान, पेशे बका—ए—हम: पाइन्दगान काफिल सालारे जहाँ.....

विवरण : यह तारीख़ पूरी दुनिया में तारीख़ की किताबों में अपना अहम मक़ाम रखती है। यह तारीख़े—फरिश्त: के नाम से मौसूम है। इसकी दो फ़स्ले इसी एक जिल्द में मौजूद हैं। निहायत अहम और कीमती नुस्ख़: है। फुतूहाते इसलामिया और सलातीन का इस में ज़िक्र है और खुद मुसलिफ़ एक “सय्याह” है। इस पर किसी नवाब की ‘मुहर’ नहीं है। जिस शख्स ने यह अत्य: लायब्रेरी को दिया है। उसका नाम भी कहीं मज़कूर नहीं है।



१९— नाम किताब : तारीख़े मुग़ल
लेखक : मोहम्मद युसुफ़ ‘नकहत’
भाषा : फ़ारसी
विषय : इतिहास
प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
पृष्ठ : २४२
साइज़ : इक्कीस/बत्तीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन न० : ४८३३२
प्रथम पृष्ठ : इज़्ज़त ख़ां ब इनायते ख़लअते ख़ास्स.....

विवरण : सन् १२२३ हिजरी में मोहम्मद शाह के अहद में मोहम्मद यूसुफ़ ‘नकहत’ ने इस तारीख़ को पेश करके बादशाहे—वक्त से इनआमों—इकराम हासिल किया। शाहजहाँ के अहदे शादकाम से लेकर मो० शाह मुग़ल तक, इसमें वका—ए—निगारी और तारीख़ नवीसी से काम लिया गया है। तहरीर, ख़ते नस्तालीक़ में है मगर किताब के अक्वल औराक़ कितने गाइब हैं इसका पता नहीं चलता। किसी राम दयाल पंडित का भी १२५० हिजरी में एक नोट दर्ज है जिस में इसका इज़हार किया गया है के: किताब का नाम मालूम नहीं हो सका।



२०— नाम किताब : तारीख़े सआदत
लेखक : मुंशी इमाम बख़्श “बेदार”
भाषा : फ़ारसी
विषय : इतिहास (मन्ज़ूम बतरजे मस्नवी)
प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
पृष्ठ : १४७
साइज़ : साढ़े तेरह/साढ़े तेईस सेन्टीमीटर
एक्सेशन न० : ४८३५९
प्रथम पृष्ठ : बिस:.....ई किताब मौसूम ब तारीख़े सआदत तस्नीफ़ फ़कीर हकीर सरासर

तकसीर मुंशी इमाम बख़्श अल मुत—अ—ख़ल्लुस ब: बेदार

विवरण : यह किताब तारीख़े—सआदत बतरजे मस्नवी नामुकम्मल है। बाब दर अहवाले रोज़गारे खुद मुकम्मल नहीं है। आख़री बाब, दर ख़ात्म—ए—किताब तारीख़े सआदत गोयद..... भी ग़ायब है किताब के

कुल १४७ सफ़हात मौजूद हैं। बाकी सफ़हात जिनके आख़िर में तालीफ़ो तस्नीफ़ की तारीख़ मुन्दरिज है गायब हैं। सिर्फ़ नव्वाबीन की मुहरों से इतना पता चला कि १२३२ हिजरी में इसका किसी और की तहवील में पाया जाना साबित है। बाकी की मुहरें इसके बाद की हैं।



२१— नाम किताब	: तारीख़े सुल्तान मोहम्मद कुतबशाह
लेखक	: मीरज़ा मोहम्मद अमीन
भाषा	: फारसी
विषय	: इतिहास
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: २७२
साइज़	: साढ़े अठ्ठारह/इकत्तीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन न०	: ४८३८५
प्रथम पृष्ठ	: बिस: तहमीदी के: शाहबाजे बुलंद परवाज़ अदेश—ए—मुबाहति किबरियाई आं तैरान न तवानद.....

विवरण : इस तारीख़ पर जिसका नाम तारीख़े सुल्तान मो० कुतब शाह है किसी नवाब या किसी बादशाह की 'मुहर' नहीं है मगर यह निहायत जामेअ तारीख़ है और हैदर आबाद के सलातीन से मुताल्लिक है। ख़ते तहरीर निहायत उम्द: है। सुल्तान मो० कुतब शाह के शहजादगान और उनके आबा—उ—अजदाद का जिक्र शरहो—बिस्त से किया गया है। वाक़ेआत निगारी में इख़्तिसार से काम लिया गया है। आख़िर के सफ़हात गायब हैं।



२२— नाम किताब	: तुहफ़तुन नादिरिन
लेखक	: माहम्मद सईद
भाषा	: फारसी
विषय	: इन्शा—ए—लतीफ़ ब जुबाने फारसी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: २७६
साइज़	: साढ़े ग्यारह / साढ़े अठ्ठारह सेन्टीमीटर
एक्सेशन न०	: ४८४००
प्रथम पृष्ठ	: बिस मिल्ला हिर—रहमा—निर—रहीम जहाने जहां बिनावश जहांदारी रा.....

विवरण : किताब की हालत ख़स्त: है। इसकी मरम्मत ग़लत तरीक़े से की गयी है, दीमक ज़द: भी है। मुझे यह क़दीम नुस्ख़: अहदे आलमगीर (औरंगज़ेब) का लगा क्यूंकि किताब के आख़िर में मुअल्लिफ़ ने अबुल मुज़फ़्फ़र हज़रत बादशाह औरंगज़ेब बहादुर आलमगीर खुल्दुल्लाहु व मुल्कुहु व सुल्तानुहु जैसी इबारत से किताब को मुजय्यन करते हुये इसकी तारीख़े तालीफ़ १०९९ हिजरी तहरीर की है। अस्ल किताब गोया ३२१

साल पुरानी है। इस किताब को जिस कातिब ने नक़ल किया है उसका नाम मोहम्मद सर्ईद है। यह नुस्खा ब एहतेमामे मो० बेग अवध के कुतुबख़ाने में दाख़िल किया गया जिसपर अवध के नवाब अमजद अली शाह की मुहर सब्त है। जिसमें १२३१ हिजरी तहरीर है। किताब में कहीं तानसेन से मुताल्लिक़ हिकायत है कहीं युसुफ़ जुलैखा की, मुख़तलिफ़ हिकायतों का गुलदस्त: इन्शाये लतीफ़ से सजाया गया है।



२३— नाम किताब	: तुहफ़तुल अहबाब फ़ी बयानुल—अंसाब
लेखक	: मोहम्मद ख़लीलुल्लाह अंसारी
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: नसब नाम: (शजर—ए—फ़िरंगी महल)
प्रकाशित—अप्रकाशित	: क़लमी
पृष्ठ	: ४९
साइज़	: साढ़े बीस/तैंतीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८००१
प्रथम पृष्ठ	: बिस अल्हम्दु लिल्लाहिल लज़ी ख़ल—अ—क़ल मौजूदातु व अतिकुल इन्सानु व बदरे अज़ाइबुल मख़्लूक़ात.....

विवरण : जनाब मो० ख़लीलुल्लाह अंसारी फ़िरंगी महली ने सन् १३०५ हिजरी में अपने ख़ान्दान के मुताल्लिक़ शजर: नवीसी का अंदाज़ इख़्तियार करके यह तालीफ़ की है। ख़त नस्तालीक़ है। फ़िरंगी महल के उलामा—ए—किराम, फ़िरंगी महली क्यू कहलाये इसकी वजहे:तस्मिय: भी तहरीर की है। सने हिजरी के हिसाब से यह क़लमी मख़तूत: एक सौ पन्द्रह साल पुराना है। इस पर किसी नवाब की 'मुहर' सब्त नहीं है। यह किताब किसी ज़ाती कुतुबख़ाने से लाइब्रेरी मे मुन्तक़िल हुयी है।



२४— नाम किताब	: तूती नामा
लेखक	: फ़रीद उद्दीन अतार
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: कहानी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: पाण्डुलिपी
पृष्ठ	: ३६६
साइज़	: पन्द्रह /बत्तीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३६८
प्रथम पृष्ठ	: मशवरत आमद अस्त!

विवरण : इस पाण्डुलिपी में प्रथम एवं द्वितीय पृष्ठ का सम्बन्ध तूतीनामा से नहीं है। तूतीनामा के शुरू के पृष्ठ नहीं हैं। मगर यह मशहूर किताब है और हज़रत फ़रीद उद्दीन अतार ने जीवन के विभिन्न पहलुओं पर

बहस की है। जिन किरदारों पर कहानी चलती है, वह मानव नहीं बल्कि चिड़ियाँ हैं। जैसे तूती, ताऊस, इत्यादि यही इस पुस्तक के मुख्य किरदार हैं। किसी कातिब ने यह अस्ल पाण्डुलिपी से नक़ल की है इस का ख़त कहीं—कहीं शिकस्ता है। किताब की 'मरम्मत' होनी चाहिये।



२५— नाम किताब	: तोहफ़—अ—तुल मोमिनीन
लेखक	: मोहम्मद अब्दुल मोमिन हुसैनी
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: तिबे यूनानी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ६३४
साइज़	: तैंतीस/बीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३४०
प्रथम पृष्ठ	: बि:सुबहानक—अ, अल्लाहुम्म: बा अक़दूसे मा तय्यबन—नुफूसो.....

विवरण : यह किताब हकीम मो० मोमिन हुसैनी ने तरतीबो तदवीन की है। इनके वालिद भी हाजिक हकीम थे, जिनका ज़िक्र मीर मुहम्मद ज़मां के नाम से साहिबे तालीफ़ ने किया है। नव्वाबीने अवध में से, सुलैमान जाह (नसीरुद्दीन हैदर) की ख़िदमत में यह नुस्ख़: पेश किया गया है। मगर इस पर किसी नवाब की 'मुहर' सब्त नहीं है। किताब दीमक ज़द: हो चुकी है। कोई सूरत अगर इसको महफूज़ रखने की हो सके तो की जाए। किताब नाटिर है।



२६— नाम किताब	: तोज़ोके तैमूरी
लेखक	: इबादुल्लाह इब्ने हा०मो०अमीन
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: सवानेह (आत्म कथा)
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: १०६
साइज़	: ग्यारह/साढ़े बीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३६७
प्रथम पृष्ठ	: बिस..... फ़रज़न्दाने मुल्क गीर कामगारो बिनायर जविल कदरे मुल्कदार का मालूम ऊ

विवरण : सन् ११०९ हिजरी में इबादुल्लाह इब्ने हा०मो० अमीन ने तैमूर के वका—ए—और सवानेह इस किताब में तहरीर किये हैं। इसका नुस्ख़: बहुत पुराना है और बेश कीमत है। किताब ख़ते नस्तालीक़ का बहतरीन नमून: है। इस पर नवाबीने अवध की तीन मुहरें सब्त हैं। पहली मुहर सुलैमान जाह की, दूसरी अमजद अली सुलतान की, तीसरी नवाब वाजिद अली शाह की। सन् ११९७ हिजरी की भी मुहर है सन् १२३१ हिजरी की भी मुहर है। सफ़ह—ए—आख़िर पर भी नव्वाबीन की मुहरें हैं।



२७— नाम किताब	: दीवाने ज़हूरी
लेखक	: मौलाना ज़हूरी
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: शायरी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: अप्रकाशित (कलमी)
पृष्ठ	: ९६४
साइज	: उनतीस/सतरह सेन्टीमीटर
एक्सेशन न०	: ४८३९१
प्रथम पृष्ठ	: बिस्मिल्लाहिर—रहमा—निर—रहीम खर—अ—मे चम—अ—ने सुखन ब तार—वते हम्दे बहार.....

विवरण : ज़हूरी फ़ारसी साहित्य का एक विश्वसनीय और लोकप्रिय कवि है। यह संग्रह उसी का है। इस पर अमीरुद्दौला तअल्लुकेदार महमूदाबाद की 'मुहर' लगी हुयी है। यह मुहर दिनांक १२१९ हिजरी की है। दूसरी 'मुहर' कुतबखान—ए—सफवी की भी इसी किताब पर मौजूद है जो ११३९ हिजरी की है।



२८— नाम किताब	: नल व दमन (मन्जूम)
लेखक	: फ़ैजी
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: शायरी (मस्नवी)
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: २६४
साइज	: सोलह/साढे सत्ताईस सेन्टीमीटर
एक्सेशन न०	: ४८३५७
प्रथम पृष्ठ	: बि..... ऐ दरत के: व पाऐ तो जे आगाजे अन्काए बुलंद परवाज़.....

विवरण : १७ मई १८४३ ई मुताबिक १५ रबीउस सानी १२५९ हिजरी को लाला बनारसी दास साहब खल्फे चौधरी साहब, छावनी नसीराबाद अजमेर की खिदमत में फौजदार खां साकिन बल्द—ए—दारुल खैर अजमेर शरीफ ने किताबत करके किस्म—ए 'नलो दमन' अस्ल नुस्खे से नकल करके, जिसके मुसनिफ दरबारे—अकबरी के मशहूर शायर "फ़ैजी" हैं, लालाजी की खिदमत में पेश किया। मस्नवी नलोदमन दुनिया भर में इस वजह से मशहूर है कि यह अस्ल संस्कृत भाषा में है। फ़ैजी ने इसे फ़ारसी का रूप दिया और कविता में दिया जबकि संस्कृत भाषा में यह किस्सा गद्य में है, पद में नहीं। इस से साबित हुवा कि फ़ैजी फ़ारसी का बहुत बड़ा शायर है।



२९— नाम किताब	: फ़रहंगे बहारे दानिश
लेखक	: इनायतुल्लाह मिर्जा
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: लुगत नवीसी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी

पृष्ठ	: ६६
साइज़	: पन्द्रह / साढ़े पच्चीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३५६
प्रथम पृष्ठ	: बिस..... बादे हम्दो सनाये मकदरे मुतलक व नाते सय्यदुल मुर सिलीन व मनाकिबे वसी-ए-बरहक

विवरण : २५ रबी उस सानी १२५५ हिजरी को फ़रहंगे बहारे दानिश तमाम हुई। इसमें मुसन्निफ़ ने एक तरजुम-अ-ए-लुगाते किताबे बहारे दानिश तहरीर किया है। मगर इससे 'फ़रहंग' का मतलब वाज़ेह नहीं हुआ। दर अस्ल यह बहारे दानिश में मुस्तअमिल होने वाले अलफ़ाज़ों इस्तेलाहात की तफ़सीरी लुगत है। इसी नुस्ख़: में एक मस्नवी 'आतिश नामा सोज़ो गुदाज़' के नाम से है। जो हा० अब्दुल रहीम की तहरीर है। उसकी जिल्द बन्दी इसी किताब के साथ हो गयी है जो १५ सफ़हात पर मुशतमिल है।



३०- नाम किताब	: फ़रहंगे मुरक्किबातु किनायात मय लुगात
लेखक	: हक़दाद खां जलवानी
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: लुग-अ-ते फ़ारसी
प्रकाशित-अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: २४६
साइज़	: चौदाह/ साढ़े तेईस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३६२
प्रथम पृष्ठ	: रब्बेयास्सिर बि० व तम्मम बिलखैरि। ख़ातेमा मुशमिल बर पंच दर, दर अव्वल...

विवरण : यह फ़रहंग हक़दाद खां जलवानी ने तसनीफ़ की है इसका नाम फ़हरिस्त में ग़लत इन्द्रराज़ था। कुतुबख़ान-ए-नव्वाबीने अवध के इन्द्रराज़ में न० ७२ पर इसका नाम फ़रहंगे मुरक्किबातु किनायात दर्ज है। जिसकी तसदीक़ मुसन्निफ़ की मुन्दरज: जैल इबारत से हो रही है। जो उसने किताब के आख़िर में तहरीर की है। तम्मत तमाम शुद, फ़रहंगे मुरक्किबातु किनायात मय लुगात ब जेहते बरख़ुरदार फ़रहत आसार करीमदाद खां यानि करीमदाद खां की जेहदु कोशिश से यह किताब तैयार हुई। यह ६ रबीउल-अव्वल ११५९ हिजरी को मोहम्मद शाह बादशाह को उसके २९वें जुलूस के मौक़े पर नज़्र की गयी ।



३१-नाम किताब	: बयाज़े ग़ज़लियात
लेखक	: कातिब 'हकीर'
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: शायरी की बयाज़
प्रकाशित-अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: २४०
साइज़	: साढ़े बारह/छब्बीस सेन्टीमीटर

एकसेशन नं० : ४८३९५
 प्रथम पृष्ठ : गज़ले सादी: वक्ते तरब खुश बाफ़तम आं दिलबरे तन्नाज़ रा
 विवरण : ९ फ़रवरी १८५० ई० (२५ रबीउल ऊला १२६६ हिजरी को कातिब सरबसुधराय तख़ल्लुस ब 'हकीर' ने कुवंर धनपत राय पिसर राजा उलफ़त राय की ख़िदमत में उनकी फ़रमाइश पर यह बयाजे ग़ज़लियात मुरत्तिब करके उनकी ख़िदमत में पेश की। साहिबे तहरीर खुद भी शायर है और उसकी एक ग़ज़ल फ़ारसी में "हकीर" तख़ल्लुस के तहत इस बयाज में दर्ज है। सादी, हाफ़िज, उरफ़ी वगैरा फ़रसी शोरा का चुनिंदा कलाम इसमें मौजूद है। बहुत ही खुशख़त नुस्ख़: है।



३२- नाम किताब : मज-म-उल फ़रसे सरवरी
 लेखक : मोहम्मद कासिम
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : लुग-अ-ते फ़ारसी
 प्रकाशित-अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ५१०
 साइज़ : चौदह/चौबीस सेन्टीमीटर
 एकसेशन नं० : ४८३६४
 प्रथम पृष्ठ : बिस्मिल्लाह इब्तिदाये कलाम हर दानिशामन्द सुख़नवर व इनितहा-ए-सुख़न हर ख़िरदमद.....

विवरण : इस किताब का नाम मजमउल फ़ारसे सरवरी है न कि फ़रहगे सरवरी। इसमें फ़रसी इस्तिलाहों से बहस की गयी है और उस ज़माने की तमाम लुगात से अलफ़ाजु मुआनी की भी बहस की गयी है। यह बहस निहायत गहराई और फ़िक्र से की गयी है। यह किताब सुल्तान इब्नेसुल्तान अबुल मुज़फ़्फ़र शाह अब्बास बहादुर खां खुलदुल्लाहु मुल्कुहू की ख़िदमत में मुसनिफ़ की तरफ़ से पेश की गयी थी। यह बहुत मशहूर लुगत है। इसका ज़िक्र सिराजउद्दीन अली "आरजू" ने अपनी लुगत सिराजुल लुगत में किया है। इस लुगत को कातिब मो० शरीफ़ ने जो शहर पटना का साकिन है। ९ शव्वाल १०४३ हिजरी में नक़ल किया है। यह उसी का नक़ल किया हुआ नुस्ख़: है। इस किताब पर नव्वाब अमजद अली शाह की बड़ी मुहर लगी है। इब्तिदा में भी किताब पर मोहरें सब्त हैं।



३३- नाम किताब : मस्नवी मौलाना रुम १, २, ३, हिस्सा
 लेखक : मौ० जलालुद्दीन रुमी
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : शायरी (मस्नवी)
 प्रकाशित-अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ४१२
 साइज़ : साढ़े चौतीस/साढ़े अठ्ठारह सेन्टीमीटर
 एकसेशन नं० : ४८३८६

प्रथम पृष्ठ : बि० : हाज़ा किताबुल मस्नवी—उल मानवी उल मौलवी वहुवा उसूले, उसूलुद्दीन.....
 विवरण : यह किताब जिसका नाम मस्नवी मौलाना रुम बहुत मशहूर है, यह सुल्तान मोहम्मद शाह के अहद में मोहम्मद नूर कातिब ने तहरीर की है। ख़त बहुत ही उम्दः है क़लम बेहद ख़ूबसूरत है। उस ज़माने का यह रिवाज था कि फ़ारसी की मशहूर किताबें क़लमी होती थी। यह किताब मौलाना जलालुद्दीन रुमी ने शायर की हैसियत से बतरज़े मसनवी, 'तसव्वुफ़' के मसाइल समझाने के लिए तहरीर की थी। यह दुनिया की मशहूर मसनवी साबित हुई। जिसका तरजुमा तक़रीबन हर जुबान में हो चुका है। यह मोहम्मद शाह से बहुत पहले लिखी गयी थी। मगर यह नुस्खा मोहम्मद शाही दौर का क़लमी नुस्खः है। बहुत बुरी हालत में है।



३४— नाम किताब	: मस्नवी शोरे इश्क़
लेखक	: नामालूम
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: शायरी (मस्नवी)
प्रकाशित—अप्रकाशित	: क़लमी
पृष्ठ	: १८
साइज़	: उन्नीस/ साढ़े ग्यारह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ७८४०८
प्रथम पृष्ठ	: बि०..... सिफ़—अ—ते बज़्मे उरूसी, कौकबश चूं रवां के: दीद शुद सरे मज़िले माहे पदीद

विवरण : यह मस्नवी मुकम्मल नहीं है। मालूम होता है कि मस्नवी तवील होगी। क्योंकि न इसमें नव्वाबीन की 'मुहर' है न सने दाख़िला न मुसन्निफ़ का नाम। बस यह तवील मस्नवी का एक जुज़्व है।



३५— नाम किताब	: मीज़ानुल हिकमत
लेखक	: अबू उसमान दमिश्की
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: तिब
प्रकाशित—अप्रकाशित	: क़लमी
पृष्ठ	: १३२
साइज़	: ग्यारह / साढ़े उन्नीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ७८४१२
प्रथम पृष्ठ	: बअज़े अज़ बादशाहान सुकरात रा

विवरण : शुरू के सफ़हात ग़ायब हैं आख़िर के भी ग़ायब हैं। तिबे यूनानी से मुताल्लिक़ मुख़्तलिफ़ हकीमों का ज़िक्र है पुराने हकीमों ने जो नज़रियात व ख़यालात इन्सान को लाहिक़ होने वाली बीमारियों और मरज़ों के बयान किये हैं और उससे मुताल्लिक़ उसको दूर करने के तरीके बताइ हैं। बहुत सी पुरानी किताबों का जो तिब से मुताल्लिक़ हैं उनका निचोड़ इस किताब में पेश किया गया है। इस्तिलाहात, और एतिकादात से भी बहस की गयी है। इस किताब का सने तालीफ़ इस वजह से नहीं बताया जा सकता कि शुरू और आख़िर के सफ़हात नहीं है। लेकिन यह किताब अपनी लिखाई रोशनाई और कागज़ की वजह से काफी पुरानी है।



३६- नाम किताब : मुन्तख़ब—उल—लुगाते शाहजहानी
 लेखक : अब्दुल रशीद
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : लुगाते फ़ारसी
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ८९२
 साइज़ : साढ़े बारह / साढ़े बाईस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३७०
 प्रथम पृष्ठ : बिस मिल्ला—हिरहमा निरहीमा। नशिस्तन गाउ पाये रा सख़्त रसीदत

विवरण : अरबी के और फ़ारसी के पचास हजार से ज़्यादा: अल्फ़ाज़ और काफी से ज़्यादा: ज़रबुल अम्साल को शाहजहां के ज़माने में उसके शोब—ए—तस्नीफ़ु—तालीफ़ ने यह लुगत तरतीब दी है और इसे शाहजहां के नाम से मअनून किया है। इसपर सुलैमान जाह की १२४४ हिजरी की एक मोहर है। और १२५३ हिजरी की नवाब अमजद अली शाह की और नवाब वाजिद अली शाह सुलताने आलम की 'मुहर' है शायद १२६३ हिजरी की तारीख़ है अच्छी तरह साफ़ नहीं है।



३७- नाम किताब : मुन्तख़िब—उल—तवारीख़
 लेखक : मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इतिहास
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ११३६
 साइज़ : पन्द्राह / तीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३६९
 प्रथम पृष्ठ : बिस मिल्ला हिर रहमा निर रहीम आगाज

विवरण : ३ रबी उलअव्वल १२६२ हिजरी दाख़िल कुतुबख़ाना (पुस्तकालय) खास हुई! नवाबीने अवध की तीन मोहरें लगी हैं। कुतुबख़ाना सुलेमान जाह १२४४ हिजरी, कुतुबख़ाना नवाब अमजद अली शाह (तारीख़ पढ़ी नहीं जा सकती) कुतुब ख़ाना वाजिद अली शाह (तारीख़ पढ़ी नहीं जा सकती) ये मशहूर लेखक और अकबर के नवरत्न, मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी की तसनीफ़ (किताब) है। जिका इतिहास में अपना एक स्थान है। जहां जहां फतह हासिल हुई उसकी तफ़सील इस में मिलती है। वकाये निगारी और सवानेह का अजीब ग़रीब मुरख़्खा है जिस का जवाब नहीं।



३८- नाम किताब : मुन्तख़िब—उत्तारीख़
 लेखक : अब्दूल कादिर बदायूनी
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इतिहास
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी

पृष्ठ	: ८३९
साइज	: पन्द्रह / सत्ताईस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३३०
प्रथम पृष्ठ	: बि..... ऐ याफ़्त—ए—नामहाज़, नामे तो रिवाज.....

विवरण : यह तारीख़, जिसका नाम मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूनी की वजह से फने तारीख में बहुत मशहूर है १००४ हिजरी में तालीफ़ की गयी। मुल्ला “अब्दुल कादिर बदायूनी” अकबरे—आज़म के ज़माने में तारीख़ नवीसी पर मामूर थे। ख़ते नस्तालीक़ निहायत उम्दः है। अली हसन ख़ां के कुतुबख़ाने की इसपर ‘मुहर’ सब्त है। अकबर के ४०वीं सने जुलूस के मौक़े पर मुन्तख़िब्बुतारीख़ अकबर के दरबार में बाकायदेदः पेश की गयी थी। मुल्ला अब्दुल कादिर अकबर के नवरत्नों में से ‘एक’ थे।



३९— नाम किताब	: रिसाला इन्तिज़ामे सलतनत
लेखक	: ना मालूम
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: इन्तिज़ामे हुकूमत
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ९२
साइज	: साढ़े बीस / तेरह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३५०
प्रथम पृष्ठ	: रब्बे यस्सिर बिस्मिल्लाहिरहमा निरहीम, व तम्मम बिल ख़ैरि।

इबतिदाय सुखन बनाम परवरदिगार यके आलम व हर चे: दर आलम

विवरण : इस किताब को काफी गौर से पढ़ा, लेकिन रिसाला इन्तिज़ामे सलतनत किताब का नाम कहीं नहीं मिला। मुसन्निफ़ या मुअल्लिफ़ का नाम भी नहीं मिला। वैसे आगाज़े इस्लाम से उमूरे सलतनत को कैसे निभाया गया और सलातीन में क्या—क्या खूबियां होनी चाहिये और रिआया के साथ कैसे पेश आना चाहिये और हुस्ने इन्तिज़ाम को किस तरह मुख़तलिफ़ शोबा हाये इन्तिज़ामो—इन्सिराम में बांटना चाहिये और इस्लाफ़ ने कैसे—कैसे बांटा था। यही इस किताब का मौज़अ है। किताब की हालत और ख़ते तहरीर बहुत अच्छा है। यह किताब भी कुतुबख़ाना सुलेमान जाह की ‘मुहर’ के साथ दीगर मुहरें भी अपने अन्दर रखती है बतारीख़ याज़दहम रबीउल अव्वल १२६२ हिजरी को यह अमजद अली शाह के कुतुबख़ाने में दाखिल की गयी, यह १२४४ हिजरी में सुलैमान जाह के कुतुब ख़ाने में दाखिल थी।



४०— नाम किताब	: रिसालः सिफ़ातुस्सैफ़
लेखक	: मोहम्मद हादी व लुतफुल्लाह “निसार”
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: शमशीर ज़नी व अकसामे शमशीर ज़नी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ४६
साइज	: साढ़े बारह / बाईस सेन्टीमीटर

एक्सेशन नं० : ४८३९९
 प्रथम पृष्ठ : बि०..... ऐहसाने बे पायां रब्बुल अकरमुल अकरमीन, कि ब नूर

विवरण : यह रिसाला उस्तादाने शमशीरजनी से इसतिफ़ादा करके तलवार चलाने के दाउपेंच सिखाने के लिए लिखा गया है। इसके इलावः दूसरे हिस्से में अकसामुस्सैफ़ यानी तलवारों की किस्में लिखी गयी है। दुनिया में तलवार की साख़्त, नमूने उसकी धार रखने का फ़न और अरबी, रूमी, हिन्दुस्तानी तलवारों की साख़्त से बहस की गयी है। शकलें भी नमूने के तौर पर दी गयी हैं। फिरगियों की तलवारों से भी बहस की गयी है। फ़्रांस की तलवारें भी ज़ेरे—बहस लाई गयी हैं। राजपूत हज़रात तलवार कैसी बनाते हैं। इसका भी इसमें ज़िक्र है। १० जीकाद ११९७ हिजरी इस पर तहरीर है। १२३१ हिजरी मो० बेग ने तहरीर किया है, १२४१ की 'मुहर' सुलेमान जाह की है। अपनी किस्म का वाहिद रिसालः है और नायाब है।



४१— नाम किताब : लुग—अ—ते फ़ारसी
 लेखक : सअ—दुल्लाह
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : मुहावराते फ़ारसी
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : २७८
 साइज़ : बाईस/साढ़े चौदह सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३६०
 प्रथम पृष्ठ : बि..... अम्मा बाद, चूँ इल्लिफ़ाते मसोसाने मअसिर अज वाफ़—उ—कासिर—उ—अज मलूक साहिबे सुलूक

विवरण : यह लुग—अ—ते फ़ारसी दर अस्ल ज़रबुल अम्साले फ़ारसी अरबी, तुर्की और मावराउन—नहरी वगैरः अल्फ़ाज़ पर मुख़ासरन मुन हसिर है। ख़ते तहरीर बहुत ही प्यारा है। इस पर एक 'मुहर' कुतुबख़ान—ए—शहे ज़मन १२३७ हिजरी की दूसरी कुतुबख़ान—ए—सुलैमान जाह की जो १२४४ हिजरी की है तीसरी नवाब अमजद अली शाह की १२६२ हिजरी की चौथी नवाब वाजिद अली शाह की १२६४ हिजरी की, पांचवी मुहर नहीं है बल्कि तहरीर है जिस्में ब एहतिमामे फ़िदवी मुंशी मोहम्मद अली अफ़ल्लाहु अन्हु। याज़दहम रबीउल अव्वल १२६२ हिजरी तहरीर है। छटी 'मुहर' गवर्नमेन्ट कालेज लाइब्रेरी बनारस की है। इस में तारीख़ नहीं है और इंग्रेज़ी की मुहर एक गोल दायरे में है।



४२— नाम किताब : लुगाते तिब
 लेखक : मुंशी मोहम्मद अली
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : तिब
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ९३८
 साइज़ : सोलह/छब्बीस सेन्टीमीटर

एक्सेशन नं० : ४८३७२
 प्रथम पृष्ठ : बि० अल्हमदु लिल्लाहे रब्बिल आलअ—मीन वस्लातु वस्सलामु अला खैरि
 खलकिही मुहम्मदन

विवरण : किताब के सफ़ह आखिर पर मुंशी मुहम्मद अली मुसिन्नफ़ ने अपने कलम से किताब के खातिमः बिल खैरि की तारीख ७ ज़िलहिज्जः १२३७ रक़म की है और सबब—ए—तस्नीफ़ सफ़हः अव्वल पर गाज़ि—उद्दीन हैदर बादशाह की पज़ीराई तहरीर किया है। यह किताब तिबे यूनानी के इमराज़ व इस्तलाहात पर मबनी है और उन इमराज़ के लिए नुस्खः जात भी इसमें तहरीर किये गये हैं। कदीम हिकमते यूनानी की किताब है और बहुत सी हिकमत की किताबों का निचोड़ है।



४३— नाम किताब : वाक़ेआते बाबरी
 लेखक : मिर्जा अब्दुर रहीम ख़ानेख़ानां
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इतिहास
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ५१२
 साइज़ : पंद्रह/साढ़े छब्बीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३६६
 प्रथम पृष्ठ : बिस० दर माहे रमज़ान सन् हफ़्तद व नौदोनः दर विलायते फ़रग़ाना दर दुवाज़्दः
 शुद लके बादशाह शुदम.....

विवरण : नवाबीने अवध नसीरुद्दीन हैदर (सुलेमान जाह, अमजद अली शाह, वाज़िद अलीशाह के कुतुबख़ानों की इस पर मुहरें सब्त हैं। मिर्जा अब्दुर रहीम ख़ानेख़ानां की यह मशहूर तस्नीफ़ है। जो अहदे बाबरी से शुरू होकर अहदे जहांगीरी तक वाक़ेयात पर मबनी है। कलम के पावेज़ः ख़त और पुराने फ़न की वजह से यह नुस्खा बेश कीमत है। कातिबे दरबार का नाम मालूम नहीं। ६ रबीउलअव्वल सन् १२६२ हिजरी की तारीख नम्बरे मौजदात पर पढ़ी जासकती है। सन् १२६३ हिजरी की मोहर नवाब वाज़िद अली शाह की मोहर से साबित है।



४४— नाम किताब : शरहे जामी
 लेखक : नेमत ख़ां 'आली' लखनवी
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : ग्रामर
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ६४
 साइज़ : सोलह/तेईस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३९७
 प्रथम पृष्ठ : बिस..... अल्कलमः लफ़ज़ वज़अ ब मानी मुफ़रद तरकीब केः अल्कलेमतो
 मुब्तादास्त व लफ़ज़न ख़बअ—रे—मुब्तिदा.....

विवरण : २४ शव्वाल १२१४ हिजरी बरोज़ जुमा को नेमत खां आली साकिन करीमगंज लखनऊ ने इस तशरीहे क्वाइद फ़ारसी ब मौसूम मज़हरे—तजल्लि याते रहमानी अज़दुल कमालाते ईज़दे सुबहानी वगैरहा अलक्वाब से नवाब अवध की ख़िदमत में पेश किया है। तीन नव्वाबीन की मोहरें सब्ब हैं। मैंने किताब का नाम शरहे जामी बहुत तलाश किया मगर मुझे नहीं मिला। इसके शुरू के सफ़हात ग़ायब हैं। मोहम्मद बख़्श मुसन्निफ़ का नहीं, अफ़सरे कुतुबख़ाना का नाम है।



४५— नाम किताब	: शरहे जामे जहाँ नुमा
लेखक	: शाह वजीहुद्दीन गुजराती
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: तसव्वुफ़े दीने इस्लाम
प्रकाशित—अप्रकाशित	: क़लमी
पृष्ठ	: ७२
साइज़	: बीस/तीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३९६
प्रथम पृष्ठ	: बिस..... हम्द बेहद व शुक्र बेहद सज़ा—ए—ज़ाते के: वह दतश मन्शा—ए—अहदि यतो व अहदियत शुद:

विवरण : यह किताब तसव्वुफ़ (सूफ़ीइज़्म) के बारे में है। जिस का नाम “जामे जहाँनुमा” है। यह उसके जुज़ १ की शरह है और फ़ारसी जुबान में है। इसके मुसन्निफ़ का नाम शाह वजीहुद्दीन गुजराती है। किताब बहुत बोसीद: है और खुशख़त नस्तालीक़ में जली ख़त में लिखी गयी है। नवाब अमजद अली शाह की ‘मुहर’ और १२६२ हिजरी पढ़े जा सकते हैं। इस किताब में मस्ल—ए—वहदतुल वजूद और मस्बल—ए—वहदतुश—शहूद से बहस की गयी है।



४६— नाम किताब	: शरहे जुलेखा
लेखक	: मुहम्मद आबिद खां
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: ‘मसनवी’ फ़ारसी शायरी की वियाख्या
प्रकाशित—अप्रकाशित	: अप्रकाशित
पृष्ठ	: १९६
साइज़	: साढ़े इक्कीस/बारह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३७४
प्रथम पृष्ठ	: रब्बे यस्सिर बिस्मिल्ला हिर—रहमा—निर—रहीम व तम्मत बिल खैर.....

विवरण : हाशिय—ए—जुलेखा बतारीख़ १० शव्वाल ११९१ हिजरी बरोज़ मंगल स्थान: लखनऊ मुहम्मद आबिद खां ने यह ‘शरह’ पहले रामपुर रियासत में पूर्ण की थी मगर जब लखनऊ से पज़ीराई अर्थात इनाम की उम्मीद बांधी तो इस ‘मुसव्वदे’ में से रियासत रामपुर को काट कर लखनऊ लिख दिया गया। अस्ल किताब जिसकी यह व्याख्या है फ़ारसी साहित्य की मशहूर मसनवी युसुफ़ जुलैखा है। जिसके लेखक मौलाना अब्दुल ग़दमान ‘जामी’ है।



४७— नाम किताब : शरहे मिरातुल हकाइक
 लेखक : मुहम्मद हमीदुल्लाह
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इस्लाम
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ६२
 साइज : बीस/तीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ७८४०४
 प्रथम पृष्ठ : बिस..... अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अरी कुलूबे ख्वासः वजूहे तजल्लियातिहि.....

विवरण : इस रिसाले के खात्मे पर मनदरजाजैल इबारत तहरीर है: तम्मत रिसालः अराअतुदकाइक फी शरहे मिरातुल हकाइक बिल खैरि वस्सआदते—११८१ हिजरी। हज़रत इमाम शाफई रज़ी० ने मस्अल—ए—तनासुख पर अरबी में एक रिसालः मिरातुल हकाइक लिखा था यह उसी की फ़ारसी शरह है। जिसे अराअतुद दकाइक के नाम से मो० हमीदुल्लाह ने किताबत किया है।



४८— नाम किताब : सवानहे दकन
 लेखक : मुनइम खां हम्दानी
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : इतिहास
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : २४४
 साइज : अट्टाइस/अट्टारह सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३५४
 प्रथम पृष्ठ : बिस०..... हम्दे दा वरी के: बूकलमूने अकालीमे सब्आ रगे

विवरण : ११९७ हिजरी में यह किताब सवानहे दकन मुनइम खां हम्दानी ने मुख्तलिफ़ तारीखों के माखज़ से इस्तेफ़ादा करके निहायत जामेअ अंदाज़ में तरतीब दी। इसमें मीर निज़ाम अली खां बहादुर नवाब दकन के सवानेह तहरीर किये गये हैं। नव्वाबीने अवध अज़ जुमला नसीरुद्दीन हैदर (सुलेमान जाह) अमजद अली शाह व वाजिद अली शाह के ज़ाती कुतुब खानों की इस पर मुहरे सब्त है। किताब का खत नस्तालीक़ और हालत ठीक है।



४९— नाम किताब : सिराजुल लुगत (हिस्सा दोयम)
 लेखक : सिरजुद्दीन अली खां 'आरजू'
 भाषा : फ़ारसी
 विषय : लुगत
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : २४२
 साइज : चौदह/इक्कीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३४५
 प्रथम पृष्ठ : बिस०..... अम्मा बाद, हम्दे वाजेह जमीअे नआतु सलातु बर अफसहु व

अफ—सलु मौजूदात

विवरण : नवाब अमजद अली शाह की इसपर मुहर सन्त है। ७ रबीउस—सानी १२२३ हिजरी को सिराजुल लुगत की यह जिल्द जिसके मुसन्निफ सिराजुद्दीन अली खां 'आरजू' हैं की यह नक़ल तमाम हुई इसमें लुगातो इस्तिलाहाते शोरा—ए—मुताख़्खरीन बयान की गयी है। किताब की हालत खस्तः है। जगह—जगह दीमक आलूदः है। मरम्मत की गयी है मगर काफी नहीं है।



५०— नाम किताब	: सिराजुल लुगात
लेखक	: सिराजुद्दीन अली खां 'आरजू'
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: लुगत
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: १८४
साइज़	: साढ़े तेरह/ छब्बीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३७५
प्रथम पृष्ठ	: रब्बेयस्सिर बिसमिल्ला.... वतम्मम बिलख़ैरि अम्मा बाद हम्द वाज़ेह जमीअे लुगातो सलात बर अफ़सहे मौजूदात

विवरण : यह सिराजुद्दीन अली खां 'आरजू' की सिराजुल लुगात की दूसरी जिल्द है। यह मीर तकी 'मीर' के सगे मामूँ और 'फने रीख़्तः' के उस्ताद भी हैं। इन्होंने खुद भी उर्दू व फ़ारसी में ग़ज़ले कहीं हैं। यह लुगत उन्ही की है। इसमें "इसतिलाहाते शोरा—ए—मुताख़्खरीन" मिस्ल फ़रहगे जहाँगीरी, सरवरी व बुरहाने कातेअ वगैरः से इस्तिफ़ादा करके दाखिले लुग—अते दोम किया गया है। इसका सने तहरीर ११६० हिजरी है। और इस किताब के इन्दराजात से पता चलता है कि इसको 'कोठीखास' में जमा किया गया था। क्योंकि इसमें लिखा है: आमद अज़ कोठीखास। सियाह रोशनाई से मुहर में १२२४ हिजरी की तारीख़ दर्ज है। यह कलमीनुस्खः काफी नायाब है। मगर किताब की हालत खस्तः है। तीन नवाबों की इसपर मुहरे हैं।



५१— नाम किताब	: सिराजुल लुगात (दोयम)
लेखक	: सिराजुद्दीन अली खां 'आरजू'
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: लुगत
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ३७०
साइज़	: तेरह/ बाईस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३९८
प्रथम पृष्ठ	: बिस०.... अम्मा बाद, हम्दे वाज़ेह जमीअे आफ़ातु सलातु बर अफ़सहु अफ—ज़ले मौजूदात

विवरण : यह सिराजुल लुगात की दूसरी जिल्द है। इसमें कहीं कहीं दीमक लगी है। बाकी की मुहरे वही हैं जैसे जैनुद्दीन अहमद खां की मुहर, सुलेमन जाह की मुहर, अमजद अली शाह की मुहर, सुलेमान जाह की

मुहर के अलावह सुलताने आलम वाजिद अली शाह की भी मुहर सब्त है। ४ रबीउल अव्वल १२६२ हिजरी में भी एक इन्दिराज दाखिले कुतुबखानः का है। मालूम होता है कि इसमें औराक कम हो गये हैं। क्योंकि सरवरक के हिसाब से २८७ औराक की दलील मौजूद है जिसके हिसाब से ५७४ सफ़हात होना चाहिए, यहां कुल १८५ औराक मौजूद है जिसके हिसाब से ३७० सफ़हात मौजूद हैं। सने तस्नीफ़ १०७० हिजरी तहरीर है।



५२— नाम किताब	: सिराजुल लुगात (तीसरा हिस्सा)
लेखक	: सिराजुद्दीन अली खां 'आरजू'
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: लुग—अ—ते फ़ारसी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ३२४
साइज़	: इक्कीस/साढ़े बारह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३४४
प्रथम पृष्ठ	: बिस० लिहमदुल्लाहे अला जिबरीलुल अबः व अस्ले अला अशरफुल अबिया व औलिया अम्मा बाद

विवरण : यह सिराजुल लुगात का तीसरा हिस्सा है। एक जगह हाशिये पर १४ रबीउल अव्वल १२३६ हिजरी की तारीख़ है। सफ़हः अव्वल पर ८ रबीउल अव्वल १२६२ मरकूम है। एक 'मुहरे' सियाह खुर्द, जैनुद्दीन अहमद खां की है। एक सुलेमान जाह की १२४४ हिजरी की। दूसरी अमजद अली शाह की है। इसमें औराक की जिल्द बंदी कहीं—कहीं ग़लत है जैसे बाबुल—या शुरू में है। और बाबुल—बा—आख़िर में, चूकि सफ़हात की निशाँ दिही नहीं की गयी इस वजह से यह ग़लती हुयी।



५३— नाम किताब	: सिंहासन बत्तीसी
लेखक	: फ़ज़ले हक
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: किस्सा/कहानी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: पाण्डुलिपी
पृष्ठ	: १५२
साइज़	: चौदह/तेईस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३६३
प्रथम पृष्ठ	: बिस० शुक्रे दर—दर गाह.....

विवरण : राजा विक्रमाजीत के वाक़ेआत व फसानाएं अजीबो गरीब को हिन्दी में "सिंहासन बत्तीसी" के नाम से जाना जाता है। इन्हीं वाक़ेआत की फ़ारसी भाषा में २७ रबी उलअव्वल १२३६ हिजरी को लिखकर, किताब का नाम सिंहासन बत्तीसी रखा! इस को मिर्जा अकबर अली अस्फ़हानी ने हाथ से लिखकर, फ़ज़ले हक ने फ़ारसी में अनुवाद करके, दीवान साहब लाला कालका प्रसाद सदर कोठी मकनपुर की ख़िदमत में पेश किया।



५४— नाम किताब	: सियरुल मुत—अ,—अख़्ख़रीन
लेखक	: गुलाम हुसैन
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: इतिहास
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ६८४
साइज़	: साढ़े तेरह/बीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३६५
प्रथम पृष्ठ	: बिस..... सिपास बे कियासु—सिताइश सरमदी असास, निसारे बारगाहे अजमतो जलाल

विवरण : गर्द: माह सह सफ़र सहशंब: ११९४ हिजरी में गुलाम हुसैन बिन हिदायतुल्लाह खां तबातबाई अल हसनी ने यह तारीख़ तहरीर फ़रमाई। इस में अहदे औरंगज़ेब आलमगीर के सूबेदार बराये गुजरात गाज़िउद्दीन खां और उनके हम असों की तारीख़ है। पुरानी और नायाब किताब है जो अपने ज़माने का एहाता करती है।

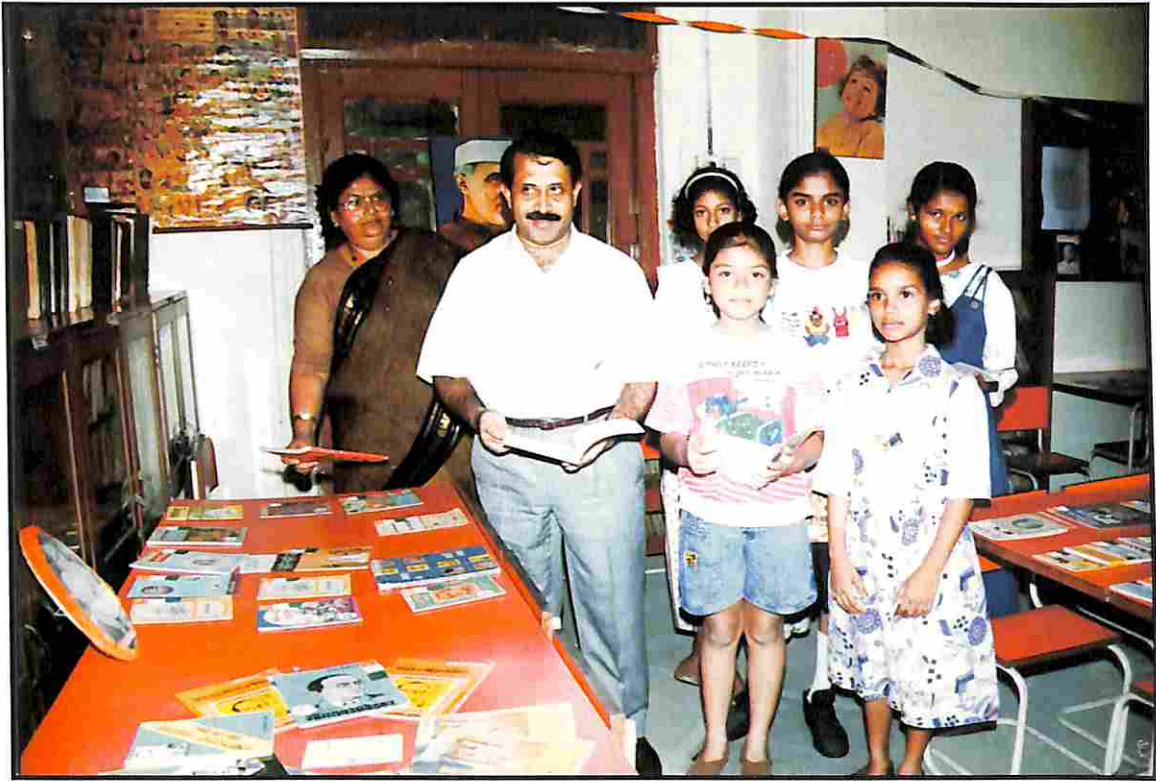


५५— नाम किताब	: हलिय्यतुल मुत्तकीन
लेखक	: अबदुस समद ख़ुरासानी व मौलाना आख़्ख़दुल अस्फ़हानी
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: हदीस
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ६४०
साइज़	: सतरह/छब्बीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३९४
प्रथम पृष्ठ	: बिस..... अल्हमदु लिल्लाहिललज़ी हलिय्य अबियाअल मुर सिलीन व अहसने हुलिय्यतुल मुत्तकीन व बुअसु

विवरण : हस्बुल फ़रमाइश मो० बिलाल अली खां साहब, मिर्जा अहमद कातिब ने इसको नक़ल किया। नक़ल करने के बाद यक़ुम जीकाद १२४७ हिजरी को इस की किताबत ख़त्म की। नवाबीने अवध की 'मुहर' १२५२ हिजरी की सब्त है। मो० बेग मुंशी ने मौजूदात में दाख़िल दफ़्तर की है। नवाब अमजद अली शाह की 'मुहर' सब्त है। यह किताब अस्नाए अश—अ—रिया यानी अहले—बैत हज़रात के अकाइद की है। जिसमें इमामैन के कौल नक़ल किये गये हैं।



५६— नाम किताब	: हुम्मायूँ नाय्या (मंज़ूम)
लेखक	: शाह पीर मोहम्मद
भाषा	: फ़ारसी
विषय	: शायरी (मस्नवी)



लखनऊ मंडल के तत्कालीन आयुक्त श्री देश दीपक वर्मा अमीरुद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी के बाल कक्ष में पुस्तक प्रदर्शनी के आयोजन के दौरान पुस्तकालय की लाइब्रेरियन नुसरत नाहीद तथा बच्चों के साथ।



तिब्बती भाषा में लिखित बौद्ध-साहित्य की एक अनमोल पांडुलिपि।

प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ५०८
साइज़	: तेईस/पन्द्रह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३४८
प्रथम पृष्ठ	: बिस..... विरद करद अज़ कुदरते किबरिया.....

विवरण : शैख पीर मोहम्मद खैर आबादी ने हुमायूँ नामा की मंजूम करके २ रबी उस सानी १२१७ को ब मुकाम फतेहपुर ब जमान—ए—शाह आलम तस्नीफ़ किया। यह शायरी की मशहूर सिन्फ़ मस्नवी की तर्ज़ पर तहरीर किया गया है। इसमें हुमायूँ बादशाह के वाक़ेआते तस्ख़ीरे मुल्क व तौसीफ़े ज़ाती बयान की गयी हैं तहरीर मामूली है कलम का ख़त मामूली है मगर अशआर से शायर की कादिरुल कलामी का एहसास होता है। किताब की मरम्मत अख़बारी कागज़ छपे हुये से की गयी है जो मुनासिब मालूम नहीं होती। जगह—जगह अशआर गाइब हैं। मिसरे टूटे हुये हैं किसी ने मिसरे लगाये हैं मगर मुकम्मल नहीं।



❧ उर्दू ❧

१- नाम किताब	: इन्द्र सभा
लेखक	: अमानत लखनवी
भाषा	: उर्दू
विषय	: मंजूम ड्रामा (शायरी)
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ६३
साइज	: साढ़े बीस/सौलह सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८००३
प्रथम पृष्ठ	: उनवान: आमद राजा इन्द्र की, बीच सभा के, सभा में दोस्तो इन्द्र की आमद आमद है। परी जमालों के अफसर की आमद आमद है।

विवरण : अमानत लखनवी अहदे वाजिद अली शाह के शायर हैं। उन्होंने महफिल साज—नवाब वाजिद अली शाह के लिये यह मंजूम ड्रामा ब जुबाने उर्दू तहरीर किया था, जो उस वक्त के उन मशहूर मंजूम ड्रामों में से एक है। जो नवाब वाजिद अली शाह के महफिल खाने में खेला जाता था। तारीखे तस्नीफ १२७१ हिजरी है।



२- नाम किताब	: कुल्लियाते जुरअत
लेखक	: जुरअत लखनवी
भाषा	: उर्दू
विषय	: शायरी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ११६०
साइज	: बीस/बत्तीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८००७
प्रथम पृष्ठ	: बिसमिल्ला हिर् हमा निरहीम, नालये मौजूँ से मिसरा आह का चस्पाँ हुवा। जोर यह पुर दर्द अपना मतलये दीवाँ हुवा।

विवरण : लखनऊ के 'जुरअत' शायर की हैसियत से बहुत मशहूर हैं। यह उन्ही का शायराना कलाम "कुल्लियात" (सम्पूर्ण) की शकल में मौजूद है। इसका पहला पन्ना तिलाई है। और खते तहरीर 'नस्तालीक' है। इस नुस्खे की कीमत और अहमियत इस कारण से भी बढ़ जाती है कि इस पर मिर्जा सआदत अली खाँ नाजिमे जंग की 'मुहर' है और इस पर १२५९ हिजरी की तारीख पड़ी है।



३- नाम किताब	: दीवाने सौदा
लेखक	: मिर्जा मो० रफी "सौदा"
भाषा	: उर्दू
विषय	: शायरी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: कलमी
पृष्ठ	: ३९६

साइज़	: साढ़े तैंतीस/बीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८००८
प्रथम पृष्ठ	: रब्बे यस्सिर बिस्मिल्लाहिर्रहमा निर्रहीम व तम्मम बिल खैरि, दीवान मिर्जा रफी 'सौदा'

विवरण : बादशाह गाज़िउद्दीन हैदर ने १२४१ हिजरी में पांच सौ रुपये इसके कातिब को इनाम दिये: एक शेर:—

अजब नादां हैं वह, जिन को है उजबे ताजे सुल्तानी।
फलक बाले हुमा को पल में सौपे है मगस रानी॥



४— नाम किताब	: बयाज़, उर्दू फ़ारसी ग़ज़लियात
लेखक	: अहमद हसन खां
भाषा	: फ़ारसी, उर्दू (मिली जुली)
विषय	: शायरी
प्रकाशित—अप्रकाशित	: क़लमी
पृष्ठ	: ३२८
साइज़	: साढ़े सोलह/नौ सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३३७
प्रथम पृष्ठ	: रहते हैं शाद हम तो निहायत अदम के बीच। इस जिन्दगी ने लाके फ़साया है गम के बीच।

विवरण : यह “बयाज़” उर्दू, फ़ारसी ग़ज़लियात पर मबनी है। निहायत ही अच्छा इन्तेखाब है और ख़ते नस्तालीक़ भी उम्दा है, कागज़ विलायती है। हाशियः तिलाई है। इस ‘बयाज़’ को १२५९ हिजरी २७ ज़ीकाद बरोज़ जुमा को अहमद हसन खां बहादुर ने अपने भाई इरतिज़ा हुसैन को इनायत फ़रमाया।



५— नाम किताब	: श्रीमद् भागवति
लेखक	: भोपत
भाषा	: अवधी, कहीं—कहीं ब्रज भाषा, तहरीर ‘उर्दू’
विषय	: कविता की सूरत में, धार्मिक ग्रंथ
प्रकाशित—अप्रकाशित	: अप्रकाशित
पृष्ठ	: ४८०
साइज़	: साढ़े बत्तीस/साढ़े बीस सेन्टीमीटर
एक्सेशन नं०	: ४८३३९
प्रथम पृष्ठ	: श्री गणेश नमः समरुन ओ निरंजन देवा। जेह को देव न जानत मेवा।

विवरण : यदि यह कहा जाए कि ‘पदों’ की सूरत में कविता के द्वारा श्री भागवती के बारे में फ़ारसी रस्मुल ख़त में (जो उस ज़माने में प्रचलित था) ब्रज भाषा और अवधी कलाम की संरचना उन लोगों के लिए की गयी है जो फ़ारसी और उर्दू रस्मुल ख़त से वाकिफ़ है। ४८० पन्नों पर फैले हुये इस ग्रंथ में, आख़री दो पन्नों पर लेखक को उर्दू भाषा में मुबारकबाद दी गयी है। २४ जुलाई १८४४ ई० को यह ग्रंथ पूर्ण हुवा।



६— नाम किताब : श्री भागवत् महा पुराण
 लेखक : सूरदास
 भाषा : 'ब्रज' (रस्मुल खत उर्दू)
 विषय : हिन्दु धर्म (पद)
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी (अप्रकाशित)
 पृष्ठ : २३४
 साइज : चौबीस/सत्तरह सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३२९
 प्रथम पृष्ठ : हर की हाथ निमाह। दसम स्कंदी श्री भागवत् महा पुराण। 'सूरदास' करत राग सारंग व बलावल।

विवरण : यह पुस्तक कवि 'सूरदास' जी ने अस्ल भाषा ब्रज में लिखी है जो पद की सूरत में है। इसी पुस्तक को जिसका नाम श्री भागवत महापुराण है श्री बंसीधर जी ने अपनी मुहर लगाकर फ़ारसी रस्मुत खत में तहरीर किया है। इसका खते तहरीर उस ज़माने के अनुसार नस्तालीक़ है। पुस्तक लिखने का समय २७ जुलाई १८४३ ई० है।



७— नाम किताब : हमल—ए—हैदरी
 लेखक : मुहम्मद रफी बाजिल
 भाषा : उर्दू
 विषय : तारीखे इस्लाम
 प्रकाशित—अप्रकाशित : कलमी
 पृष्ठ : ७८६
 साइज : चौदाह/ बीस सेन्टीमीटर
 एक्सेशन नं० : ४८३७३
 प्रथम पृष्ठ : रोजे दर खिदमते हज़रत पैग़म्बर मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम.....

विवरण : काफी तलाश किया मगर किताब का नाम मुसनिफ़ का नाम, या कातिब का नाम नहीं मिला क्योंकि फ़हरिस्ते कुतुब में हमल—ए—हैदरी के नाम से दर्ज है इसलिए मैंने वही नाम लिख दिया मगर ब्रेकिट में 'नामालूम' भी दर्ज कर दिया है। किताब का मौजूअ जगे सफ़फ़ैन में हज़रत अली और हज़रत अमीर मुआविया के दरमियान जो मारका आराई पेश आई और फ़रीक़ैन में कौन हक़ पर था यही इस किताब में दर्शाया गया है। १२४४ हिजरी की मुहर सुलैमान जाह बहादुर की और १२६२ हिजरी की मोहर नवाब अमजद अली शाह की है।



یکے از سلسلہ مطبوعات امیر الدولہ پبلک لائبریری لکھنؤ، یوپی

امیر الدولہ پبلک لائبریری لکھنؤ



فہرست مخطوطات	:	کتاب کا نام
ڈاکٹر محمد شفیق مراد آبادی	:	مدیر
ڈائمنڈ پرنٹرز دہلی	:	مطبع
نصرت ناہید لائبریرین و سکریٹری	:	ناشر
امیر الدولہ پبلک لائبریری، قیصر باغ لکھنؤ، یوپی	:	تعداد کتب
۵۰۰	:	سال اشاعت
جنوری ۲۰۰۰ء	:	قیمت
100/= (سورہ پے)	:	

فہرست مخطوطات

عربی

صفحہ نمبر	نام کتاب	نمبر شمار
۱	آیات بینات	۱
۱	الشرح الملمعہ	۲
۲	برہان اسطرلاب	۳
۲	تہذیب در علم منطق	۴
۳	رسالة الدقائق فی مراة المحقق	۵
۳	صحیفہ سجادیہ	۶
۴	کتاب الطہارات	۷
۴	نقیسی	۸

فارسی

۵	اقبال نامہ جہانگیری	۱
۵	احوال فتح اناوہ	۲
۵	الرسالہ فی معرفتہ الاسطرلاب	۳
۶	بیاض غزلیات	۴
۶	تاریخ الفی	۵
۷	تاریخ الفی دفتر دوم	۶
۷	تاریخ عالم آرا (جلد اول)	۷
۷	تاریخ سعادت	۸
۸	تاریخ سلطان محمد قطب شاہ	۹
۸	تاریخ فرشتہ	۱۰
۹	تحفۃ الاحباب فی بیان الانساب	۱۱
۹	تحفۃ النادرین	۱۲
۱۰	تحفۃ المؤمنین	۱۳

۱۰	تذکرۃ الدولت شاہی (تذکرۃ شعرائے فارس)	۱۳
۱۱	تواریخ قدھار	۱۵
۱۱	توزوک تیموری	۱۶
۱۲	تفسیر حسینی	۱۷
۱۲	جوابات اعتراضات آرزو	۱۸
۱۳	حلیۃ المتقین	۱۹
۱۳	خلاصۃ التواریخ	۲۰
۱۳	دیوان ظہوری	۲۱
۱۴	رسالہ انتظام سلطنت	۲۲
۱۴	رسالہ صفات السیف	۲۳
۱۵	زبدۃ التواریخ	۲۴
۱۵	زبدۃ التواریخ	۲۵
۱۶	سوانح دکن	۲۶
۱۶	سراج اللغات	۲۷
۱۷	سراج اللغات (حصہ سوم)	۲۸
۱۷	سراج اللغات (جلد دوم)	۲۹
۱۸	سراج اللغات	۳۰
۱۸	سنگھاسن بیسی	۳۱
۱۹	سیر المتاخرین	۳۲
۱۹	شرح زینجیا	۳۳
۲۰	شرح جامی	۳۴
۲۰	شرح جام جہاں نما	۳۵
۲۱	شرح مرآۃ الحقائق	۳۶
۲۱	طوطی نامہ	۳۷
۲۲	غرائب الغت	۳۸
۲۲	غزلیات شوکت	۳۹
۲۲	فرہنگ مرکبات و کنایات مع لغات	۴۰
۲۳	فرہنگ بہادر دانش	۴۱
۲۴	کیمائے سعادت	۴۲

۲۴	تاریخ مغل	۳۳
۲۵	کلمات جهانگیری، رقعات عالمگیر، سخنان ارسطاطالس	۳۴
۲۵	لغات طب	۳۵
۲۵	لغت فارسی	۳۶
۲۶	منتخب التاريخ	۳۷
۲۶	منتخب التواريخ (جلد دوم)	۳۸
۲۷	منتخب اللغات شاجہانی	۳۹
۲۷	مثنوی شور عشق	۵۰
۲۸	مثنوی مولانا روم (حصہ اول، دوم، سوم)	۵۱
۲۸	مجمع الفرس سروری	۵۲
۲۹	میزان الحکمت	۵۳
۲۹	تل و دمن (منظوم)	۵۴
۳۰	واقعات بابری	۵۵
۳۰	ہمایوں نامہ (منظوم)	۵۶

اردو

۳۱	اندر سجا	۱
۳۱	”بیاض“ اردو، فارسی غزلیات	۲
۳۲	حملہ حیدری	۳
۳۲	دیوان سودا	۴
۳۳	سری مت بہا گوتی	۵
۳۳	سری بھاگوت مہاپوران	۶
۳۵	کلیات جرأت	۷



پیش گفتار

میرے لئے یہ نہایت خوشی کا مقام ہے کہ امیر الدولہ پبلک لائبریری کی طرف سے عوام اور محقق حضرات کے لئے مخطوطات کی ایک فہرست شائع کی جا رہی ہے جسے وہ اپنے موضوعات کے مطابق کام میں لاسکیں گے، چاہے وہ ان مخطوطات یا ان کے موضوعات پر کوئی مقالہ تحریر فرمائیں یا مجسم کتاب یا کوئی تبصرہ، یہ فہرست مخطوطات اُن کو ہمیشہ کسی نہ کسی حد تک حوالہ جات کا کام سرانجام دے گی۔ یوں تو یہ ان مخطوطات کی فہرست ہے جو امیر الدولہ پبلک لائبریری کے شعبہ مخطوطات میں محفوظ ہیں مگر اس فہرست میں ہر مخطوطہ سے متعلق دس سوالات قائم کئے گئے ہیں اور پھر ہر سوال کے تحت اس کا تسلی بخش اور حتمی جواب دیا گیا ہے۔ یہ کوئی تن آسانی کا کام نہ تھا۔ ۱۷۱ عدد، مخطوطات کو ایک ایک کر کے بہ نظر غائر مطالعہ کیا گیا اور تب جا کر یہ فہرست مخطوطات مرتب ہو سکی۔

نہایت ہی ادب و احترام سے عرض کر رہی ہوں کہ میں نے مختلف حضرات کو اس کام کو انجام دینے کے مواقع فراہم کئے مگر انہوں نے ایک دو دن کام کر کے راہ فرار اختیار کرنے میں ہی اپنی عافیت سمجھی، ہاں چلتے چلتے اُن لوگوں نے یہ ضرور ارشاد فرمایا کہ: نئی کتاب لکھنا یا کسی بھی کتاب کا ترجمہ کرنا زیادہ آسان ہے اور منافع بخش بھی بہ نسبت اس جاں گسل خدمت کے، اس کے لئے ہم ایک عمر اور لکھو الائیں تب آپ کی خدمت میں حاضر ہو جائیں گے۔

یہ جملہ معترضہ نہیں بلکہ حقیقت ہے کہ آج کے زمانے میں، عربی، فارسی اور اردو پر مکمل دسترس رکھنے والے باصلاحیت افراد کا قحط ہے۔ یہ کام قدرت الہی کی طرف سے ڈاکٹر، صوفی، محمد شفیق صاحب مراد آبادی مدظلہ العالی کے ہاتھوں انجام پذیر ہونا تھا، چنانچہ ہو اور خوب ہوا، صوفی صاحب واقعی عملی آدمی ہیں، انہوں نے نہایت خاموشی اور جاں فشانی کے ساتھ یہ خدمت انجام دی اور اس لئے انجام دی تاکہ خود ہم اور ہمارے ساتھ ہماری ہونہار نسل اور آنے والی نسل بھی اس سے استفادہ حاصل کرتی رہے۔ میں اپنے ہر دل عزیز کوشش کی طرف سے اور خود اپنی طرف سے بھی اُن کا شکر یہ ادا کرتی ہوں۔

یہ مخطوطات جن کی فہرست پیش نظر ہے، تین زبانوں پر مشتمل ہیں: (۱) عربی (۲) فارسی (۳) اردو۔ تینوں زبانوں کے طے جملے موضوعات مخطوطات مختصر ۱۱ اس طرح ہیں علم ہیئت، علم نجوم، علم ریاضی، علم کیمیا، علم تاریخ، علم سوانح علم مذہب، علم مناظرہ، علم منطق، علم فلسفہ، علم موسیقی، علم کلام، علم فقہ، علم معاشیات، علم لغات، علم تنقید، علم عملیات، علم طب، علم قیافہ، علم رمل، علم جفر، علم خود شناسی، علم تصوف، علم عرفان و آگہی، اس کے علاوہ علم شاعری، اور علم انشاء وغیرہ۔

اس کام کی افادیت و اہمیت اس وجہ سے بھی ہے کہ یہ مخطوطات نہایت قدیم ہیں۔ حقیقی اور نادر نسخہ جات بھی اس لائبریری میں موجود ہیں اس کے علاوہ ۲۸۵ سال پہلے کا ایک مخطوطہ تو نایاب و بیش قیمت ہے، ایک بات یہ بھی عرض کر دوں کہ جن مخطوطات پر شہنشاہوں، بادشاہوں، سلاطین، نوابین، شہزادگان، ولی عہدوں، مہاراجوں، راجاؤں، جاگیرداروں، اور تعلقہ داروں کی مہریں ثبت ہیں، وہ نمبر موجودات اور تاریخ ہائے وصولیابی کی مہریں ہیں، اُن سے مخطوطات کی قدمت کا اندازہ نہیں لگایا جاسکتا۔ جب کہ کہیں کہیں ایسا بھی ہے کہ کسی افسر کتب خانہ یا کتب خانے کے منشی نے اپنے قلم سے مخطوطہ کا نام تحریر کر دیا ہے جبکہ وہ نام مخطوطہ کا نام نہیں ہے اور

اس سے یا اُن سے بھی اغلاط سرزد ہوئی ہیں۔ لہذا یہ بات پیش نظر رکھنی ہوگی کیونکہ مخطوطہ کا سن تحریر کچھ اور ہے اور وصولی مخطوطہ کے اندراج کی تاریخ کچھ اور۔ لہذا مخطوطہ کی اہمیت کا اندازہ اس سے لگانا چاہئے کہ وہ کون سے زمانے میں تحریر کیا گیا اور کس موضوع پر تحریر کیا گیا۔

اب میں صدق دل سے، سابق کمشنر لکھنؤ محترم ازن کمار مصر صاحب کی مساعی جلیلہ کا شکریہ ادا کرنا بھی اپنا فرض منصبی سمجھتی ہوں جن کا مرحلہ وار تعاون میرے ساتھ ہمیشہ رہا، جب جب بھی میں نے حکومت ہند سے مراسلت کی تو انھوں نے نہایت خندہ پیشانی سے میرا ساتھ دیا اور میری ہمت افزائی فرمائی، تب کہیں جا کر حکومت ہند کی طرف سے مخطوطات پر کیسائی عمل کرنے کے لئے، تحفظ مخطوطات کے لئے اور اشاعت مخطوطات کے لئے ایک مخصوص رقم منظور و فراہم ہوئی جس کے سبب یہ کارِ لائقہ انجام پذیر ہوا ہمارے موجودہ کمشنر لکھنؤ محترم سوربھ چندر صاحب بھی نہایت درجہ تعمیر نقطہ نظر رکھنے والے، ہوش مند، کارساز اور لائبریری کے لئے مفید ثابت ہو رہے ہیں۔ میں اُن کی بھی حتی المقدور شکر گزار ہوں۔

نصرت ناہید

لائبریرین و سکرٹری

امیر الدولہ پبلک لائبریری، قیصر باغ، لکھنؤ، یوپی بھارت

مورخہ ۷ جنوری ۲۰۰۰ء

عربی

- (۱) نام کتاب : آیات بینات
 مصنف : نامعلوم
 زبان : عربی
 فن : فن الموعظ
 مطبوعہ / قلمی : قلمی
 صفحات : ۵۷
 سائز : ساڑھے اُنٹیس x بیس سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۴۰۲
 صفحہ اول : عنوان: آیات بینات و عظات طیبات

الاولی حکم نظریۃ بینة او مبنیۃ والاخری حکم.....

جائزہ : یہ رسالہ جس کا نام جلد بندی میں آیات بینات شائع ہو کر آیا ہے دراصل کتاب کا نام نہیں بلکہ عنوان ہے۔ مکمل عنوان اس طرح ہے: آیات بینات و عظات طیبات۔ یہ کتاب موعظ کے ۱۰۰ عنوانات پر مبنی ہے، جس کی فہرست اس میں دی گئی ہے مگر اس کے موعظ حسنہ عنوانات کے مطابق موجود نہیں، ایک بات یہ کہ اس کتاب کا نام موجود نہیں کیونکہ صفحات شروع میں ہی نہیں، جس میں مصنف کا نام اور کتاب کا نام ہوتا۔ یہ مذہبی کتاب ہوتے ہوئے بھی اس میں بسم اللہ الرحمن الرحیم سے آغاز نہیں، تو دلیل یہ قائم ہوئی کہ آغاز کے صفحات جس میں بسم اللہ الرحمن الرحیم سے کتاب شروع کی گئی تھی وہ غائب ہیں۔ پھر جلد بندی میں بھی غلطی کی گئی ہے موجودہ صفحات میں ایک صفحہ کے بعد چھ نمبر کا صفحہ آجاتا ہے۔ ایسا لگتا ہے کہ کسی امیر کی فرمائش پر کسی بہترین کاتب نے مختلف کتابوں سے اخذ کر کے یہ رسالہ تیار کیا ہے۔ عملیات بھی مذکور ہیں، ایک مہر ملک امیر الدولہ خادم حسین خاں بہادر جنگ کی ہے۔



- (۲) نام کتاب : الشرحُ اللّمعة
 مصنف : زین الدین العالی
 زبان : عربی
 فن : تشریح و تفسیر
 مطبوعہ / قلمی : قلمی
 صفحات : ۲۰۷
 سائز : ساڑھے بیس x ۱۲ سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۴۳

صفحہ اول : بسم اللہ الرحمن الرحیم. بعد حمد رب العالمین و صلی اللہ علی خیر خلقہ.....
 جائزہ : "اللمعة" عربی کی مشہور کتاب، جس کا سنہ تصنیف اس کتاب سے معلوم نہیں ہو سکا اور نہ مصنف کا نام اس سے واضح ہو سکا۔ اس کے علاوہ شارح اللمعة کا نام تو واضح ہے مگر اس کا سال تصنیف کہیں نہیں ملا۔ اس شرح میں اسلام کے ارکان، عبادات اور اس سے متعلق اصول و قواعد و اصطلاحات سے روشناس کیا گیا ہے، کاتب نے یہ نسخہ نہایت جلدی میں نقل کیا ہے اس وجہ سے خط خوشخط اور مقبول نظر بھی نہیں ہے۔ قلمی مسودہ ضرور ہے مگر کسی قلمی نسخہ سے نقل کیا گیا ہے، جس کا حوالہ نہیں ہے۔ کتاب نامکمل، بوسیدہ، مرمت شدہ، جگہ جگہ مطالب و عنوانات و پیرا گراف پر کاغذ چسپاں، صفحات غائب، اس کتاب کے قدیم ہونے

میں کچھ شک نہیں مگر اس پر کسی نواب یا جاگیردار یا ان کے کسی کتب خانہ کی مہر ثبت نہیں ہے۔

(۳)	نام کتاب :	برهان الأسطرلاب
	مصنف :	ابو حامد بن محمد بن الحسين الصقانی
	زبان :	عربی
	فن :	علم ہیئت (ASTRONOMY)
	مطبوعہ / قلمی :	قلمی، خط نستعلیق، خفی
	صفحات :	۴۹
	سائز :	ساڑھے انیس x گیارہ سینٹی میٹر
	ایکسیشن نمبر :	۴۸۳۹۳
	صفحہ اول :	رب يسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخير. كتاب في كيفيته تسطيح الكرة على

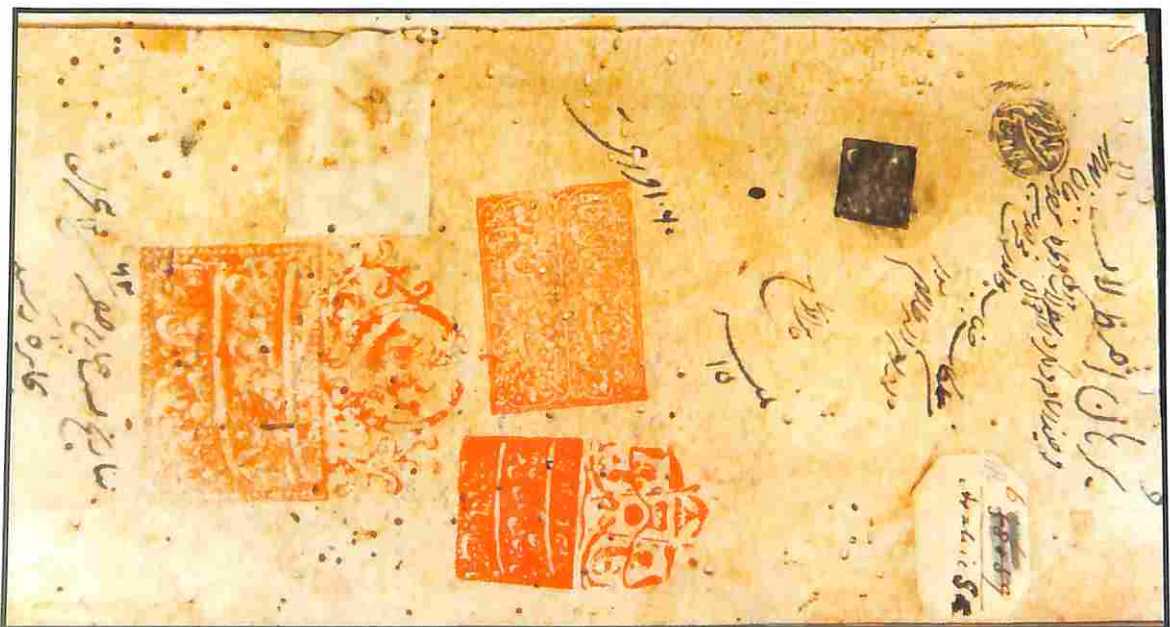
سطح الاسطرلاب على ان تسكل فيه نقطه وخطوط مستقيمة ودوائر
جائزہ : دہلی ۱۳۳۸ھ ماہ رجب کی تاریخ کتاب کے آخری صفحہ پر مندرج ہے، حاشیہ پر مقررہ محررہ تاریخ، مرمت کتاب کی وجہ سے
چھپ گئی ہے جناب فخر الدین احمد خاں کے والد عبد الرحیم خاں کی اس پر مہر ثبت ہے جس پر ۱۱۹۹ ہجری تحریر ہے، اس پر فخر الدین احمد خاں کی
بھی مہر ثبت ہے جس میں ۱۲۰۰ ہجری تحریر ہے۔ بعدہ، اس کے نوابین کی مہریں ہیں۔ ۱۲۴۴ ہجری میں سلیمان جاہ کی، ۳۴ صفر
۱۲۶۲ ہجری میں سلطان امجد علی شاہ کی، ۱۲۶۴ ہجری میں واجد علی شاہ سلطان عالم کی مہر ثبت ہے۔
اس میں فن ہیئت (ASTRONOMY) کے دوائر، خطوط، نقطے وغیرہ اور ہیئت کی اصطلاحات سے بحث کی گئی ہے، اور
خط و شکل کے نمونے بھی دئے گئے ہیں۔

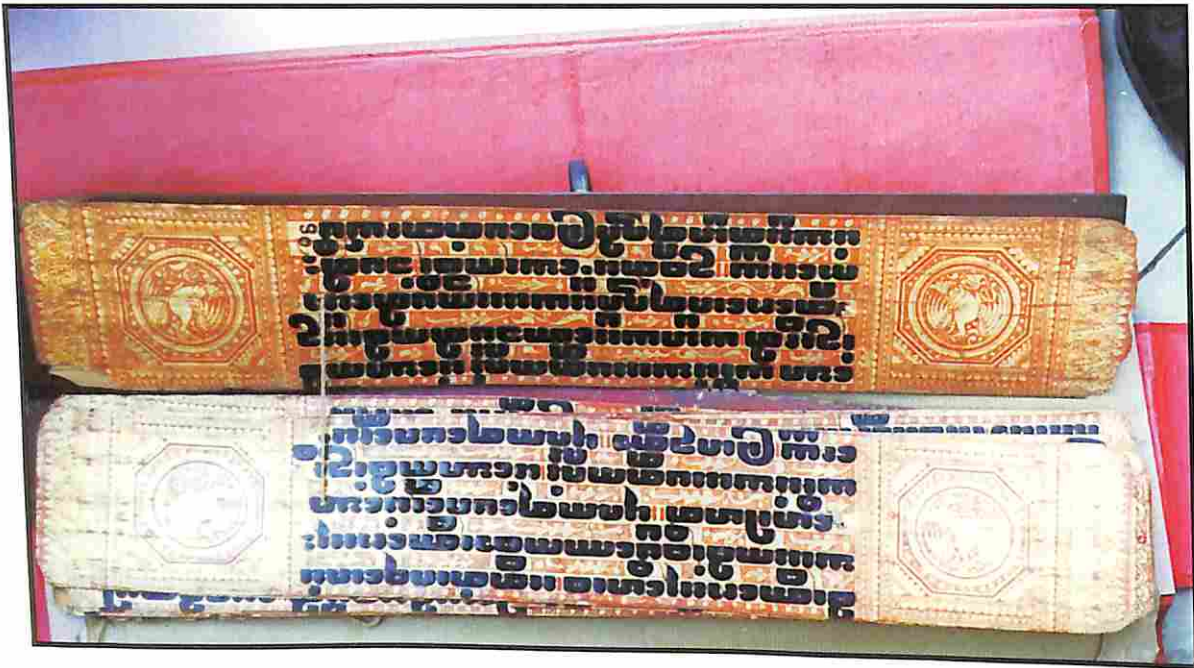


(۴)	نام کتاب :	تہذیب در علم منطق
	مصنف :	مولوی عبد الباسط
	زبان :	عربی
	فن :	منطق
	مطبوعہ / قلمی :	قلمی
	صفحات :	۱۰۹
	سائز :	ساڑھے چودہ x تیس سینٹی میٹر
	ایکسیشن نمبر :	۴۸۳۹۲
	صفحہ اول :	بسم الله الرحمن الرحيم. الحمد لله الذي هدانا لهذا سواء الطريق وجعلنا التوفيق.....

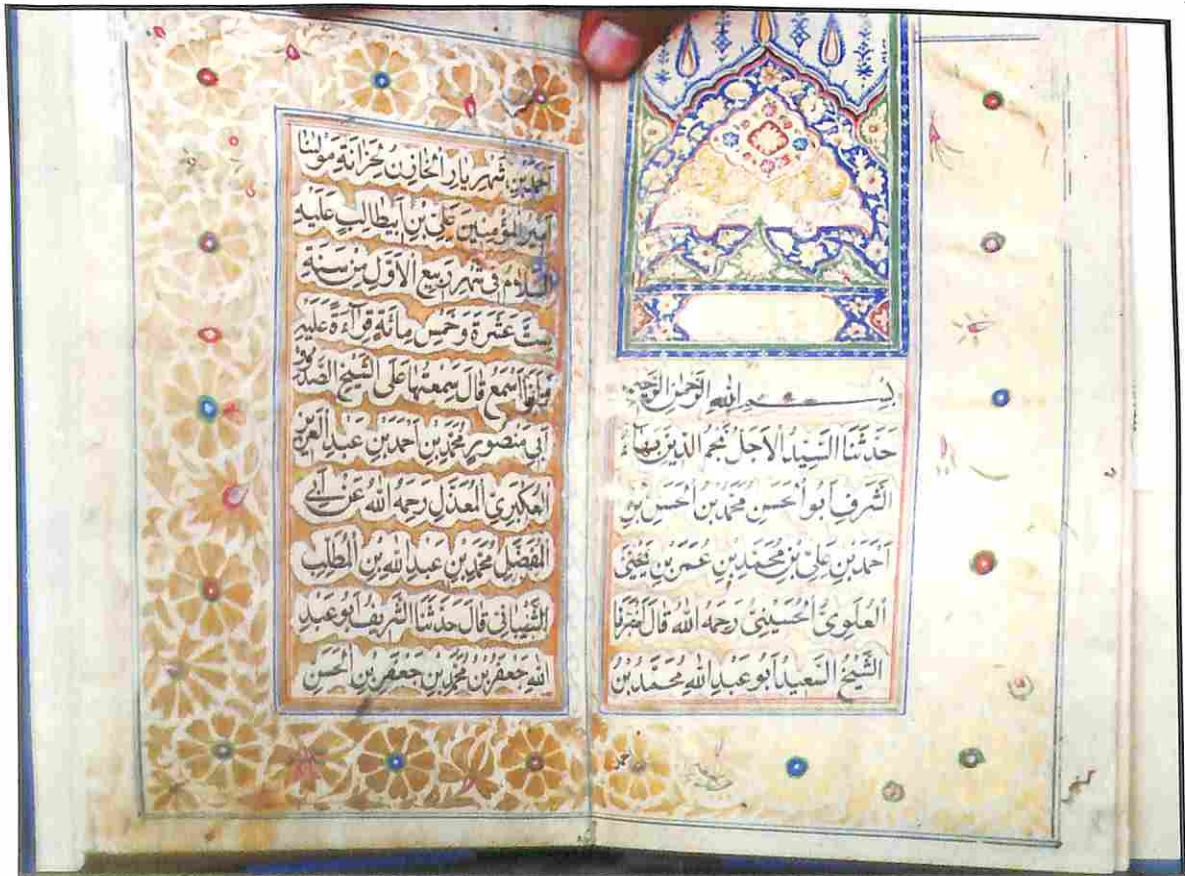
جائزہ : ۹ صفحات پر کتاب کا مقدمہ درج ہے جس میں عنوانات اور باب الکتب قائم کئے گئے ہیں ۱۰۰ صفحے سے اصل کتاب
شروع ہوتی ہے جو ۱۰۰ صفحات پر پھیلی ہوئی ہے۔ گویا کتاب کے کل صفحات ۱۰۹ ہیں، یہ دین اسلام کے فلسفہ و منطق کے فن پر ہے۔
اس کتاب کی تدوین اصلاً تو ۱۷۴۳ھ درج ہے مگر صاحب تصنیف مولوی عبد الباسط کی اس منطق سے متعلق کتاب کو
۲۳۳ رجب الثانی ۱۲۳۴ ہجری کو متحد و بخش کاتب نے اس قلمی نسخہ کو کتابت کیا ہے۔ اور کتاب کے شروع میں مولوی عبد الباسط ابن
رستم علی ابن علی اصغر کو زبدا الاولاد القطب الربانی المحبوب السجانی مجدد الف الثانی قدس الله سرہ سرہندی
سے منسوب کیا ہے۔

علماء منطق کے لئے سود مند ہے، عربی کے طلباء کے لئے ایک خاص مضمون منطق ہوتا ہے۔ اس میں رہبر و معاون ہے۔





پالی زبان میں ایک قدیم مخطوطہ



صحیفہ سجادیہ کا پہلا اور دوسرا صفحہ (مخطوطہ) ۱۲۷۴ھ

(۵) نام کتاب : رسالۃ الدقائق فی مرآة الحقائق

مصنف : نامعلوم

زبان : عربی

فن : حدیث

مطبوعہ / قلمی : قلمی

صفحات : ۱۴۱

سائز : چوبیس x ساڑھے تیرہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۶۱

صفحہ اول : علی ذلک مارواه احمد بن محمد بن علی بن الحکم عن ابی ایوب الخزار عن محمد بن مسلم.....
جائزہ : اس کتاب کا نام جو مذکور ہوا ہے۔ وہ آغازیہ صفحات سے لیا گیا ہے۔ مگر یہ صفحات کتاب میں موجود نہیں ہیں۔ آخر کے صفحات بھی غائب ہیں۔ خط اتنا خوشخط ہے کہ لاجواب کہا جاسکتا ہے۔ اس میں مسائل شرعیہ کے عنوانات قائم کر کے، احادیث رسول اکرم ﷺ بیان فرمائی گئی ہیں۔ منقول کرنے والے صحابہ گرام ہیں۔ اس کتاب کے آخر میں جو مہر س ثبت ہیں وہ سلیمان جاہ کی اور اس پر تاریخ ۴۲۴۴ ہجری کی اور واحد علی شاہ سلطان عالم کی اور اس پر ۴۲۶۳ ہجری کی مگر اس پر ایک تحریر ۴۱۶۲ ہجری کی بھی تحریر ہے جس میں لکھا ہے کہ نور چشمی ابرار خاں مرید احمد علی نے بحضور فقیر از معرفت، حقائق آگاہ، میاں سید شہاب الدین جوہر خورداری..... خرید نمو۔ بہر حال یہ اپنے قدیم ہونے کی بنا پر اور موضوعات کی وجہ سے نہایت وقیع اور اہم کتاب ہے، مگر نامکمل ہے۔



(۶) نام کتاب : صحیفہ سجادیہ

مصنف : مرزا محمد کاظم (مؤلف)

زبان : عربی

فن : وظائف

مطبوعہ / قلمی : قلمی

صفحات : ۴۱۸

سائز : ۱۳ x ۲۱ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۴۷

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم حدثنا السيد الاجل نجم الدين بهاء والشرف ابو الحسن.....
جائزہ : یہ مجموعہ وظائف جسے صحیفہ سجادیہ کا نام دیا گیا ہے اور جس کی تالیف مرزا محمد کاظم صاحب نے کی ہے نہایت عمدہ خط میں تحریر ہے۔ اور عربی کا خط تحریر بھی نہایت وقیع اور معیاری ہے۔ اسے نواب سید محمد مہدی علی خاں صاحب کی ذاتی تلاوت کے لئے تحریر کیا گیا جس کی اختتام تحریر کی تاریخ ۱۳ رمضان ۱۲۷۴ ہجری ہے۔ مگر سید محمد مہدی خاں بہادر کی مہر پر ۱۲۷۵ ہجری تحریر ہے۔ ممکن ہے ان کی مہر جب بنی ہوگی تو اس وقت ۱۲۷۵ ہجری ہو۔



(۷) نام کتاب : کتاب الطہارت

مصنف : الحسن البصری

زبان : عربی

فن : فقہ (حنفی)

مطبوعہ / قلمی : قلمی

صفحات : ۳۲۲

سائز : تیس x اکیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۳۳

رب یسر بسم اللہ الرحمن الرحیم وتمم بالخیر۔

صفحہ اول : الحمد لله الذي انا برفته منار الإسلام، هداية إلى الطريق الرشاد.....

جائزہ : کسی نواب کی اس پر مہر نہیں، کتاب کے آخری صفحات غائب ہیں، نہایت بوسیدہ نسخہ ہے۔ دیکھ زدہ ہے اور ایک بار بٹریپر سے اس کی مرمت ہو چکی ہے۔ دین اسلام میں جو مسائل از روئے شرع متین پیش آتے ہیں وہ حنفی عقائد کے مطابق تفصیل و شرح سے عربی میں سمجھائے گئے ہیں اور حواشی میں حوالہ جات دیئے گئے ہیں۔ قیمتی معلومات درج ہیں مگر کتاب خستہ ہو چکی ہے۔ اور جلد پر اس کتاب کا نام غلط چھپا ہوا ہے۔



(۸) نام کتاب : نفیسی

مصنف : حکیم محمد ابوالحسن

زبان : عربی

فن : طب

مطبوعہ / قلمی : قلمی

صفحات : ۷۲۰

سائز : ساڑھے پندرہ x پچیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۵۲

رب یسر بسم اللہ الرحمن الرحیم وتمم بالخیر۔

صفحہ اول : توجهنا إلى جنابك الاقدس مامين الله يجمع الامور وتعرضنا بشميم لطفك المقدس ...

جائزہ : نہایت اعلیٰ درجہ کا نسخہ ہے۔ لوح اور اس کے ساتھ کا صفحہ طلائی زینت سے آراستہ ہے۔ خط عربی اس قدر عمدہ اور اعلیٰ پایہ کا ہے کہ تعریف و توصیف سے بالا ہے۔ ابھی تک اتنا عمدہ اور مرصع خط میرے سامنے فہرست کتب میں نہیں آیا ہے۔ طب کے فن پر ”نفیسی“، بہترین اور فقید المثال کتاب ہے۔ اس نسخہ پر کسی نواب کی مہر ثبت نہیں ہے۔



فارسی

- (۱) نام کتاب : اقبال نامہ جہانگیری
 مصنف : میر عبدالطیف قزوینی
 زبان : فارسی
 فن : تاریخ
 مطبوعہ / قلمی : قلمی (خط شکستہ)
 صفحات : ۳۴۰
 سائز : ساڑھے بارہ x ساڑھے اٹھارہ سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۷۸
 صفحہ اول : شہریار خواہی بہار جاودا نے با مرد عالم از فروغ.....
 جائزہ : شہنشاہ جلال الدین محمد اکبر کے ذریعہ جو فتوحات ہوئیں ان کا سلسلہ سورت اور کھمبات تک پہنچا، یہ مہمات کیسے سر ہوئیں۔ یہ اس تاریخ اقبال نامہ جہانگیری کا موضوع ہے، بہترین خط شکستہ کی تحریر ہے۔ یہ کتاب نواب سلیمان جاہ اور نواب امجد علی شاہ کے ذاتی کتب خانوں کی زینت رہ چکی ہے۔ ان کی مہریں ثبت ہیں۔ بہت پرانا نسخہ ہے، اور اکبر کے عہد کا ہے۔



- (۲) نام کتاب : احوال فتح اٹاوہ
 مصنف : محمد فیض بخش ابن غلام سرور ساکن قصبہ کاکوری (مولف)
 زبان : فارسی
 فن : تاریخ
 مطبوعہ / قلمی : قلمی
 صفحات : ۲۶۵
 سائز : دس x ساڑھے سولہ سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۴۱۱
 صفحہ اول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر
 ہر چند طوطی شکرین مقال خامہ را در برابر.....
 جائزہ : ۱۲۰۵ ہجری میں اس کی تدوین کی گئی، یہ نواب شجاع الدولہ کے اٹاوہ کی فتح کے واقعات پر مبنی ہے۔ نہایت خستہ اور دیمک زدہ حالت ہے۔



- (۳) نام کتاب : الرسالہ فی معرفتہ الاسطرلاب
 مصنف : آیت اللہ المتخلص بہ ثناء
 زبان : فارسی
 فن : فن ہیئت (Astronomy)
 مطبوعہ / قلمی : قلمی
 صفحات : ۱۳۳

سائز : بیس x گیارہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۵۳

صفحہ اول : ابا بعد برائے اصحاب بصیرت و ارباب سریرت پوشیدہ نیست کہ علم.....

تبصرہ : یہ رسالہ فن ہیئت (Astronomy) پر مبنی ہے اور فارسی میں ہے، اس کے مصنف نے ۱۷ صفر ۱۰۷۰ ہجری کی تاریخ صفحہ ۱۱۸ پر درج کی ہے۔ کتاب پر کسی فخر الدین احمد خاں کے ذاتی کتب خانہ کی سیاہ روشنائی سے مہر ثبت ہے، اس رسالے میں موسم کی تبدیلیاں سعد و نحس ساعتیں اس کے علاوہ علم ہیئت میں جتنی اقسام ہیں سب اس میں درج کی ہیں۔ کافی عمدہ خط نستعلیق ہے، کچھ صفحات غلط جڑ گئے ہیں، دوبارہ جلد سازی کے وقت اس کی صورت صحیح کر دی جائے تو بہتر ہے۔



(۴) نام کتاب : بیاض غزلیات

مصنف : (کلام مختلف الشعراء)، کاتب سرب سدھ رائے المتخلص بہ حقیر

زبان : فارسی

فن : بیاض شاعری، فارسی، غزلیات و ریختہ اردو

مطبوعہ / قلمی : قلمی خط نستعلیق عمدہ

صفحات : ۲۴۰

سائز : ساڑھے بارہ x چھبیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۹۵

غزل سعدی

صفحہ اول : وقتی طرب خوش باقم آن دلبر طناز را.....

جائزہ : ۹ فروری ۱۸۵۰ء (۲۵ ربیع الاولیٰ ۱۲۶۶ ہجری) کو کاتب سرب سدھ رائے المتخلص بہ حقیر نے کنور دھنپت رائے پسر راجہ الفت رائے کی خدمت میں اُن کی فرمائش پر یہ بیاض غزلیات مرتب کر کے اُن کی خدمت میں پیش کی، صاحب تحریر خود بھی شاعر ہے اور اُس کی ایک غزل فارسی میں حقیر متخلص کے تحت اس بیاض میں درج ہے، سعدی حافظ، عربی وغیرہ فارسی شعراء کے منتخب کلام اس میں موجود ہیں بہت ہی خوش خط نسخہ ہے۔



(۵) نام کتاب : تاریخ الفی

مصنف : نقیب خاں

زبان : فارسی

فن : تاریخ

مطبوعہ / قلمی : قلمی خط نستعلیق

صفحات : ۵۳۸

سائز : ساڑھے تینتیس x پینتیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۸۹

صفحہ اول : قتل او نمودند آخر الامر او ترک سلطنت نمودہ، رہبانیت اختیار کرد.....

جائزہ : یہ تاریخ، تاریخ الفی کے نام سے موسوم ہے اس میں ایک ہزار سال کی تاریخ جتہ جتہ بیان کی گئی ہے۔ یہ اسلامی ممالک و سلاطین کے ذکر سے لبریز ہے۔ اس کے شروع کے صفحات گم شدہ ہیں۔ آخر کے صفحات بھی غائب ہیں اس پر نوایین

اودھ کی مہریں مثبت ہیں ۱۲۳۷ ہجری کی تاریخ پہلے صفحہ پر رقم ہے۔



(۶) نام کتاب : تاریخ الفی دفتر دوم

مصنف : نقیب خاں

زبان : فارسی

فن : تاریخ

مطبوعہ / قلمی : قلمی (نسخہ خط نستعلیق)

صفحات : ۱۲۸۴

سائز : بائیس x تینتیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۹۰

رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم و تتمم بالخیر

صفحہ اول : تذکرہ واقع سال پانصد و یکم زدست.....

جائزہ : ایک ہزار سالہ تاریخ اسلام و ملوک و سلاطین اسلام پر یہ تاریخ مبسوط و روشنی ڈالتی ہے، تاریخ کافی پرانی ہے، نوائین اودھ کے علاوہ بھی ایک مہر سیاہ کسی بادشاہ کی ہے جو پڑھی نہیں جا رہی ہے۔ سلیمان جاہ بہادر کی مہر، امجد علی شاہ کی مہر، واجد علی شاہ کی مہر، اس کے علاوہ داخل دفتر ہونے کی تاریخیں ۱۱۸۲ ہجری، ۱۲۳۷ ہجری ماہ رمضان، اور ۶ ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری کی مندرج ہیں۔ نسخہ خط نستعلیق کا اچھا نمونہ ہے۔ آخری اوراق کچھ کم ہیں۔



(۷) نام کتاب : تاریخ عالم آرا (جلد اول)

مصنف : عبدالواحد

زبان : فارسی

فن : تاریخ

مطبوعہ / قلمی : قلمی

صفحات : ۹۰۰

سائز : ساڑھے چوبیس x تیرہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۴۹

صفحہ اول : الہ کلین و مکان او سیر دبعالم جزا و ہرچہ پیدا بود.....

جائزہ : یہ تاریخ، آدم علیہ السلام سے آغاز ہو کر حضور نبی اکرم ﷺ تک احاطہ کرتی ہے۔ اس کا قلم خط نستعلیق سے مزین ہے۔ یہ پہلا حصہ داخل دفتر تاریخ ۶ ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری کو کیا گیا ہے۔ اس پر نواب امجد علی شاہ اور سلیمان جاہ کی مہر مثبت ہے۔



(۸) نام کتاب : تاریخ سعادت

مصنف : منشی امام بخش بیدار

زبان : فارسی

فن : منظوم تاریخ، (مشوی)

مطبوعہ / قلمی : قلمی
 صفحات : ۱۳۷
 سائز : ساڑھے تیرہ x ساڑھے تیس سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۲۸۳۵۹

بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر.....
 صفحہ اول : این کتاب موسوم بتاریخ سعادت تصنیف فقیر حقیر برسر تفسیر شش امام بخش المتخلص بہ بیدار.....
 جائزہ : کتاب تاریخ سعادت منظوم بہ طرز مثنوی نامکمل ہے۔ باب در احوال روزگار خود مکمل نہیں ہے۔ آخری باب در خاتمہ کتاب تاریخ سعادت گوید... بھی غائب ہے۔ کتاب کے کل ۱۳۷ صفحات موجود ہیں باقی صفحات جن کے آخر میں تالیف و تصنیف کی تاریخ مندرج ہے غائب ہیں۔ صرف نوابین کی مہروں سے اتنا پتہ چلتا ہے کہ یہ کتاب ۳۲، ۳۳، ۱۲، ہجری میں داخل دفتر ہوئی، ۱۲۳۵ ہجری کی اور ۱۲۳۴ ہجری کی مہرں بھی ثبت ہیں۔ ۵ ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری کو ۳۰ نمبر پر بھی مندرج ہے۔ کتاب کے ایک گوشہ میں در تحویل ۱۲۳۲ ہجری میں ایک مہر ہے نام کاتب کا درج ہے۔
 اس کتاب کا موضوع سوانح ہے، جیسے شذرات کے نمونے پر نثر لکھی جاتی ہے، اسی انداز میں منظوم شذرات، مثنوی کی شکل میں نظم کئے گئے ہیں۔ بیدار قادر الکلام شاعر ہیں۔ اور فن شاعری پر خصوصاً مثنوی پر عبور حاصل ہے۔



(۹) نام کتاب : تاریخ سلطان محمد قطب شاہ
 مصنف : میرزا محمد امین
 زبان : فارسی
 فن : تاریخ نویسی
 مطبوعہ / قلمی : قلمی بھنڈ نعتیہ عمدہ
 صفحات : ۲۷۲
 سائز : ساڑھے اٹھارہ x اکتیس سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۲۸۳۸۵

بسم الله الرحمن الرحيم در نستین
 صفحہ اول : تحمیدی کہ شاہ باز بلند پرواز اندیشہ مباحث کبریائی آن طیران نتواند.....
 جائزہ : اس تاریخ پر جس کا نام تاریخ سلطان محمد قطب شاہ ہے، کسی نواب یا کسی بادشاہ کی مہر نہیں ہے۔ مگر یہ نہایت جامع تاریخ ہے اور حیدر آباد کے سلاطین سے متعلق ہے، خط تحریر نہایت عمدہ ہے۔ سلطان محمد قطب شاہ کے شہزادگان اور ان کے آباؤ اجداد کا ذکر شرح و بسط سے کیا گیا ہے، واقعات نگاری میں اختصار سے کام لیا گیا ہے۔ دکن سے متعلق نہایت قیمتی نسخہ ہے اور شاید دکن کے شاہی کتب خانہ سے یہاں تک پہنچا ہے، آخر کے صفحات غائب ہیں جس پر ہو سکتا ہے مہرں ثبت ہوں اور اسی وجہ سے غائب کئے گئے ہوں تاکہ سراغ نہ لگ سکے۔



(۱۰) نام کتاب : تاریخ فرشتہ
 مصنف : محمد قاسم المعروف فرشتہ
 زبان : فارسی
 فن : تاریخ

مطبوعہ / قلمی : قلمی خط نستعلیق

صفحات : ۱۲۰۰

سائز : ساڑھے تینیس x ساڑھے اٹالیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۵۸

بسم الله الرحمن الرحيم

صفحہ اول : پیش وجود ہمہ آئید کان پیش بقائی ہمہ پائندگان قافلہ سالار جہاں.....

جائزہ : یہ تاریخ، پوری دنیا میں تاریخ کی کتابوں میں اپنا اہم مقام رکھتی ہے اور تاریخ فرشتہ کے نام سے موسوم ہے، اس کی ۲ فصلیں اس ایک جلد میں موجود ہیں، نہایت اہم اور قیمتی نسخہ ہے، فتوحات اسلامیہ اور سلاطین کا اس میں ذکر ہے اور خود مصنف ایک سیاح

ہے۔ اس پر کسی نواب کی مہر نہیں ہے۔ جس شخصیت نے یہ عطیہ لائبریری کو دیا ہے اس کا نام بھی کہیں مذکور نہیں۔



(۱۱) نام کتاب : تحفۃ الاحباب فی بیان الانساب

مصنف : محمد خلیل اللہ انصاری فرنگی محلی

زبان : فارسی

فن : انساب (نسب نامہ فرنگی محل)

مطبوعہ / قلمی : قلمی

صفحات : ۴۹

سائز : ساڑھے بیس x تینتیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۰۰۱

بسم الله الرحمن الرحيم

صفحہ اول : الحمد لله الذي خلق الموجودات وانطق الانسان ويدر عجائب المخلوقات.....

جائزہ : جناب محمد خلیل اللہ انصاری فرنگی محل نے ۱۳۰۵ ہجری میں اپنے خاندان کے متعلق شجرہ نویسی کا انداز اختیار کر کے یہ

تالیف کی ہے۔

خط نستعلیق ہے فرنگی محل کے علماء کرام فرنگی محلی کیوں کہلائے اس کی وجہ تسمیہ بھی تحریر ہے۔ سنہ ہجری کے حساب سے یہ قلمی مخطوطہ ایک سو پندرہ (۱۱۵) سال قدیم ہے۔ اس پر کسی نواب کی مہر ثبت نہیں۔ یہ کتاب کسی ذاتی کتب خانہ سے لائبریری میں منتقل ہوئی ہے۔



(۱۲) نام کتاب : تحفۃ النادرین

مصنف : محمد سعید

زبان : فارسی

فن : انشائے لطیف بہ زبان فارسی (داستانیں، قصے، واقعات)

تحریر : خط نستعلیق

مطبوعہ / قلمی : قلمی

صفحات : ۲۷۶

سائز : گیارہ x ساڑھے اٹھارہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۰۰

آغاز عبارت : بسم الله الرحمن الرحيم

جہاں جہاں بنائش جہاں داری را.....

جائزہ : کتاب کہیں یوسف زلیخا کی حکایت ہے، کہیں تان سین سے متعلق حکایت ہے گویا یہ مختلف حکایتوں کی کتاب ہے جسے انشائے لطیف سے سجایا گیا ہے۔ کتاب کی حالت خستہ ہے، اس کی مرمت غلط انداز سے کی گئی ہے، دیمک زدہ بھی ہے، مجھے یہ قدیم نسخہ بہ عہد اورنگ زیب عالمگیر کا لگا کیونکہ کتاب کے آخر میں مولف نے ابوالمظفر حضرت بادشاہ اورنگ زیب بہادر عالمگیر خلد اللہ و ملکہ و سلطانہ کی عبارت سے مزین کرتے ہوئے اس کی تاریخ تالیف ۱۰۹۹ھ تحریر کی ہے۔ گویا یہ ۳۲۱ سال پرانی کتاب ہے۔ اصل کتاب کو جس کا تب نے نقل کیا ہے اس نے اپنا نام اس طرح تحریر کیا ہے۔

نسخہ نادریہ محض محمد سعید اتمام شد، تمام زکار من نظام شد

مجھے اس کتاب کا نام تحفۃ النادرین کتاب کی مصنف یا مولف کے ہاتھوں کا نہیں ملا، البتہ نوابین اودھ کی مہر میں آخر کتاب میں اور شروع کتاب میں ثبت ہیں جس میں نواب امجد علی شاہ کی مہر صاف ہے جس میں ۱۲۳۱ ہجری تحریر ہے، اس کتاب کے حاشیہ پر محمد بیگ نے تحفۃ النادرین تحریر کیا ہے، یہ نسخہ بہ اہتمام محمد بیگ کتب خانے میں داخل کیا گیا ہے، اسی نے ۱۲۳۱ ہجری کی تاریخ ڈالی ہے۔



نام کتاب :	تحفۃ المومنین
مصنف :	محمد عبدالمومن حسینی
زبان :	فارسی
فن :	طب یونانی
تحریر :	تستعلیق
مطبوعہ / قلمی :	قلمی
صفحات :	۶۳۴
سائز :	بیس x تینتیس سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر :	۴۸۳۰۰

صفحہ اول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر

جائزہ : سبحانک اللهم بالقدوس وبالطيب النفوس

یہ کتاب حکیم محمد مومن حسینی نے ترتیب و تدوین کی ہے۔ انکے والد بھی حاذق حکیم تھے جن کا ذکر میر محمد زماں کے نام سے صاحب تالیف نے کیا ہے۔ نوابین اودھ میں سلیمان جاہ کی خدمت میں یہ نسخہ پیش کیا گیا ہے مگر اس پر کسی نواب کی مہر ثبت نہیں ہے۔ کتاب دیمک زدہ ہو چکی ہے۔



نام کتاب :	تذکرۃ الدولت شاہی (تذکرہ شعرائے فارسی)
مصنف :	دولت شاہ سمرقندی
زبان :	فارسی
فن :	فارسی شاعری
مطبوعہ / قلمی :	قلمی، بہت ہی خوش خط، خفی قلم، خط نستعلیق
صفحات :	۲۹۰

سائز : ساڑھے بیس x پندرہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۳۸۳۴۱

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم

تحمیدی شاہباز بلند پرواز اندیشہ بساحت و فضا کبریٰ ان طیران تو اند نمود.....

جائزہ : یہ تذکرہ شعرائے فارس کا ہے، نسخہ بہت ہی قدیم ہے، مگر جگہ جگہ سے بوسیدہ ہے، مرمت ناکافی ہے۔

سیلیان جاہ کی مہر ۱۲۳۴ھ جری، نواب امجد علی شاہ کی مہر اور نواب واجد علی شاہ کی مہر ثبت ہے۔ ربیع الاول ۱۲۶۲ھ جری میں داخلہ کی رپورٹ سیاہ قلم سے کتب خانہ کے نشی صاحب کی ہے۔

استاد عنصری، فردوسی، فرخی، عمیق بخاری وغیرہ وغیرہ شعراء کا ذکر اور ان کی ادبی شناخت اس میں کی گئی ہے۔ ۲۵۰ شعراء سے زیادہ کی فہرست کتاب میں موجود ہے۔



(۱۵) نام کتاب : تواریخ قندھار

مصنف : سید نجف علی (کاتب الحروف)

زبان : فارسی

فن : تاریخ نویسی

مطبوعہ / قلمی : قلمی بہ خط نستعلیق

صفحات : ۲۷۰

سائز : ساڑھے تیرہ x ساڑھے اکیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۳۸۳۴۲

صفحہ اول : دو کس بقرب اؤ کشتہ شدند و بیچ کس بی انکہ.....

جائزہ : میرزا کامران مغل کے کوچ فرمانے اور وقتی طور پر عیش باغ نزول فرمانے کے ذکر سے واقعہ نگاری کا آغاز ہوتا ہے،

شروع کے صفحات غائب ہیں، ہمایوں بادشاہ اور بابر کے مذکورات تاریخ قندھار میں موجود ہیں اور پھر جملہ لواحقین و سرداران کا بھی ذکر ہے از انجملہ مہابت خاں وغیرہ۔

نہایت عمدہ خط نستعلیق کا نسخہ ہے، نوایین اودھ کی مہریں ثبت ہیں۔



(۱۶) نام کتاب : تو زوک تیموری

مصنف : عباد اللہ ابن حاجی محمد امین

زبان : فارسی

فن : سوانح نگاری

مطبوعہ / قلمی : قلمی

صفحات : ۱۰۶

سائز : گیارہ x ساڑھے بیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۳۸۳۶۷

بسم الله الرحمن الرحيم الملك الله دستبر رستر

صفحہ اول : فرزند ان ملک کیر کامکار و بنا ر ذوی القدر ملک دار کا معلوم او.....

جائزہ : ۱۱۰۹ ہجری میں عباد اللہ ابن حاجی محمد امین نے تیمور کے واقع اور سوانح اس کتاب میں تحریر کئے ہیں۔ اس کا نسخہ بہت پرانا ہے اور بیش قیمت ہے۔ کتاب خط نستعلیق کا بہترین نمونہ ہے۔ اس پر نو امین اودھ کی تین مہرں ثبت ہیں۔ پہلی مہر سلیمان جاہ کی، دوسری امجد علی سلطان کی تیسری نواب واجد علی شاہ کی۔ ۱۱۹۷ ہجری کی مہر، ۱۲۳۱ ہجری کی مہر، نمبر ۲۰۳ بہ اہتمام محمد بیگ تحریر ہے۔ صفحہ آخر پر بھی نو امین اودھ کی مہرں ثبت ہیں۔



(۱۷) نام کتاب :	تفسیر حسینی
مصنف :	حسین کاشفی
زبان :	فارسی
فن :	تفسیر قرآنی، فارسی میں، عربی سے
تحریر :	خط نستعلیق
مطبوعہ / قلمی :	قلمی
صفحات :	۱۵۷۹
سائز :	ساڑھے ستائیس x ساڑھے پندرہ سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر :	۲۸۳۸۸

بسم الله الرحمن الرحيم

صفحہ اول : اعوذ، پناہ می گیریم والتجائی نمایم.....

جائزہ : یہ قرآن کی تفسیر فارسی میں ہے، اس کا سال تصنیف ۱۰۹۰ ہجری ہے، گویا یہ ۳۳۰ سال پرانی کتاب ہے۔ اس کا مصنف حسین کاشفی ہے پہلا صفحہ طلائی حسن کاری سے مزین کیا گیا ہے، یہ قرآن کے ۳۰ پاروں کی مکمل تفسیر ہے، خط نستعلیق اس قدر عمدہ اور خفی ہے کہ تعریف نہیں کی جاسکتی کتاب میں جگہ جگہ دیک لگ رہی ہے۔

میں نے اس تفسیر کا اردو ترجمہ بھی دیکھا ہے مگر جو بات اور انداز فارسی طرز بیان کا ہے وہ اس میں کہاں، سرخیاں عربی میں قائم کی گئی ہیں جس میں سرخ روشنائی استعمال کی گئی ہے۔



(۱۸) نام کتاب :	جو ابات اعتراضات آرزو
مصنف :	حکیم بیگ خاں حاکم
زبان :	فارسی (شاعری)
فن :	ادب فارسی (نثر میں بحث اور حاکم کے اشعار)
مطبوعہ / قلمی :	قلمی
صفحات :	۲۰
سائز :	بائیس x تیرہ سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر :	۲۸۳۳۸

صفحہ اول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر

بعد حمد خداوندی کہ ذات مقدس از جمیع نقائص مبرا.....

جائزہ : حاکم شاعر کے اشعار ہیں۔ اور اس پر سراج الدین علی خاں آرزو کے استدلال و اعتراضات پر جواب۔ زین الدین احمد خاں کی مہر ثبت ہے۔ سنہ ہزار و صد و ہفت و سنہ ہجری حاکم نے تحریر کی ہے۔ قدیم زمانے میں سخن فہم حضرات ابیات و اشعار پر

بحث کیا کرتے تھے۔ چنانچہ حاکم کے اشعار پر جو اعتراضات کئے گئے ہیں اس کے جوابات اس رسالے میں موجود ہیں۔



(۱۹)	نام کتاب :	حلیۃ المتقین
	مصنف :	عبدالصمد خراسانی و مولانا آخوندالاصفہانی
	زبان :	فارسی
	فن :	حدیث
	مطبوعہ / قلمی :	قلمی بہ خط نستعلیق جلی
	صفحات :	۶۴۰
	سائز :	چھبیس × سترہ سینٹی میٹر
	ایکسیشن نمبر :	۴۸۳۹۴

رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر
 صفحہ اول : الحمد لله الذی حلّی انبیاء المرسلین باحسن حلیۃ المتقین وبعث.....
 جائزہ : حسب الفرائض محمد بلال علی خاں صاحب، مرزا احمد کاتب نے اس کو نقل کیا، نقل کرنے کے بعد، یکم ذیقعدہ ۱۲۴۷ھ کی تاریخ ثبت کی، نواب اودھ کی مہر ۱۲۵۲ھ بمطابق ۱۸۳۷ء میں داخل دفتر کی ہے نواب امجد علی شاہ کی مہر ثبت ہے، یہ کتاب اثنا عشریہ یعنی اہل بیت حضرات کے عقائد کی ہے، جس میں امامین کے قول نقل کئے گئے ہیں۔



(۲۰)	نام کتاب :	خلاصۃ التواریخ
	مصنف :	سورجان سنگھ (سبحان سنگھ) پٹالوی
	زبان :	فارسی
	فن :	تاریخ
	قلمی / مطبوعہ :	قلمی (خط شکستہ)
	صفحات :	۳۶۴
	سائز :	انٹیس × سترہ سینٹی میٹر
	ایکسیشن نمبر :	۴۸۳۷۱

صفحہ اول : هو الامر، یکی از حاجبان در گاہ حمدیت را تخلعت بشری مخلص کردا بندہ.....
 جائزہ : سبحان سنگھ مصنف خلاصۃ التواریخ نے مختلف تواریخ کی کتابوں کا خلاصہ اس میں بیان کیا ہے۔ ۱۱۹۹ھ بمطابق ۱۷۸۴ء کی تاریخ مذکور کی ہے۔ محمود غزنوی سے لے کر شہزادہ داراشکوہ تک کے حالات و سوانح و اس زمانے کی تصنیفات سے بھی استفادہ کیا ہے۔ خط شکستہ نہایت عمدہ ہے۔ کہیں کہیں کتاب کی حالت خستہ ہے جسکی مرمت کرا دی گئی ہے۔ کتاب کے مصنف کا نام سبحان سنگھ صاف پڑھا جا رہا ہے۔ کتاب پر نوابین اودھ، نواب امجد علی شاہ، نواب سلیمان جاہ و نواب واجد علی شاہ کی مہریں ثبت ہیں۔



(۲۱)	نام کتاب :	دیوان ظہوری
	مصنف :	مولانا ظہوری
	زبان :	فارسی

فن : شاعری
 مطبوعہ / قلمی : قلمی بہ خط نستعلیق دیدہ زیب کتاب حافظ نور محمد
 صفحات : ۹۶۳
 سائز : سترہ x اُنٹیس سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۳۸۳۹۱
 صفحہ اول : بسم اللہ الرحمن الرحیم
 خرمی چمن سخن بطراوت حمد بہار پر ابیت کہ گلزار ابراہیم.....
 جائزہ : ظہوری فارسی ادب کا معتبر اور مشہور شاعر ہے۔ یہ اسی کا کلام بلاغت نظام ہے۔ اس پر امیر الدولہ تعلقدار محمود آباد کی مہر ثبت ہے۔ ۱۲۱۹ ہجری کی۔
 ایک مہر ۱۱۳۹ ہجری کی داخل کتب خانہ صفوی تحریر ہے۔



(۲۲) نام کتاب : رسالہ انتظام سلطنت
 مصنف : نامعلوم
 زبان : فارسی
 فن : مضامین انتظامات حکومت و سلطنت
 خط تحریر : نستعلیق جلی
 مسودہ : قلمی
 صفحات : ۹۲
 سائز : ساڑھے بیس x تیرہ سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۳۸۳۵۰
 ابتدائی صفحہ : رب یسر بسم اللہ الرحمن الرحیم وتمم بالخیر

ابتدائے سخن بنام پروردگار تکہ عالم و ہرچہ در عالم است آفریدہ اوست.....
 تبصرہ : اس کتاب کو کافی غور سے پڑھا لیکن رسالہ انتظام سلطنت نام کہیں نہیں ملا۔ مصنف یا مؤلف کا نام بھی نہیں ملا۔ ویسے آغاز اسلام سے امور سلطنت کو کیسے بھایا گیا اور سلاطین میں کیا کیا خوبیاں ہونی چاہئیں اور رعایا کے ساتھ کیسے پیش آنا چاہئے اور حسن انتظام کو کس طرح مختلف شعبہ ہائے انتظام و انصرام میں باثنا چاہئے اور اسلاف نے کیسے کیسے باثنا تھا، یہی اس کتاب کا موضوع ہے۔ کتاب کی حالت اور خط تحریر بہت اچھا ہے۔ یہ کتاب بھی کتب خانہ سلیمان جاہ کی مہر کے ساتھ دیگر مہریں بھی اپنے اندر رکھتی ہے، بتاریخ یازدہم ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری کو یہ امجد علی شاہ کے کتب خانہ میں داخل کی گئی۔



(۲۳) نام کتاب : رسالہ صفات السیف
 مصنف : محمد ہادی اور لطف اللہ تخلص نثار پرنصرت اللہ خاں
 زبان : فارسی
 فن : شمشیر زنی واقسام شمشیر
 مطبوعہ یا قلمی : قلمی
 صفحات : ۳۶

سائز : ساڑھے بارہ x بائیس سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۹۹

صفحہ اول : رب یسربسم اللہ الرحمن الرحیم وتمم بالخیر
احسان بے پایاں رب الاکرم الاکرمین کہ بہ نور.....

جائزہ : یہ اہتمام محمد بیگ ۱۲۳۱ ہجری سیاہ قلم سے تحریر ہے، دوسری تحریر قلم سے ۱۰ ذیقعدہ ۱۱۹۷ ہجری تحریر ہے، نواب سلیمان جاہ کی مہر میں ۱۲۴۴ ہجری تحریر ہے۔ یہ رسالہ استاوان شمشیر زنی سے استفادہ کر کے، تلوار چلانے کے داؤچ سکھانے کے لئے لکھا گیا ہے۔ اس کے علاوہ دوسرے حصہ میں اقسام السیف یعنی تلواروں کی قسمیں لکھی گئی ہیں۔ دنیا میں تلوار کی ساخت، نمونے، اس کی دھار رکھنے کا فن اور عربی، رومی، ہندوستانی تلواروں کی ساخت سے بحث کی گئی ہے۔ شکلیں بھی نمونے کے طور پر دی گئی ہیں، فرنگیوں کی تلواروں سے بھی بحث کی گئی ہے۔ فرانس کی تلواریں بھی زیر بحث لائی گئی ہیں۔ راجپوت حضرات تلوار کیسے بناتے ہیں وغیرہ وغیرہ اس کا اس میں ذکر ہے۔



(۲۴) نام کتاب : زبدۃ التوارخ
مصنف : جانی احمد بن محمد علی بن محمد باقر الاصفحانی
زبان : فارسی
فن : مذہب اسلام، نثر فارسی، (تالیف رسالہ در بیان احکام ضروریہ نماز و روزہ)
تحریر : نستعلیق جلی
مطبوعہ : قلمی
صفحات : ۲۵۰
سائز : چوبیس x تیرہ سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۳۴
صفحہ اول : بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد لله الذی..... معز الکرام

اما بعد! گوید بندہ جانی احمد بن محمد علی بن محمد باقر الاصفحانی المشہور لبہبہانی غفر اللہ ذنوبہم بہ محمد و علی کہ جوں ایں بے بضاعت، عدیم السعادت از مشیت ازلی و تقدیر حکیم لم یزلی.....

جائزہ : یہ رسالہ زبدۃ التوارخ مذہب اسلام میں جو احکام نماز اور روزے کے بارے میں قرآن میں آئے ہیں ان کو عربی کی عبارتوں کو سامنے رکھ کر فارسی میں ترتیب دیا گیا ہے۔ روشنائی سیاہ اور صاف ہے خط نستعلیق ہے کتاب کی حالت زیادہ اچھی نہیں ہے۔ کتاب کے آخر میں اس کا سنہ تالیف ۱۲۲۷ ہجری سبھ میں آتا ہے، روز پنجشنبہ (جمعرات) کے آگے دیمک نے عبارت کو چاٹ لیا ہے، کتاب پر نوائین اودھ کی تین مہریں ثبت ہیں، ایک مہر جس میں نواب امجد علی شاہ کا نام پڑھا جاسکتا ہے۔ دو مہروں میں نوائین کا نام نہیں پڑھا جاسکتا۔



(۲۵) نام کتاب : زبدۃ التوارخ
مصنف : نور الحق
زبان : فارسی
فن : تاریخ نویسی، واقعات نگاری

قلمی یا مطبوعہ : قلمی، نہایت بہترین قدیم خط شکستہ جس کا جواب نہیں، بہ عہد جہانگیر بادشاہ
 صفحات : ۴۰۲
 سائز : ساڑھے پندرہ x ساڑھے پچیس سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۷۶

رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم و تتمم بالخیر
 صفحہ اول : خطبہ کبریٰ و جلال، نام شاہنشاہی سرد کہ عالم دہر چہ در عالم است آفریدہ.....
 جائزہ : اس تاریخ پر محمد شاہ بادشاہ غازی کی مہر ہے، نوائین اودھ کی بھی مہریں ثبت ہیں۔ یہ محدث دہلوی شاہ عبدالحق کی
 تصنیف معلوم ہوتی ہے۔ چونکہ میں نے زبدۃ التواریخ کے نام سے کہیں کسی لائبریری میں شیخ عبدالحق محدث دہلوی کا نام دیکھا
 ہے۔ ۱۰۹۸ ہجری سے لے کر ۱۱۶۳ ہجری تک کے اندراج اس میں موجود ہیں۔
 ابتدائی صفحات جنکی تعداد پانچ (۵) ہے، اس میں خط شکستہ میں مختلف تاریخی ماڈے مذکور ہیں، فرخ سیر شاہ عالم گیر شاہ وغیرہ کے جلوس
 انہیں پانچ (۵) صفحات میں درج ہیں، اصل تاریخ کی ابتدا قطب الدین ایک سے ہو کر شاہ عالم پر ختم ہوتی ہے۔ بہت قیمتی نسخہ ہے۔



(۲۶) نام کتاب : سوانح دکن
 مصنف : منعم خاں ہمدانی اورنگ آبادی
 زبان : فارسی
 فن : تاریخ
 قلمی یا مطبوعہ : قلمی
 صفحات : ۲۴۴
 سائز : اٹھارہ x اٹھائیس سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۵۴

رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم و تتمم بالخیر
 صفحہ اول : حمد داوری کہ بو قلمو نے اقالیم سبہ رکی.....
 جائزہ : ۱۱۹۷ ہجری میں یہ کتاب سوانح دکن، منعم خاں ہمدانی نے مختلف تواریخ کے ماخذوں سے استفادہ کر کے نہایت جامع
 انداز میں ترتیب دی۔ اس میں میر نظام علی خاں بہادر نواب دکن کے سوانح تحریر کئے گئے ہیں، نوائین اودھ از جملہ نواب امجد علی
 شاہ و نواب واجد علی شاہ و سلیمان جاہ کے ذاتی کتب خانوں کی اس پر مہریں ثبت ہیں۔ کتاب کا خط نستعلیق اور حالت ٹھیک ہے۔



(۲۷) نام کتاب : سراج اللغات (دفتر دویم)
 مصنف : سراج الدین علی خاں آرزو
 زبان : فارسی
 فن : لغت نویسی
 قلمی یا مطبوعہ : قلمی
 صفحات : ۲۴۴
 سائز : اکیس x چودہ سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۴۵

رب يسر بسم الله الرحمن الرحيم و تتمم بالخير
 صفحه اول : اما بعد حمد و واضح جميع نعات و صلوة برا فصح و افضل موجودات
 جائزہ : نواب امجد علی شاہ کی مہر ثبت ہے، ۷ ربیع الثانی ۱۲۲۳ ہجری کی تاریخ کو سراج اللغات کی یہ جلد جس کے مصنف سراج
 الدین علی خاں آرزو ہیں، نقل تمام ہوئی۔
 اس میں لغات و اصطلاحات شعرائے متاخرین بیان کی گئی ہیں۔
 کتاب کی حالت خستہ ہے جگہ جگہ دیمک آلودہ ہے، مرمت کی گئی ہے مگر کافی نہیں ہے۔



(۲۸) نام کتاب : سراج اللغات (حصہ سوم)

مصنف : سراج الدین علی خاں آرزو

زبان : فارسی

فن : لغت فارسی

قلمی یا غیر قلمی : قلمی

صفحات : ۳۲۴

سائز : اکیس x ساڑھے بارہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۴۴

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم

لحمد لله علی جبریل الالبابہ واصلی علی اشرف انبیاء و اولیاء اما بعد

جائزہ : یہ سراج اللغات کا تیسرا حصہ ہے۔ ایک جگہ حاشیہ پر ۱۴ ربیع الاول ۱۲۳۶ ہجری کی تاریخ تحریر ہے، صفحہ اول پر ہشتم
 ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری مرقوم ہے، ایک مہر سیاہ خورد، زین الدین احمد خاں کی ہے۔ ایک سلیمان جاہ کی ۱۲۳۴ ہجری کی، دوسری
 امجد علی شاہ کی سنہ ہجری سمجھ میں نہیں آرہی، اس میں اور اق کی جلد ہندی کہیں کہیں غلط ہے، جیسے باب الیاء شروع میں ہے اور
 باب الیاء آخر میں، چونکہ صفحات کی نشاندہی نہیں کی گئی اس وجہ سے یہ غلطی ہوئی۔



(۲۹) نام کتاب : سراج اللغات (جلد دوم)

مصنف : سراج الدین علی خاں آرزو

زبان : فارسی

فن : لغت

قلمی یا مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۳۷۰

سائز : بتیس x تیرہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۹۸

بسم الله الرحمن الرحيم

صفحہ اول : اما بعد حمد و واضح جميع آفات و صلوة برا فصح و افضل موجودات
 جائزہ : یہ سراج اللغات کی دوسری جلد ہے، اس میں کہیں کہیں دیمک زدگی ہے، باقی دیگر وہی نواب امجد علی شاہ کی مہر، سلیمان
 جاہ کی مہر، زین الدین احمد خاں کی مہر، سلطان عالم کی مہر۔

تاریخ ہشتم ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری، معلوم ہوتا ہے کہ اس میں اوراق کم ہو گئے ہیں کیونکہ سرورق کے حساب سے ۲۸۷ اوراق کی سند ہے، جس کے حساب سے ۵۷۴ صفحات ہونے چاہئیں، یہاں کل ۱۸۵، اوراق یعنی ۳۷۰ صفحات ہیں۔
سنہ تصنیف : مورخاؤ سنہ شوال ۱۱۰۰ الف و سبعین سنہ ہجری یعنی ۱۰۷۰ ہجری تحریر ہے۔



(۳۰) نام کتاب :	سراج اللغات
مصنف :	سراج الدین علی خاں آرزو
زبان :	فارسی
فن :	لغت فارسی
قلمی یا مطبوعہ :	قلمی
صفحات :	۱۸۴
سائز :	ساڑھے تیرہ x چھبیس سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر :	۴۸۳۷۵
صفحہ اول :	رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر ابا بعد حمد واضح جمیع نعات و صلوة برا فصح موجودات.....

جائزہ : یہ سراج الدین علی خاں آرزو کی سراج اللغات کی دوسری جلد ہے، یہ میر تقی میر کے سگے ماموں اور فن ریختہ کے استاد بھی ہیں، انھوں نے خود بھی اردو اور فارسی میں غزلیں کہی ہیں، یہ لغت انھیں کی ہے اس میں اصطلاحات شعرائے متاخرین مثل فرہنگ جہانگیری، سروری و برہان قاطع وغیرہ سے استفادہ کر کے داخل لغت دوم کیا گیا ہے۔
اس کا سنہ تحریر ۱۱۶۰ ہجری ہے اور اس کتاب کے اندراجات سے پتہ چلتا ہے کہ اس کو کوٹھی خاص میں جمع کیا گیا تھا کیونکہ اس میں لکھا ہے آمد از کوٹھی خاص، سیاہ روشنائی سے مہر میں ۱۲۲۴ ہجری کی تاریخ درج ہے۔ نوابین اودھ کی تین سرخ مہرں بھی اس میں لگی ہیں، جن کی تاریخ واضح نہیں ہے البتہ ایک مہر کتب خانہ سلیمان جاہ بہادر کی، دوسری نواب امجد علی شاہ کی، تیسری بڑی مہر بھی امجد علی شاہ کی ہے ایک جگہ اندراج میں تحریر ہے کہ ہ تاریخ یازدہم ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری رسید۔
کتاب کی حالت خستہ ہے اور دو روشنائیاں استعمال کی گئی ہیں ایک سرخ اور ایک سیاہ، کتاب کی مرمت بھی کی گئی ہے مگر یہ مرمت ناکافی ہے۔ یہ قلمی مسودہ کافی نایاب ہے۔



(۳۱) نام کتاب :	سنگھاسن بتیسی
مصنف :	فضل حق
زبان :	فارسی
فن :	قصہ گوئی
قلمی یا مطبوعہ :	قلمی
صفحات :	۱۵۲
سائز :	تیسیس x چودہ سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر :	۴۸۳۶۳
صفحہ اول :	بسم الله الرحمن الرحيم شکر در در گاہ ایزد حق بر حق ذالجلال نیست طاقت در زبان آرم.....

جائزہ : راجہ بکرماجیت کے واقعات و فسانہ ہائے عجیب و غریب کو ہندی میں سنگھان بتیسی کے نام سے جانا پہچانا جاتا ہے، انہی واقعات کو فارسی زبان میں ۲۶ ربیع الاول ۱۳۳۶ ہجری کو رقم کر کے کتاب کا نام سنگھان بتیسی رکھا گیا۔ اس کو مرزا اکبر علی اصفہانی نے کتابت کر کے اور فصل حق صاحب نے فارسی میں ترجمہ کر کے دیوان صاحب لالہ کالکا پرشاد صدر کوٹھی مکن پور کی خدمت میں پیش کیا۔



(۳۲) نام کتاب : سیر المتاخرین

مصنف : غلام حسین

زبان : فارسی

فن : تاریخ

قلمی یا مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۶۸۴

سائز : ساڑھے تیرہ x بیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۶۵

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم

سپاس بے قیاس دستاویز سرمدے اساس شاد بارگاہ عظمت و جلال.....

جائزہ : غرہ ماہ صفر سنہ ۱۱۹۳ ہجری میں، غلام حسین بن ہدایت اللہ خاں طباطبائی الحسینی نے یہ تاریخ تحریر فرمائی۔ اس میں عہد اورنگ زیب عالمگیر کے صوبہ دار برائے گجرات غازی الدین خاں اور ان کے ہمعصروں کی تاریخ ہے۔ پرانی اور نایاب کتاب ہے۔ جو اپنے زمانے کا احاطہ کرتی ہے۔



(۳۳) نام کتاب : شرح زلیخا

مصنف : محمد عابد خاں رامپوری

زبان : فارسی

فن : شاعری از قسم مثنوی

قلمی یا مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۱۹۶

سائز : ساڑھے اکتیس x بارہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۷۴

صفحہ اول : رب يسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخير

حاشیہ زلیخا تاریخ دوہم ۱۰ شوال ۱۱۹۱ ہجری بروز سنہ مقام لکھنؤ

جائزہ : محمد عابد خاں نے یہ نثری شرح پہلے ریاست رامپور میں تمام کی تھی مگر جب لکھنؤ سے پذیرائی کی امید ہوئی تو اس نسخہ میں رامپور فتح کر کے لکھنؤ لکھ دیا۔ یہ مثنوی فارسی ادب میں یوسف زلیخا، بطرز مثنوی از مولانا عبدالرحمن جامی مشہور ہے، یہ اسی کی نثر میں شرح ہے، اس میں ماہ ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری میں کتب خانہ کی مہر نہیں بلکہ تحریر ہے، نوایین میں سے ۱۲۴۴ ہجری کی مہر

سلیمان جاہ کے کتب خانہ کی، امجد علی شاہ کی سنہ ہجری پڑھی نہیں جا رہی، واجد علی شاہ کی مہر بھی ہے مگر سنہ ہجری نہیں پڑھی جا رہی، کتاب کے آخر میں ایک مہر ۱۲۶۳ ہجری کی بھی ہے، جو نواب واجد علی شاہ کی معلوم ہو رہی ہے۔



(۳۴) نام کتاب : شرح جامی

مصنف : نعمت خاں عالی لکھنوی

زبان : فارسی

فن : قواعد گرامر، فارسی

قلمی یا مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۶۴

سائز : تینیس x سولہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۳۸۳۹۷

: بسم الله الرحمن الرحيم

صفحہ اول : الکلمة لفظ وضع به بمعنى مفرد ترکیب کہ الکلمة مبتدأ است و لفظ خبر مبتدأ.....

جائزہ : ۲۴ شوال ۱۲۱۳ ہجری بروز جمعہ کو نعمت خاں عالی ساکن کریم گنج لکھنؤ نے اس تشریح قواعد فارسی کو تجلیات رحمانی سے موسوم کر کے عضد الکمالات ایزد سبحانی وغیرہ القاب سے مزین کر کے نواب اودھ کی خدمت میں پیش کیا ہے۔ تین نوائین کی مہر ثبت ہیں، منشی محمد بخش نے نمبر موجودات ڈاکٹر داخل دفتر کیا ہے۔

۱۲۶۲ ہجری کی تاریخ کتاب پر موجود ہے۔

میں نے کتاب کا نام شرح جامی بہت تلاش کیا مگر مجھے نہیں ملا، میرا خیال ہے کہ اس کے اوراق ابتدائی غائب ہیں جس سے کتاب کے عنوان کا پتہ چل سکے مصنف کا نام محمد بخش غلط تحریر کیا گیا ہے۔ یہ تو افسر کتب خانہ نواب کا نام ہے۔



(۳۵) نام کتاب : شرح جام جہاں نما

مصنف : شاہ وجیبہ الدین گجراتی

زبان : فارسی

فن : تصوف، دین اسلام

تحریر : نستعلیق جلی

صفحات : ۷۲

مطبوعہ / قلمی : قلمی

سائز : تیس x بیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۳۸۳۹۶

: آغاز صفحہ ۱ : بسم الله الرحمن الرحيم

حمد بے حد و شکر بے حد سزائے ذاتے کہ وحد تش نشانے احدیت واحدیت شد.....

جائزہ : یہ کتاب تصوف کے بارے میں ہے جس کا نام جام جہاں نما ہے۔ یہ اس کے جزو اول کی شرح ہے اور فارسی زبان میں ہے۔ اس کے مصنف کا نام شاہ وجیبہ الدین گجراتی ہے۔ کتاب بہت بوسیدہ ہے اور نہایت خوش خط نستعلیق میں جلی خط میں لکھی

محمد بیگ نے شرح جام جہاں نما لکھا ہے۔
اس کتاب میں مسئلہ وحدت الوجود اور مسئلہ وحدت الشہود سے بحث کی گئی ہے۔



(۳۶) نام کتاب : شرح مرآة الحقائق

مصنف : محمد حمید اللہ
زبان : فارسی
فن : تصوف دین اسلام (مسئلہ تناخ پر امام شافعی کی بحث)
تحریر : خط نستعلیق جلی
مطبوعہ / قلمی : قلمی
صفحات : ۶۲
سائز : تیس x بیس سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر : ۷۸۳۰۳
صفحہ اول : بسم اللہ الرحمن الرحیم

الحمد لله الذي اری قلوب خواصه وجوه تجلياته.....

اس رسالہ کے خاتمہ پر مندرجہ ذیل عبارت تحریر ہے

تمت رساله اراء الدقائق في شرح مرآة الحقائق بالخير والسعادة ۱۱۸ھ

حضرت امام شافعی رضی اللہ عنہ نے مسئلہ تناخ پر عربی میں ایک رسالہ مرآة الحقائق لکھا تھا یہ اسی کی فارسی شرح ہے جسے اراء الدقائق کے نام سے محمد حمید اللہ نے کتابت کیا ہے۔ یہ خط نستعلیق جلی، وہی ہے جس نے شرح جام جہاں نما مصنف شاہ وجیہہ الدین نقل کیا ہے۔ مجھے تو یہ کتاب بھی شاہ وجیہہ الدین گجراتی کی معلوم ہوئی۔



(۳۷) نام کتاب : طوطی نامہ

مصنف : فرید الدین عطار
زبان : فارسی
فن : داستان گوئی
قلمی یا مطبوعہ : قلمی
صفحات : ۳۶۶
سائز : ۱۵ x ۲۲ سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۶۸

صفحہ اول : مشورت برشاک رفت وگفت کہ مرا چنین کار پیش آمدہ است.....

جائزہ : اس کتاب میں جو پہلا اور دوسرا صفحہ ہے اس کا تعلق 'طوطی نامہ' سے نہیں ہے۔

'طوطی نامہ' کے ابتدائی اوراق ضائع ہو گئے، مگر چونکہ یہ مشہور کتاب ہے اور اس میں داستان گوئی کی طرز پر حضرت فرید الدین عطار صاحب رحمۃ اللہ علیہ نے زندگی کے مسائل سے بحث کی ہے اور جن کرداروں پر یہ داستان چلتی ہے وہ انسان نہیں بلکہ پرندے ہیں جیسے طوطا، طاؤس وغیرہ یہی اس کتاب کے بنیادی کردار ہیں۔ کسی کاتب نے اصل کتاب قلمی سے یہ نقل کی ہے، اس کا خط کہیں کہیں شکستہ ہے، کہیں کہیں نستعلیق۔

(۳۸) نام کتاب : غرائب الغت

مصنف : عبدالطیف

زبان : فارسی

فن : لغت ہندی، فارسی

قلمی یا مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۳۰۸

سائز : ساڑھے اٹھائیس x سترہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۵۱

صفحہ اول : سرنامہ راسایہ بال ہماست و ظل توجہانش و بیاچہ کتاب را.....

جائزہ : آغاز لغت میں صفحات کی کم شدگی درج نہیں ہے، کسی علی حسن خاں کی مہر ثبت ہے جس پر ۱۲۶۳ ہجری کی تاریخ درج ہے۔ آخر کے صفحات بھی غائب ہیں۔

خط نستعلیق میں ہندی کے الفاظ لکھ کر اس کے فارسی معنی سمجھائے گئے ہیں۔ گویا فارسی داں اصحاب کو لوکل، یعنی مقامی بولی میں استعمال ہونے والے الفاظ کی فارسی میں تشریح کی گئی ہے۔



(۳۹) نام کتاب : غزلیات شوکت

مصنف : شوکت بخاری

زبان : فارسی

فن : شاعری (غزلیات فارسی)

قلمی یا مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۲۰۰

سائز : بائیس x بارہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۷۷

صفحہ اول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر

تمم را بسکہ ضعف تیرہ تختی ناتواں دارد.....

جائزہ : یہ دیوان شوکت بخاری ہے۔ نہایت دیدہ زیب خط ہے ۲۰۰ صفحات پر مشتمل غزلیات فارسی کا یہ مجموعہ نایاب ہے مگر اس پر کسی بھی ریاست یا صوبے کے نواب کی مہر نہیں ہے مگر کلام کے اسلوب سے پتہ چلتا ہے کہ یہ نسخہ قدیم ہے ایک سیاہ مہر زین الدین احمد خاں کی ضرور ثبت ہے۔



(۴۰) نام کتاب : فرہنگ مرکبات و کنایات مع لغات

مصنف : حقداد خاں جلوانی

زبان : فارسی

فن : لغت فارسی (اساتذہ فارسی کے اشعار کو مثال میں رکھ کر کنایات و استعارات اور مرکبات کے معنی سمجھائے گئے ہیں)

قلمی یا مطبوعہ : قلمی

قلمی مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۲۴۶

سائز : چودہ x ساڑھے تیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۶۲

صفحہ اول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر

خاتمہ مشتمل بر پنج دور، در اول مشتمل بر کنایات واصطلاحات واستعارات.....

جائزہ : یہ فرہنگ حقداد خاں جلوانی نے تصنیف کی ہے، اس کا نام غلط اندراج ہے۔ کتب خانہ کنواین اودھ کے اندراج نمبر ۷۲ میں اس کا نام فرہنگ مرکبات و کنایات درج ہے، جس کی تصدیق مصنف کی مندرجہ ذیل عبارت سے ہو رہی ہے جو اس نے

کتاب کے آخر میں تحریر کی ہے۔

تمت تمام شد فرہنگ مرکبات و کنایات مع لغات بجمت بر خوردار فرحت آثار، کریم داد خاں..... یعنی کریم داد کی جہد و کوشش سے یہ کتاب تیار ہوئی راقم الکتاب، احقر العباد، حقداد خاں جلوانی کا مطلب ہے کہ حقداد خاں اس کتاب کے مصنف ہیں، یہ ۶ ربیع الاول ۱۱۵۹ ہجری اور محمد شاہ بادشاہ کے ۲۹ ویں جلوس کے موقع پر نذر کی گئی اسی کتاب کے باقی ۲ صفحات پر کسی دوسرے کاتب کا خط نستعلیق میں لکھا ہوا شہزادوں کا سن ولادت مع تاریخی مادوں کے تحریر ہے۔ مثلاً پہلا، یا جی یا قیوم کا عنوان قائم کر کے اس طرح تحریر ہے۔ ”تاریخی تولد مبارک بر خوردار احمد خاں سلمہ اللہ تعالیٰ۔“

مادہ : بہبودی بخت نیک احمد : ۱۱۶۹ ہجری : تاریخ پیدائش تفصیل : تاریخ ہشتم ذی القعدہ بروز چہار شنبہ ۱۱۶۹ ہجری یکپاس و دو کھرے روز بروز آمدہ بفرخی و مبارک کے متولد شد در حساب ہندواں روز دسبرہ بود سنہ احمد شاہ بادشاہ غازی۔

کتاب پر مہر داخلہ ہشتم ۶ ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری کی ہے، جس میں سیاہی کے قلم سے اندراج ہے، سرخ مہر میں سلیمان جاہ ۱۲۴۴ ہجری کی اور دوسری دو مہر میں امجد علی شاہ کی، تاریخ پڑھی نہیں جا رہی۔



(۴۱) نام کتاب : فرہنگ بہادر دانش

مصنف : عنایت اللہ مرزا

زبان : فارسی

فن : لغت نویسی

قلمی مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۶۶

سائز : پندرہ x ساڑھے پچیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۵۶

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم

بعد حمد و ثنائے مقدر مطلق و نعت سید المرسلین و مناقب وصی برحق.....

جائزہ : ۲۵ ربیع الثانی ۱۲۵۵ ہجری کو فرہنگ بہادر دانش تمام ہوئی، اس میں مصنف نے ایک ترجمہ لغات کتاب بہادر دانش تحریر کیا ہے مگر اس سے فرہنگ کا مطلب واضح نہیں ہوا۔ دراصل یہ بہادر دانش میں مستعمل ہونے والے الفاظ و اصطلاحات کی تفسیری لغت ہے۔ اسی نسخہ میں ایک مثنوی آتش نامہ سوز گداز کے نام سے ہے جو حافظ عبدالرحیم کی تحریر ہے، اس کی جلد بندی بھی ہو گئی ہے جو ۱۵ صفحات پر مشتمل ہے، کتاب دیکھ زدہ ہے۔



(۴۲) نام کتاب : کیمیائے سعادت
مصنف : محمد الغزالی
زبان : فارسی نثر
فن : (نذہبی) دین اسلام اور اس کے اعتقادات کے بارے میں
تحریر : نستعلیق (خفی قلم)
مطبوعہ قلمی : قلمی، صفحہ ۱، ۲، طلائئ کلام سے مرصع، حاشیہ طلائئ ہر صفحہ جدول طلائئ۔
صفحات : ۱۵۶
سائز : ساڑھے چودہ x بائیس سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۳۵

ابتدائی عبارت : بسم الله الرحمن الرحيم وبه نستعين وشكر وسپاس فراوان.....

تبصرہ : یہ کتاب مشہور مصنف و فلسفی اسلام شیخ الاسلام محمد الغزالی کی کیمیائے سعادت ہے، جس میں نمبر (۱) اعتقاد اہل سنت (۲) طلب علم (۳) طہارت (۴) نماز (۵) زکوٰۃ (۶) روزہ (۷) حج (۸) تلاوت قرآن پاک (۹) اذکار و دعوات، یہ مباحث تو رکن اول کے ہیں، رکن دوم میں اوراد کی ترتیب کچھ اس طرح ہے، (۱) آداب طعام خوردن (۲) آداب نکاح (۳) آداب کسب و تجارت (۴) آداب حلال (۵) آداب صحبت (۶) آداب عزلت (۷) آداب سفر (۸) آداب سماع (۹) امر معروف و نہی منکر (۱۰) رعیت و ولایت۔ رکن سوم سے، رکن چہارم تک مختلف عنوانات سے بحث کی گئی ہے۔ مندرجہ ذیل مہرین مثبت ہیں ایک مہر داخل کتب خانہ سرکاری نواب امجد علی شاہ سرخ رنگ کی مہر سمجھ میں نہیں آرہی، دوسری ۱۲۵۱ ہجری کی محمد بیگ کے ذریعہ کتب خانہ میں داخلہ کی، تیسری محمد شاہ بادشاہ غازی ۱۲۱۳ ہجری کی ہے۔
یہ نسخہ خفی قلم سے خط نستعلیق میں نہایت عمدہ تحریر کیا گیا ہے، کاتب کا نام دریافت نہیں۔



(۴۳) نام کتاب : تاریخ مغل
مصنف : محمد یوسف نکہت
زبان : فارسی
فن : تاریخ نویسی
قلمی / مطبوعہ : قلمی، بے حد خوبصورت خط نستعلیق خفی
صفحات : ۲۴۲
سائز : تیس x اکیس سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۳۲

صفحہ اول : عزت خاں و عنایت خلعت خاصہ.....

جائزہ : ۱۲۲۳ ہجری، محمد شاہ کے عہد میں محمد یوسف نکہت نے اس تاریخ کو پیش کر کے بادشاہ وقت سے انعام و اکرام حاصل کیا۔ شاہ جہاں کے عہد شاد کام سے لیکر محمد شاہ مغل تک اس میں وقائع نگاری اور تاریخ نویسی سے کام لیا گیا ہے۔ تحریر خط نستعلیق میں ہے، مگر کتاب کے اول اور اقل کتنے غائب ہیں اس کا پتہ نہیں چلتا، کسی رام دیال پنڈت کا بھی ۱۲۵۰ ہجری میں ایک نوٹ درج ہے جس میں اس کا اظہار کیا گیا ہے کہ کتاب کا نام معلوم نہیں ہو سکا۔



- (۴۴) نام کتاب : کلمات جہانگیری، رقعات عالمگیر، سخنان ارسطاطالس
 مصنف : نورالدین محمد جہانگیر اکبری تیموری، عالمگیر بادشاہ، حکیم ارسطاطالس
 زبان : فارسی
 فن : خطوط نویسی
 قلمی / مطبوعہ : قلمی
 صفحات : ۸۴
 سائز : چوبیس x تیرہ سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۸۷
 صفحہ اول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر

مخفی نمائند کہ اس بندہ ضعیف بارگاہ پروردگار ذرہ بمقدار درگاہ ملک الملوک روزگار.....
 جائزہ : یہ مکتوبات و رقعات و نصائح کی کتاب ہے جس کے نام مندرجہ بالا تحریر کئے گئے ہیں۔ بادشاہ کے کلمات کو بہت ہی خوشخط نستعلیق میں تحریر کیا گیا ہے۔ اس نسخہ پر نوائین اودھ کی مہریں ثبت ہیں۔ قدیم نسخہ ہے جگہ جگہ سے خستہ اور دیمک زدہ ہے۔



- (۴۵) نام کتاب : لغات طب
 مصنف : منشی محمد علی
 زبان : فارسی
 فن : طب
 قلمی / مطبوعہ : قلمی
 صفحات : ۹۳۸
 سائز : چھبیس x سولہ سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۷۲
 صفحہ اول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على خير خلقه محمد وآله واصحابه اجمعين.....
 جائزہ : کتاب کے صفحہ آخر پر منشی محمد علی مصنف نے اپنے قلم سے کتاب کے خاتمہ بالخیر کی تاریخ ۷/ ۱۲۳۷ھ ہجری رقم کی ہے اور سبب تصنیف صفحہ اول پر غازی الدین حیدر بادشاہ کی پذیرائی تحریر کیا ہے یہ کتاب طب یونانی کے امراض و اصطلاحات پر مبنی ہے اور ان امراض کے لئے نسخہ جات بھی اس میں تحریر کئے گئے ہیں۔ قدیم حکمت یونانی کی کتاب ہے۔ اور بہت سی حکمت کی کتابوں کا نچوڑ ہے۔



- (۴۶) نام کتاب : لغت فارسی
 مصنف : سعد اللہ
 زبان : فارسی
 فن : لغت محاورات فارسی
 قلمی / مطبوعہ : قلمی

خط تحریر : نستعلیق
 صفحات : ۲۷۸
 سائز : بائیس x ساڑھے چودہ سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۶۰

صفحہ اول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر

امابعد چون التفات موسسان معاصر از وافر و قاصد از ملوک صاحب سلوک.....

تبصرہ : لغت فارسی در اصل ضرب الامثال، فارسی، عربی، مادراء لٹری ترکی، وغیرہ الفاظ پر مختصر مختصر ہے۔

خط تحریر بہت ہی زیبا ہے نمبر (۱) مہر کتب خانہ شاہ زامن ۱۲۳۷ ہجری، نمبر (۲) مہر کتب خانہ سلیمان جاہ ۱۲۴۴ ہجری۔ و تیسری مہر نواب امجد علی شاہ کی ۱۲۶۲ ہجری کی ہے جو تھی نواب واجد علی شاہ ۱۲۶۳ ہجری کی ہے، پانچویں تحریر بہ اہتمام فدوی منشی محمد علی عقی عنہ بتاریخ یازدہم ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری تحریر ہے، چھٹی مہر سیاہ گورنمنٹ کالج لائبریری بنارس کی ہے اس میں تاریخ نہیں ہے اور انگریزی کی مہر گول دائرے میں ہے۔



(۴۷) نام کتاب : منتخب التاریخ
 مصنف : ملا عبد القادر بدایونی
 زبان : فارسی
 فن : تاریخ
 قلمی / مطبوعہ : قلمی خط نستعلیق عمدہ
 صفحات : ۸۳۹
 سائز : ستائیس x پندرہ سینٹی میٹر
 ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۳۰

بسم الله الرحمن الرحيم

صفحہ اول : ای یافتہ نامہ از نام تورواں.....

جائزہ : یہ تاریخ جس کا نام ملا عبد القادر بدایونی کی وجہ سے فن تاریخ میں بہت مشہور ہے ۱۰۰۴ ہجری میں تالیف کی گئی، ملا عبد القادر بدایونی اکبر اعظم کے زمانے میں تاریخ نویسی پر مامور تھے، اس کا قلم نستعلیق ہے نہایت عمدہ ہے۔
 علی حسن خاں کے کتب خانہ کی مہر میں سنہ درج نہیں جس سے پتہ چل سکے کہ یہ کون شخصیت ہے، ۱۲۰۰ میں جلوس کے موقع پر یہ منتخب التاریخ اکبر کے دربار میں پیش کی گئی تھی، ملا عبد القادر اکبر اعظم کے نورتوں میں سے ایک تھے۔



(۴۸) نام کتاب : منتخب التواریخ (جلد دوم)
 مصنف : ملا عبد القادر بدایونی
 زبان : فارسی
 فن : تاریخ
 قلمی / مطبوعہ : قلمی
 صفحات : ۱۱۳۶
 سائز : تیس x پندرہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر: ۳۸۳۶۹

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم
آغاز و فتر دوم.....

جائزہ : ۳۱ رجب الاول ۱۲۶۲ ہجری کو داخل کتب خانہ خاص ہوئی۔ نوائین اودھ کی تین مہریں اس پر ثبت ہیں، کتب خانہ سلیمان جاہ ۱۲۴۴ ہجری، کتب خانہ نواب امجد علی شاہ، تاریخ پڑھی نہیں جاسکتی، کتب خانہ واجد علی شاہ تاریخ پڑھی نہیں جاسکتی یہ مشہور مصنف اور اکبر کے نورتن ملا عبدالقادر بدایونی کی تصنیف ہے۔ جس کا فن تاریخ میں اہم مقام ہے، یہ اکبر کے حملوں اور اس کے نتیجے میں جو فتوحات اس کو جہاں جہاں حاصل ہوئیں اس کی تفصیل اس میں موجود ہے، وقائع نگاری اور سوانح کا عجیب و غریب مرقع ہے جس کا جواب نہیں۔



(۴۹) نام کتاب : منتخب اللغات شاہجہانی

مصنف : عبدالرشید

زبان : فارسی

فن : لغت فارسی

خط تحریر : نستعلیق

قلمی / مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۸۹۲

سائز : ساڑھے بارہ x ساڑھے بائیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر: ۳۸۳۷۰

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم

نشتن کا پائے راسخت رسیدن.....

تبصرہ : عربی کے اور فارسی کے پچاس ہزار سے زیادہ الفاظ اور کافی سے زیادہ ضرب الامثال کو شاہجہاں کے زمانے میں اس کے شعبہ تصنیف و تالیف نے یہ لغت ترتیب دی ہے اور اسے شاہجہاں کے نام سے معنون کیا ہے۔

اس پر نواب امجد علی شاہ کی، اور سلیمان جاہ کے کتب خانہ کی اور ایک مہر کجھ میں نہیں آرہی، تین مہریں ثبت ہیں۔ ایک پر ۱۲۵۳ ہجری اور ایک پر ۱۲۴۴ ہجری ثبت ہے۔



(۵۰) نام کتاب : مثنوی شور عشق

مصنف : نام معلوم

زبان : فارسی

فن : مثنوی (فارسی شاعری)

قلمی / مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۱۸

سائز : آٹھ x ساڑھے گیارہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر: ۷۸۴۰۸

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم

صفت بزم عروسی، کوکب اش چورواں کہ دید شد سر منزل ماہ پدید
جائزہ : یہ مثنوی مکمل نہیں ہے، معلوم ہوتا ہے کہ مثنوی طویل ہوگی کیونکہ نہ اس میں مہر نوائین ہے نہ سنہ داخلہ نہ مصنف کا
نام، بس یہ ایک جز ہے۔



(۵۱) نام کتاب : مثنوی مولانا نئے روم (حصہ اول، دوم، سوم)

مصنف : مولانا جلال الدین رومی

زبان : فارسی

فن : تصوف کی شاعری از قسم مثنوی

قلمی / مطبوعہ : قلمی خط نستعلیق خفی

صفحات : ۴۱۲

سائز : ساڑھے چونتیس x ساڑھے اٹھارہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۸۶

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم

هذا كتاب المثنوی المعنوی للمولوی وهو اصول أصول الدین.....

جائزہ : یہ کتاب جس کا نام مثنوی مولانا نئے روم، بہت مشہور ہے یہ سلطان محمد شاہ کے عہد میں محمد نور کاتب نے تحریر کی ہے، خط بہت ہی عمدہ ہے، قلم بے حد خوبصورت ہے، اس زمانے کا یہ رواج تھا کہ فارسی کی مشہور کتابیں، قلمی ہوتی تھیں یہ کتاب مولانا جلال الدین رومی نے شاعری میں بہ طرز مثنوی تحریر فرمائی۔ یہ دنیا کی مشہور مثنوی ہے جس کا ترجمہ تقریباً ہر زبان میں ہو چکا ہے، یہ محمد شاہ سے بہت پہلے لکھی گئی تھی، یہ نقل اس کے زمانے میں ہوئی یعنی یہ محمد شاہی دور کا قلمی نسخہ ہے، بہت اہتر حالت میں ہے۔



(۵۲) نام کتاب : مجمع الفرس سروری

مصنف : محمد قاسم بن حاجی محمد کاشانی، متخلص بہ سروری

زبان : فارسی

فن : لغت فارسی اصطلاحات

قلمی / مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۵۱۰

سائز : چوبیس x چودہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۶۴

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم

ابتدائے کلام ہر دانش مند سخن درو انتہائے سخن ہر خرد مند.....

تبرہ : اس کتاب کا نام مجمع الفرس سروری ہے نہ کہ فرہنگ سروری، اس میں فارسی مصطلحات سے بحث کی گئی ہے اور اس زمانے کی تمام لغات سے الفاظ و معنی کی بھی بحث نہایت عمق اور فکر سے کی گئی ہے۔ یہ کتاب سلطان ابن سلطان ابوالمظفر شاہ عباس بہادر خاں خلد اللہ ملکہ کی خدمت میں مصنف کی طرف سے پیش کی گئی تھی۔ یہ بہت مشہور لغت ہے، اس کا ذکر سراج الدین علی آرزو نے اپنی لغت سراج اللغات میں کیا ہے اس لغت کو کاتب محمد شریف نے جو شہر پٹنہ کا ساکن ہے ۹ شوال ۱۰۴۳ ہجری میں نقل کیا ہے۔ یہ اسی کا نقل کیا ہوا نسخہ ہے، اس نسخہ پر نواب امجد علی شاہ کی بڑی مہر ثبت ہے جس پہ تحریر ہے خاتم

امجد علی شاہ، ابتدا میں بھی اور آخر میں بھی۔



(۵۳) نام کتاب :	میزان الحکمت
مصنف :	ابو عثمان دمشقی
زبان :	فارسی
فن :	طب
قلمی / مطبوعہ :	قلمی بے حد خوبصورت خط شکستہ خفی
صفحات :	۱۳۲
سائز :	ساڑھے انچس x گیارہ سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر :	۳۸۴۱۲
صفحہ اول :	بسم الله الرحمن الرحيم بعض از بادشاہان ستر اطرا.....

جائزہ : شروع کے صفحات غائب، آخر کے صفحات غائب، طب سے متعلق متفرق حکماء کا ذکر ہے، حکمائے قدیم نے جو نظریات و خیالات آدمی اور اس سے متعلق امراض کی جو کیفیات بزرگ حکماء نے جن جن کتابوں میں ذکر کی ہیں ان کے حوالے اور اصطلاحات اور اعتقادات سے بحث کی ہے۔ کتاب کے آخری صفحات کافی کم معلوم ہوتے ہیں اور شروع کے بھی، کیونکہ یہ قدیمی نسخہ اپنے خط کی وجہ سے، روشنائی کی وجہ سے اور کاغذ کی وجہ سے کافی قدیم معلوم ہوا، اس کے صفحات غائب ہونے کی وجہ سے اس کی عمر کا اندازہ نہیں لگایا جاسکا۔



(۵۴) نام کتاب :	تل و دمن (منظوم)
مصنف :	فیضی
زبان :	فارسی
فن :	شاعری بہ طرز مثنوی
قلمی / مطبوعہ :	قلمی بہ خط نستعلیق معمولی
صفحات :	۲۶۴
سائز :	سولہ x ساڑھے ستائیس سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر :	۳۸۳۵۷
صفحہ اول :	بسم الله الرحمن الرحيم اے درنگ پوئے توڑ آغاز عقائے نظر بلند پرواز.....

جائزہ : ۷ مئی ۱۸۴۳ عیسوی ۱۵ ربیع الثانی ۱۲۵۹ ہجری کو لالہ بنارس داس صاحب خلیف چودہری صاحب، چھاؤنی نصیر آباد اجیر کی خدمت میں فوجدار خاں ساکن بلدہ دارالخیر، اجیر شریف نے کتابت کر کے قصہ تل و دمن، اصل نسخہ سے نقل کر کے جس کے مصنف دربار اکبری کے مشہور شاعر فیضی ہیں، لالہ جی کی خدمت میں پیش کیا، یہ مثنوی کی طرز پر فیضی کی شاعری ہے جو دنیا بھر میں مشہور ہے اور اکبر کے زمانے میں سلکرت سے فارسی میں منتقل بہ شاعری بطرز مثنوی کی گئی، یہ مثنوی فیضی نے شہنشاہ اکبر کے حضور میں نذر کی تھی جس کا ذکر اس مثنوی میں موجود ہے۔ لہذا کسی قسم کے شبہ کی گنجائش نہیں کہ یہ فیضی کی مثنوی نہیں ہے۔ اس زمانے کے دستور کے مطابق ایک قلمی نسخہ سے دوسرا قلمی نسخہ نقل کرنے کا رواج تھا۔

(۵۵) نام کتاب : واقعات بابری

مصنف : مرزا عبدالرحیم خان خاناں بن بیرم خاں

زبان : فارسی

فن : واقعہ نگاری از قسم تاریخ

قلمی / مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۵۱۲

سائز : ساڑھے چھبیس x پندرہ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۶۶

صفحہ کول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحيم وتمم بالخیر

در ماہ رمضان سنہ ہفتد و نود و نہ در ولایت فرغانہ در دوازده شد لگی بادشاہ شدم.....

جائزہ : نوابین اودھ، نواب امجد علی سلطان و نواب واجدی علی سلطان کتب خانہ سلیمان جاہ کی مہر میں ثبت ہیں، مرزا عبدالرحیم خان خاناں کی مشہور تصنیف ہے جو عہد بابری سے عہد جہانگیری تک کے واقعات پر مبنی ہے، قلم اور اس کے پاکیزہ خط سے اس کے بیش قیمتی نسخہ ہونے میں کوئی شک نہیں، کاتب تحریر کا نام معلوم نہیں ۶ ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری کی تاریخ نمبر موجودات کی حیثیت سے پڑی ہوئی ہے، ۱۲۶۳ ہجری نواب واجد علی شاہ کی بھی مہر پڑی جاسکتی ہے۔



(۵۶) نام کتاب : ہمایوں نامہ (منظوم)

مصنف : شاہ پیر محمد

زبان : فارسی

فن : شاعری از قسم مثنوی، تاریخی مثنوی

قلمی / مطبوعہ : قلمی

صفحات : ۵۰۸

سائز : ۲۳ x ۱۵ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۴۸

صفحہ کول : بسم الله الرحمن الرحيم

ورد کردہ از قدرت کبریا.....

جائزہ : شیخ پیر محمد صاحب خیر آبادی نے ہمایوں نامہ منظوم ۲ ربیع الثانی ۱۲۱۱ ہجری کو بمقام فتح پور بہ زمانہ شاہ عالم تصنیف کیا، یہ شاعری کی مشہور صنف ہشتوی کی طرز پر تحریر کیا گیا ہے، اس میں ہمایوں بادشاہ کے واقعات تسخیر ملک و توصیف ذاتی بیان کی گئی ہے، تحریر معمولی ہے، قلم معمولی ہے، مگر ابیات سے قادر الکلامی کا احساس ہوتا ہے۔ کتاب کی مرمت اخباری کاغذ اور وہ بھی چھپا ہوا سے کی گئی ہے جو مناسب معلوم نہیں ہوتی۔ جگہ جگہ اشعار غائب ہیں، مصرعہ ٹوٹے ہوئے ہیں، کسی نے مصرعہ لگائے ہیں مگر مکمل نہیں۔



اردو

(۱)	نام کتاب :	اندر سبھا
	مصنف :	امانت لکھنوی
	زبان :	اردو
	فن :	شاعری، منظوم ڈرامہ
	قلمی / مطبوعہ :	قلمی
	خط تحریر :	نستعلیق
	صفحات :	۶۳
	سائز :	ساڑھے بیس x سولہ سینٹی میٹر
	ایکسیشن نمبر :	۳۸۰۰۳

تبصرہ : امانت لکھنوی عہد و اجد علی شاہ کے شاعر ہیں۔ انھوں نے محفل ساز نواب واجد علی شاہ کے لئے یہ منظوم ڈرامہ بہ زبان اردو تحریر کیا تھا، جو اس وقت کے مشہور منظوم ڈراموں میں سے ایک ہے، جو نواب واجد علی شاہ کے محفل خانہ میں کھیلا جاتا تھا، اس کا آغاز اس طرح ہوتا ہے۔

عنوان: آمد راجہ اندر کی، بیچ سبھا کے

سبھا میں دوستو اندر کی آمد آمد ہے

پری جمالوں کے افسر کی آمد آمد ہے

اس منظوم ڈرامے کے کرداروں میں راجہ اندر کے علاوہ پریاں بھی ہیں جن کے مختلف نام ہیں جیسے پنکھراج پری، نیلم پری، لال پری وغیرہ اس کے علاوہ شہزادہ گلغام کا بھی ایک کردار ہے۔ اس رومانی منظوم ڈرامے میں غزلیں، ہولی، ٹھمری، چھند، چوبو ابہ، بسنت، اتترہ، سادون، غرض کہ شرنکار رس میں ڈوبا ہوا مختلف بحروں میں منظوم کلام ہے، اور برج کی ہولی، برج بھاشا میں عجیب مزہ دے رہی ہے۔

اس منظوم ڈرامے کی، جس کا نام اندر سبھا اور مصنف امانت لکھنوی ہیں، تاریخ تصنیف مندرجہ ذیل شعر سے ۱۲۷۰ ہجری نکلتی ہے

زروئے وجد، بول اٹھے پری زاد

خلائق میں ہے دھوم اندر سبھا کی

اس تاریخی مادے کا پہلا شعر اس طرح شروع ہوتا ہے

ہوئی اندر سبھا جس دم مرتب

جہاں نے سُن کے توصیف و ثنا کی



(۲) نام کتاب : ”بیاض“ اردو، فارسی غزلیات

مصنف : احمد حسن خاں

زبان : اردو، فارسی ملی جلی

فن : شاعری، (اردو، فارسی)

غیر مطبوعہ / مطبوعہ : قلمی

تحریر :	نتعلیق جلی
صفحات :	۳۲۸
سائز :	ساڑھے سولہ x نو سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر :	۴۸۳۳۷
صفحہ اول :	رہتے ہیں شاد ہم تو نہایت عدم کے بیچ اس زندگی نے لا کے پھنسیا ہے غم کے بیچ
جائزہ :	یہ بیاض اردو فارسی غزلیات پر مبنی ہے، نہایت ہی اچھا انتخاب ہے، اور خط نستعلیق بھی عمدہ ہے، کاغذ ولایتی ہے، طلائی حاشیہ ہے، اس بیاض پر یہ عبارت تحریر ہے: ہذا جلد بیاض عنایت برادر، صاحب والا قدر، احمد حسن خاں صاحب بہادر بہ ارتضا حسین عفی اللہ عنہ بتاریخ بست ہفتم (۲۷) ذیقعدہ بروز جمعہ ۱۲۵۹ ہجری لاریں بیاض شعر ہائے فارسی و ہندی مندرج ہستند۔



(۳) نام کتاب :	حملہ حیدری
مصنف :	مرزا محمد رفیع باڈل
زبان :	اردو
فن :	تاریخ اسلام
مطبوعہ / غیر مطبوعہ :	قلمی
تحریر :	نتعلیق
صفحات :	۷۸۶
سائز :	۱۴ x ۲۰ سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر :	۴۸۳۷۳
صفحہ اول :	روزے در خدمت حضرت پیغمبر مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم بودم.....

تبصرہ: تلاش بسیار کے باوجود کتاب کا یا مصنف یا مولف یا کاتب کا نام اس کتاب سے دریافت نہ ہو سکا، کیونکہ فہرست میں حملہ حیدری کے نام سے کتاب مندرج ہے اس لئے میں نے وہی نام لکھ دیا مگر آگے بریکٹ میں (نام معلوم) بھی درج کر دیا، اس کتاب پر پہلے صفحہ کی لوح پر جو مہر ثبت ہے وہ اس طرح ہے:

خوش است مہر کتب خانہ سلیمان جاہ، یہ کتاب مرثیہ چو نقش بسم اللہ ۱۲۴۴ ہجری، دوسری مہر نواب امجد علی شاہ کی ہے، اس کی مہر سمجھ میں نہیں آرہی، کتاب پر سیاہ خط شکستہ سے بتاریخ شانزدہم ربیع الاول ۱۲۶۲ ہجری درج ہے، گویا کتب خانہ سلیمان جاہ سے، کتاب دوسرے کتب خانہ میں منتقل ہوئی، حضرت امیر معاویہؓ اور حضرت علیؓ کا مقابلہ صفین میں ہوا، اس میں حضرت علیؓ کے کارنامے درج ہیں۔



(۴) نام کتاب :	دیوان سودا
مصنف :	مرزا محمد رفیع مختلص بہ سودا
زبان :	اردو
فن :	شاعری
قلمی یا مطبوعہ :	قلمی مسودہ کاتب نام معلوم
صفحات :	۳۹۶
سائز :	ساڑھے تینتیس x بیس سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۰۰۸

صفحہ اول : رب یسر بسم الله الرحمن الرحیم وتمم بالخیر
جائزہ : دیوان مرزار فیح متخلص بہ سودا حسب الحکم بادشاہ جمشید فر، خورشید نظر، ابوالمظفر معز الدین شاہ زمن، غازی الدین
حیدر بادشاہ غازی خلد اللہ ملکہ، و سلطنتہ فی ۱۲۴۱ ہجری ایک ہزار دو صد و چہل و یک ہجری بصر ف پانصد ۵۰۰ روپیہ و بانعام پانصد
روپیہ ۵۰۰، ضرب شاہی داخل خزانہ عامرہ گردید، دیوان سودا کے اشعار صفحہ ۲ سے شروع ہوتے ہیں، پہلا اور دوسرا صفحہ طلائی
ہے، اور عبارات جلی ہیں، کاتب کا نام درج نہیں۔

مطلع : عجب ناداں ہیں وہ جن کو ہے عجب تاج سلطانی
فلک بال ہما کوہل میں سوئے ہے گس رانی



(۵) نام کتاب : سری مت بہا گوئی

مصنف : بھوپت
زبان : اودھی (کہیں کہیں) برج بھاشا زیادہ
فن : شاعری بطرز مثنوی منظوم کلام بابت ہندو مذہب
تحریر : خط نستعلیق رسم الخط فارسی، اردو
مطبوعہ یا قلمی : قلمی مسودہ، سیاہ روشنائی، کاغذ دیز
صفحات : ۴۸۰
سائز : ساڑھے بیس x ساڑھے بیس سینٹی میٹر
ایکسیشن نمبر : ۴۸۳۳۹
صفحہ اول : سری کشنمہ
شرون او زرخن دیوا
چہہ کو دیو نجات بھیوا

اگر یہ کہا جائے کہ منظوم کلام کے ذریعہ سری بہا گوئی کے بارے میں فارسی رسم الخط میں، برج بھاشی اور اودھی کلام کی سن رچنا، ان
لوگوں کے لئے کی گئی ہے جو فارسی اور اردو رسم الخط سے واقف ہیں، ۴۸۰ صفحات پر پھیلے ہوئے اس گرتھ میں آخری ۲ صفحات پر
اردو زبان میں مصنف کو مبارکباد دی گئی ہے، جن شعراء نے مبارکباد دی ہے، ان کے نام ظاہر نہیں ہیں، ہو سکتا ہے یہ کلام خود
بھوپت کا ہو جیسے:

کوئی روتا ہے، کوئی ہنستا ہے، کوئی ناچے ہے، کوئی گاتا ہے

کوئی چھینے چھنی لے بھاگے ہے، کوئی دھوس دہر کالاتا ہے

اس کتاب کا خاتمہ مندرجہ ذیل عبارت کے ساتھ ہوتا ہے اتی سری مت بہا گوئی و سم اسکندی سکھدیو پاچا بھوپت کرت بروز
چہار شنبہ مینی دسی سری ماہ سانوں سمت ۱۹۰۱ مطابق انگریزی بست چہارم (۲۴) ماہ جولائی ۱۸۴۴ عیسوی پیاس خاطر لئے سراجمد
مقام نصیر آباد بہ وقت لواحب وہ ٹھہرہ صورت اختتام یافت۔



(۶) نام کتاب : سری بھاگوت مہاپوران

مصنف : سورداس

زبان : برج بھاشا (رسم الخط فارسی)

فن : ہندو مذہب بصورت بیانہ نظم

تالیف کردہ : بنسی دھر

مسودہ : قلمی

صفحات : ۲۳۴

سائز : ۲۴ x ۱۷ سینٹی میٹر

ایکیشن نمبر : ۴۸۳۲۹

صفحہ اول : ہر کی ہاتھ نہا

دسم اسکندی سری بھاگوت مہاپوران

سورداس کرت راگ سارنگ و بلادل

بباس کھو سکھ یوسون سری بھاگوت بکھان

دوادس اسکند پر م سو بہک پریم بھگت کی کھان

جانزہ : یہ کتاب کوئی سورداس جی نے اصل میں بزبان برج بھاشا تحریر کی ہے، جو نظم کی صورت میں ہے۔

اسی کتاب کو جس کا نام، سری بھاگوت مہاپوران ہے، سری بنسی دھر جی نے اپنی مہر لگا کر یہ زبان برج بھاشا بہ تحریر فارسی نقل کیا ہے اور اس کا خط اس زمانے کے مطابق منتعلیق ہے، کاغذ دیز اور انگلش ہے جہاں دو ہاتھم ہوتا ہے وہاں لال نشان تین نقطوں (..) والا لگاتے چلے جاتے ہیں، عنوانات بھی سرخ روشنائی سے قائم کئے ہیں۔

جیسے صفحہ اول پر سرخ روشنائی سے آغاز کتاب میں تحریر فرمایا شری کنیش نمہ، پہلے دو مصرعوں کے درمیان سرخ نشان (..) تین نقطوں کی پہچان کا قائم کیا ہے۔

اسی صفحہ پر عنوان قائم کیا ہے سرخ روشنائی سے راگ بلادل، آگے تحریر کرتے ہیں کالی سیاہی سے، ہر ہر سرن کر دو پھر سرخ تین نقطے (..) پھر مصرعہ ثانی ہر چہ نار بندر اور دھر دھر پھر سرخ تین نقطے (..) گویا پوری کتاب میں عنوانات یا راگ راگنیوں کے نام جس میں یہ کلام گایا جائے تحریر ہے، اگر اسی درمیان کوئی چوپائی آگئی تو چوپائی چونکہ عنوان ہوگی اس لئے سرخ روشنائی سے تحریر ہے اس طرح بنسی دھر جی نے کافی محنت سے بہ خط فارسی ہندو مذہب کا یہ سرمایہ خط یوناگری سے فارسی رسم الخط میں منتقل کیا ہے۔

خاتمہ کتاب فارسی کی اس عبارت پر کیا ہے جس میں سن عیسوی اور سمبت تحریر ہے:

تمت تمام شد، کار من نظام شد، کتاب سری بھاگوت مہاپوران ولسم ایکادس، دوادس اسکند سری سورداس کرت بخط برج بھاشا، بندہ مچھدان بنسی دھر کہ سنہ شہال جہاونے نصیر آباد بمنے ساون بدی اماوس سمت ۱۹۰۰ مطابق بست ہفتم (۲۷) ماہ جولائی ۱۸۴۳ عیسوی بہاس خاطر خویش نوشتہ۔

اس عبارت کا مفہوم یہ ہے: سری بنسی دھر نے بذات خود اپنے مذہبی لگاؤ کی وجہ سے یہ کتاب بہ خط فارسی تحریر فرمائی، اس پر ان کی تین مہریں ثبت ہیں جس پر ان کا نام بنسی دھر کندہ ہے۔ اور ۱۲۴۶ ہجری سمبت میں آ رہا ہے مگر دیگر دو مہروں میں سنہ صاف نہیں ہے۔

اسی کتاب پر مصنف کا نام لالہ بنسی دھر آخری صفحہ سے ثابت ہوتا ہے جس میں وارخان لالہ بنسی دھر نے یہ کتاب ۲۲ جنوری ۱۸۴۸ عیسوی کو "العبد" کے ساتھ تین مہریں لگا کر پیش کی ہے، یہ عبارت بھی جو آخری صفحہ پر مندرج ہے فارسی زبان میں ہے جس میں شغل خواندن یعنی ان کے لئے پیش یا تحریر کی گئی ہے جو فارسی خط سے واقف ہیں۔

(۷) نام کتاب : کلیات جرأت

مصنف : جرأت

زبان : اردو

فن : شاعری

مطبوعہ ریفر مطبوعہ : قلمی مسودہ

تحریر : بہ خط نستعلیق، کاتب کا نام درج نہیں

صفحات : ۱۱۶۰

سائز : ۲۰x۳۲ سینٹی میٹر

ایکسیشن نمبر : ۴۸۰۰۷

صفحہ اول : بسم الله الرحمن الرحيم

نالہ موزوں سے مصرعہ آہ کا چپاں ہوا

زور یہ پر درد اپنا مطلع دیواں ہوا

جائزہ : لکھنؤ کے جرأت شاعر کی حیثیت سے بہت مشہور ہیں، یہ انھیں کا شاعرانہ کلام کلیات کی شکل میں موجود ہے، اس کا پہلا صفحہ طلائی ہے اور خط تحریر نستعلیق ہے، اس نسخہ کی اہمیت اس وجہ سے بھی بڑھ جاتی ہے کہ اس پر مرزا سعادت علی خاں ناظم جنگ کی مہر ثبت ہے اور اس پر ۱۲۵۹ ہجری کی تاریخ پڑی ہوئی ہے دوسری مہر خادم حسین خاں بہادر کی اور تیسری مہر سلطان محمد سلیمان مرزا کی جس کی ۱۲۵۳ ہجری تاریخ مندرج ہے، جرأت نے ہر صنف سخن میں طبع آزمائی کی ہے۔



فہرستِ مخطوطات

(عربی، فارسی اور اردو)

مدیر

ڈاکٹر محمد شفیق مراد آبادی

امیر الدولہ پبلک لائبریری

قیصر باغ لکھنؤ-۲۲۶۰۰۱ (بھارت)